डालटनगंज
(मेदिनीनगर)
रविवार
20.11.2022
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष 11
विक्रम संवत 2079

ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

रश्मि प्रवाह
अगर हम अपनी ताकत का किसी की भलाई में इस्तेमाल नहीं कर सकते तो वह ताकत हमारे लिये एक दिन कठिनाई का पहाड़ भी ला सकती है।

www.rastriyanaveenmail.com
डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित
वर्ष-29 अंक-36 पृष्ठ-12, मूल्य ₹ 1.50

न्यूज गैलरी

झारखंड विधानसभा स्थापना दिवस समारोह के लिए सीएम आमंत्रित

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से प्रभारी सचिव झारखंड विधानसभा सैयद जावेद हैदर ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री को उन्होंने 22 नवम्बर 2022 को आयोजित झारखंड विधान सभा स्थापना दिवस समारोह एवं 23 नवम्बर 2022 को आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

राज्य के पश्चिमी हिस्सों में शीत लहर ने पारा को गोते लगाने को किया विवश

रांची। राज्य में ठंड का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है। राज्य के पश्चिमी हिस्सों में शीत लहर ने पारा को गोते लगाने को मजबूर कर दिया है। डालटनगंज का न्यूनतम तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा है। वैसे सिमडेगा और आसपास के क्षेत्रों में भी कड़ाके की ठंड पड़ रही है। सिमडेगा में पिछले 24 घंटे के दौरान न्यूनतम तापमान 9.8 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। रामगढ़ और बोकारो में न्यूनतम तापमान 10.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र रांची के अनुसार फिलहाल राज्य का मौसम शुष्क बना रहेगा और अगले पांच दिनों तक न्यूनतम तापमान में किसी बड़े बदलाव की उम्मीद कम है। सुबह के समय कुहासे की स्थिति बनी रह सकती है।

चक्रधरपुर रेल मंडल के दो लोको पायलटों की ट्रेन से कटकर मौत

चाईबासा। चक्रधरपुर रेल मंडल के राजखरसावां रेलवे यार्ड में हावड़ा मेल ट्रेन की चपेट में आने से ऑन ड्यूटी दो लोको पायलटों की दर्दनाक मौत हो गयी। घटना शनिवार रात 12 बजे के बाद घटी। जानकारी के अनुसार, लोको पायलट टीके सहाना तथा सहायक लोको पायलट मो. अख्तर आलम राजखरसावां रेलवे स्टेशन के यार्ड में मालगाड़ी का इंजन बदल रहे थे। इसी दौरान हावड़ा मेल ट्रेन की चपेट में आने से उनकी मौत हो गयी। दोनों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए चक्रधरपुर अनुमंडल अस्पताल शनिवार की सुबह लाया गया। रेल प्रशासन दुर्घटना की जांच कर रहा है।

घुसपैठ की कोशिश नाकाम एक आतंकवादी मारा गया

जम्मू (एजेंसी)। सेना के जवानों ने शनिवार को जम्मू-कश्मीर में राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की कोशिश नाकाम करते हुए एक आतंकवादी को मार गिराया। रक्षा प्रवक्ता ने यहां कहा कि 17-18 नवम्बर की दरमियानी रात करीब 11 बजे नौशेरा सेक्टर में घुसपैठ की कोशिश को नाकाम कर दिया गया जिसमें एक आतंकवादी मारा गया। आतंकवादी उस समय मारा गया जब वह हमारे सुरंग क्षेत्र को पार करने की कोशिश कर रहा था। उन्होंने कहा कि आतंकवादी का शव बरामद कर लिया गया है। उसके कब्जे से युद्ध में इस्तेमाल किये जाने जैसे हथियार आदि भी बरामद किये गये।

तिहाड़ में मसाज कराते दिल्ली के मंत्री का वीडियो वायरल

नयी दिल्ली (एजेंसी)। तिहाड़ जेल में दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येंद्र जैन का समाज कराते वीडियो वायरल हुआ है। इसके बाद राजनीति घमासान मचा हुआ है। भाजपा ने इसे लेकर सरकार सहित दिल्ली के मुख्यमंत्री पर हमला किया है। दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि कोई ने इस वीडियो को जारी नहीं करने के आदेश दिये थे। दिल्ली के उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि जेल में गिरने की वजह से सत्येंद्र जैन को रीढ़ की हड्डी में चोट आयी थी। उनको अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां उनकी सर्जरी हुई थी। डॉक्टर ने उनको नियमित फिजियोथेरपी की सलाह दी थी। कोर्ट ने ईडी को इस वीडियो को जारी नहीं करने के आदेश भी दिये थे।

टुंडी के पूर्व विधायक सह पूर्व मंत्री डॉ. सबा अहमद का निधन

टुंडी। टुंडी के पूर्व विधायक सह बिहार सरकार में कारा मंत्री रहे डॉ. सबा अहमद का दिल्ली में इलाज के दौरान निधन हो गया। दुखद खबर की सूचना देते हुए पूर्व मंत्री सह टुंडी विधायक मथुरा प्रसाद महतो ने शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि इस दुख की घड़ी में उनके परिजनों के साथ हैं। वर्षों तक टुंडी की राजनीति में अच्छी पकड़ बनाये हुए थे। वह गिरिडीह के रहनेवाले थे। उनका हर वर्ग में बेहतर संबंध था।

मुख्यमंत्री ने जताया दुख : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन समेत कई नेताओं ने टुंडी के पूर्व विधायक सह बिहार सरकार में कारा मंत्री रहे डॉ. सबा अहमद के निधन पर दुख जताया है। सीएम ने ट्वीट करते हुए कहा कि टुंडी के पूर्व विधायक और बिहार सरकार में मंत्री रहे आदरणीय डॉ. सबा अहमद साहब के निधन की दुःखद खबर से मन व्यथित है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवार को दुःख की विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे। राजकीय सम्मान के साथ डॉ. सबा अहमद साहब को अंतिम विदाई दी जायेगी।

मुख्यमंत्री के आदेश के बाद अनाधिकृत निर्माण को नियमितीकरण करने के लिए योजना का प्रारूप तैयार

31 दिसम्बर 2019 के पूर्व निर्मित भवन होंगे नियमित

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के निर्देश पर नगर विकास एवं आवास विभाग ने राज्य के शहरी क्षेत्र में किये गये अनाधिकृत आवासीय निर्माण को नियमित करने की दिशा में कार्रवाई शुरू कर दी है। विभाग के द्वारा इसके लिये 'अनाधिकृत आवासीय निर्माण को नियमितीकरण करने के लिए योजना -2022' का प्रारूप तैयार कर लिया है। मुख्यमंत्री ने योजना को दी सहमति दे दी है।

भवनों के लिए नियमितीकरण शुल्क इस प्रकार होगा

आवासीय और गैर आवासीय भवनों के लिए अलग-अलग शुल्क का निर्धारण किया गया है। नगर पंचायत स्थित आवासीय भवन के लिए 50 रुपये प्रति वर्गमीटर एवं गैर-आवासीय के लिए 75 रुपये प्रति वर्गमीटर, म्युनिसिपल काउंसिल (नगर पालिका परिषद) स्थित आवासीय भवन के लिए 75 रुपये प्रति वर्गमीटर एवं गैर-आवासीय भवन के लिए 100 रुपये प्रति वर्गमीटर तथा नगर निगम/विकास प्राधिकरण/आईएडीए/एनएसी/नगर पालिका क्षेत्र स्थित आवासीय भवन के लिए 100 रुपये प्रति वर्गमीटर एवं गैर-आवासीय के लिए 150 रुपये प्रति वर्गमीटर की राशि देय होगी।

भवनों के नियमितीकरण के लिए अनुमान्य निर्धारित सीमा

भवन की ऊंचाई 15 मीटर तक हो सकती है, लेकिन संरचना केवल ग्राउंड + 3 मंजिला (जी+3) का होना चाहिए तथा 500 वर्गमीटर तक प्लॉट क्षेत्र (प्लिंथ क्षेत्र 100 प्रतिशत तक) और 500 वर्गमीटर से अधिक का प्लॉट क्षेत्र, जिसका प्लिंथ क्षेत्र 75 प्रतिशत या 500 वर्गमीटर जो भी कम हो, होना चाहिए।

अब लोगों को लाभ देने की प्रक्रिया शुरू : शहरी क्षेत्र में किये गये अनाधिकृत/विचलित निर्माण को नियमितीकरण शुल्क के माध्यम से नियमितीकरण हेतु झारखंड अधिनियम-2011 अधिसूचित किया गया था, लेकिन बहुतायत संख्या में लोग इस अवसर का लाभ नहीं उठा सके। पुनः राज्य सरकार द्वारा 'अनाधिकृत निर्माण को नियमित करने के लिए योजना-2019' अधिसूचित किया गया लेकिन विभिन्न निकायों/प्राधिकारों तथा विभिन्न संगठनों से प्राप्त जानकारी के अनुसार यह योजना भी विभिन्न कारणों से आम जनता को रियायत पहुंचाने में विशेष कारगर नहीं हो सकी। उपरोक्त बिन्दुओं के आलोक में यह आवश्यकता महसूस की गयी कि एक बार फिर अनाधिकृत निर्माण को संरचनात्मक स्थिरता एवं नियोजन मापदंड के दायरे में रखकर नियमित करने की कार्रवाई की जाये। उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में झारखंड नगरपालिका अधिनियम-2011 की धारा 590 (1) एवं सह पठित धारा-434 के तहत दी गयी शक्ति का उपयोग करते हुए राज्य सरकार अनाधिकृत निर्माण को नियमित करने की योजना प्रतिपादित कर रही है। योजना के तहत 31 दिसम्बर, 2019 के पूर्व से निर्मित आवासीय एवं गैर आवासीय भवनों का नियमितीकरण हो सकेगा। इस योजना को और अधिक प्रभावी और सरल बनाने के लिए लोगों से अगले एक महीने तक सुझाव और फीडबैक भी मांगे जायेंगे।

नक्सल विरोधी अभियान के तहत सुरक्षाबलों को मिली बड़ी सफलता

भारी मात्रा में विस्फोटक बरामद

नवीन मेल संवाददाता

बड़गड़ (गढ़वा)। बूढ़ा पहाड़ पर चल रहे नक्सल विरोधी अभियान के दौरान शनिवार को पुलिस को एक और बड़ी सफलता हाथ लगी है। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नक्सलियों का गढ़ कहे जाने वाले गढ़वा जिला के भंडरिया थाना अंतर्गत बूढ़ा पहाड़ के आसपास के क्षेत्रों में सुरक्षाबलों द्वारा लगातार सघन सर्च अभियान चलाया जा रहा है। जिस दौरान आज पुनः नक्सलियों द्वारा सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने को लेकर छुपा कर रखे गए भारी मात्रा में गोला बारूद, आईडी एवं टीफीन बम सहित अन्य सामग्री बरामद हुई हैं। जानकारी के अनुसार बूढ़ा पहाड़ के बिहड़ जंगलों में कोबरा 203 के टीम एक एवं दो बटालियन एवं सीआरपीएफ की 172 एवं 62 बटालियन सहित झारखंड जगुआर की संयुक्त टीम द्वारा सघन सर्च अभियान के दौरान जोकपानी नामक घनघोर जंगल में छुपा कर रखे गए सामग्रियों की बरामदगी की गई है। बरामद किए गए सामग्रियों में टिफिन बम 120 पीस, विभिन्न मारक क्षमता के आईडी 4 पीस, वायरलेस सेट 1 पीस, एफएम रेडियो 1 पीस, कोडेक्स वायर, स्वीच 1 पीस, पंचायत चुनाव के बहिष्कार से संबंधित माओवादी पोस्टर एवं लाल बैनर आदि के नाम शामिल हैं। सर्च अभियान में कोबरा 203 बटालियन के द्वितीय कमान अधिकारी कैलाश गंगवानी, सीआरपीएफ के सहायक कमांडेंट सुभाष चंद्र शीला, अमरेन्द्र सहित काफी संख्या में सुरक्षा बल के जवान शामिल थे।

काशी तमिल संगमम देगा राष्ट्रीय एकता को ऊर्जा : मोदी

वाराणसी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यहां एक महीने तक चलनेवाले कार्यक्रम 'काशी तमिल संगमम' का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य काशी और तमिलनाडु के विद्वानों, विद्यार्थियों, दार्शनिकों, व्यापारियों, कारीगरों, कलाकारों सहित जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को एक मंच पर लाना तथा अपने श्रेष्ठ परंपराओं को साझा करना और एक-दूसरे के अनुभव से सीखने का अवसर प्रदान करना है। पीएम नरेंद्र मोदी ने रिमोट दबाकर काशी तमिल संगमम का औपचारिक शुभारंभ करने के बाद वहां मौजूद लोगों को संबोधित भी किया। पीएम मोदी ने हर-हर महादेव, वणक्कम काशी और वणक्कम तमिलनाडु बोलकर अपने संबोधन का आगाज किया। पीएम मोदी ने यूपी सरकार, तमिलनाडु सरकार, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, आईआईटी मद्रास और केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को इस भव्य आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं। पीएम मोदी ने कहा कि हमारे देश में संगमों का काफी महत्व रहा है। हम सबने नदियों और धाराओं के संगम से लेकर विचारों-विचारधाराओं, ज्ञान-विज्ञान और समाजों-संस्कृतियों के संगम का जश्न मनाया है। इसलिए काशी तमिल संगमम अपने आप में विशेष है, अद्वितीय है। एक तरफ, पूरे भारत को अपने आप में ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

धनबाद में लगातार दूसरे दिन फटी धरती

नवीन मेल संवाददाता

धनबाद। कोयला क्षेत्रों में लगी आग और अंदर से खोखली होती जमीन के कारण लगभग हर दिन हादसे हो रहे हैं। जिले के बलियापुर प्रखंड स्थित अलकडीहा ओपी क्षेत्र में पहाड़ीगोड़ा सेंट्रल सुरंगा के पास शनिवार सुबह तेज आवाज के साथ धरती फटी। दस फीट के दायरे में जमीन फटने से चौड़ी दरार बन गयी। गनीमत यह रही कि जहां जमीन फटी, वहां कोई मौजूद नहीं था। हादसे वाली जगह के पास स्थित एक मंदिर एक तरफ लगभग तीन फीट धंस गया। धंसान क्षेत्र के पास ही करीब 20-25 परिवार रहते हैं। ये लोग दहशत में हैं। इसके एक दिन पहले शुक्रवार सुबह धनबाद जिले के निरसा में ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल)

के मुगमा क्षेत्र में भू-धंसान की बड़ी घटना हुई थी। यहां लगभग दो सौ मीटर के दायरे में जमीन पांच फीट धंस गयी थी। धनबाद कोयला क्षेत्र में बीते दो वर्षों में भू-धंसान और जमीन फटने की कम से कम 15 घटनाएं हुई हैं। बीते 20 सितम्बर को जिले के कतरास के अकाशकिनारी में अचानक तेज आवास के साथ जमीन धंसने लगी और एक बड़े आकार का गोफ (खाईनुमा गड्ढा) बन गया।

दरअसल, पूरे धनबाद कोयला क्षेत्र में इलाके में जितना वैध कोयले का खनन हुआ है, उससे कहीं अधिक अवैध कोयले का उत्खनन किया गया है और अब भी किया जा रहा है। इस वजह से कई स्थानों पर जमीन अंदर से खोखली हो गयी है। इसी साल मार्च महीने में धनबाद के मोदीडीह कोलियरी अंतर्गत तेतुलमुड़ी बस्ती में कुमार सिंह के आवासीय परिसर में तड़के जोरदार धमाके के साथ जमीन धंस गयी थी। उनके घर की पूरी रसोई गड्ढे में दफन हो गयी। कमरे में रखा फ्रीज, वाशिंग मशीन, गैस, बर्तन सहित कई सामान दरार में समा गये थे। इस भू-धंसान से एक साथ एक दर्जन घरों की दीवारों में दरारें पड़ गयी थीं। सड़क जगह-जगह फट गयी थी। बीते साल दिसम्बर में धनबाद की मोदीडीह कोलियरी क्षेत्र में भू-धंसान की घटना में एक मस्जिद जमींदोज हो गयी थी। इसके पहले यहां एक काली मंदिर और छोटी मस्जिद भी जमींदोज हो चुकी है। ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

वायुसेना के विमानों ने दिखाये हैरंतगेज करतब, दांतों तले उंगली दबाने लगे दर्शक

नागपुर (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना के बेड़े में शामिल विभिन्न प्रकार के विमानों ने शनिवार को एयर शो के दौरान कई हैरतंगेज हवा में दिखाये जिससे मौजूद लोग दांतों तले उंगली दबाने लगे। शो में शामिल सूर्य किरण एयरोबेटिक टीम (एसकेएटी) और सारांग एयरोबेटिक टीम के हेलीकॉप्टरों ने ऐसे मनोहारी चित्र आसमान की ऊचाईयों पर बिखेरे कि हर कोई बस वाह-वाह ही करता नजर आया। सारंग हेलीकॉप्टरों की टीम ने आसमान में आंखों को सम्मोहित करनेवाली दिल की आकृति उकेरी तो मैदान पर मौजूद लोग दिल थाम कर उस नजारे को निहारते रहे। वायुसेना की आकाशगंगा की टीम में शामिल 10 डॉरनियर विमानों ने आठ हजार फुट की ऊचाई पर सांसों को थमा देनेवाला स्काईडाइविंग का प्रदर्शन किया और परेड ग्राउंड पर नियत स्थान पर जमीन की छुआ। एयर वॉरियर ड्रिल टीम (एडब्ल्यूडी टी) में शामिल 18 विमानों ने एक-दूसरे के साथ पूरी क्रमबद्धता दिखाते हुए प्रदर्शन किया जिसके तारीफ करते दर्शक अघाते नजर नहीं आये। इस दौरान वायुसेना के मध्यम आकार के टरबोप्रोप परिवहन विमान एवरो ने भी जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए जमीन से मात्र पांच सौ फुट की ऊंचाई पर उड़कर मैदान पर मौजूद लोगों को दिल थामकर देखने पर मजबूर कर दिया।

आगामी दिनों में आ सकती है मंदी, लोगों को खरीदारी से बचना चाहिए

जरूरी खरीदारी पर भी दो बार सोचना चाहिए : जेफ बेजोस

- आरएनएम

नयी दिल्ली। दुनिया के अति मालदार कंपनियों में से एक ऐमजॉन के मुख्य कार्यकारी जेफ बेजोस, जिन्होंने अपनी 124 बिलियन डॉलर की संपत्ति दान करने की बात कही है, ने अमेरिकी टीवी चैनल सीएनएन से बातचीत में लोगों को चेताया है कि आगामी दिनों में मंदी आ सकती है। सो इसके मद्देनजर उपभोक्ताओं को बड़ी खरीदारी करने से बचना चाहिए और यदि जरूरी खरीदारी करनी हो, तो भी इस पर दो बार विचार करना चाहिए। वैसे तो बेजोस ने यह अपील अमेरिकी परिवारों से की है, लेकिन उनकी यह बात पूरी दुनिया के लोगों को बहुत भा रही है। क्योंकि, महंगाई बेरोजगारी की मार का असर विश्व के मात्र पंद्रह प्रतिशत अति धनी को छोड़कर लगभग सब पर शुरू हो गयी है। जिसके चलते जेफ बेजोस का कथन दुनियाभर में वायरल हो रहा है, क्योंकि वर्तमान हालात में ज्यादातर देशों की विकास दर में कमी आ रही है। जेफ बेजोस ने इस साक्षात्कार में कहा कि लोगों को मेरी सलाह है कि टेबल से कुछ जोखिम कम करें। यदि आप खरीदारी करने जा रहे हैं, तो शायद उस खरीदारी को थोड़ा धीमा कर दें। उस नकदी को रखें और देखें कि क्या होता है। यदि आप एक बड़े स्क्रीन वाला टीवी खरीदने पर विचार कर रहे हैं, तो आप प्रतीक्षा कर सकते हैं और अपने पैसे रोक सकते हैं और देख सकते हैं कि क्या होता है। नये ऑटोमोबाइल, रेफ्रिजरेटर या जो कुछ भी हो, उसके साथ भी यही सच है। थोड़ा जोखिम हटाइये, बचिये। इस बीच अमेजन के सीईओ एंडी जेसी ने खुलासा किया है कि कंपनी 2023 तक कर्मचारियों को निकालना जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि छंटनी की प्रक्रिया इस सप्ताह के शुरुआत में शुरू हुई, जब कंपनी ने घोषणा की कि वे डिवाइसेस और बुक्स व्यवसायों से कर्मचारियों को निकाल रहे हैं। यह गंभीर घोषणा ऐसे समय में आयी है जब रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका की दूसरी सबसे बड़ी निजी क्षेत्र में रोजगार देनेवाली कंपनी 10 हजार कर्मचारियों को नौकरी से निकालेगी। वहीं, दूसरी ओर अमेजन के सीईओ जेफ बेजोस ने कहा है कि वह अपनी 124 बिलियन डॉलर की संपत्ति दान कर देंगे। जब सीएनएन की रिपोर्टर ने पूछा कि क्या वह अपने जीवनकाल में अपनी अधिकांश संपत्ति दान करने का इरादा रखते हैं, तो बेजोस ने कहा कि हां, मेरा यह इरादा है। मालूम हो कि अमेजन डाट इनकारपोरेशन दुनिया की पहली ऐसी पब्लिक कंपनी बन चुकी है, जिसके मार्केट वैल्यू में एक ट्रिलियन डॉलर का नुकसान हो चुका है। अमेजन सीईओ अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए समर्पित करना चाहते हैं।

पलामू में पीएम आवास योजना में घोर अनियमितता

एक ही व्यक्ति को मिला दो प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ

अजय कुमार पांडेय

मेदिनीनगर। पलामू में प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत ग्रामीण हो या शहरी किसी गरीब को एक भी आवास मुहैया नहीं हो पा रहा है। जबकि संभ्रांत और संपन्न लोग अधिकारियों की मिलीभगत से इसका लाभ भरपूर ले रहे हैं। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एक ही आदमी को विश्रामपुर और नावा बाजार दो प्रखंडों में अलग-अलग दो आवास निर्माण कराया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ एक व्यक्ति को एक हीं बार दिए जाने का प्रावधान है। साथ हीं उन्हें आवास उपलब्ध कराया जाना है जिनका खपरैला घर हो। लेकिन प्रखंड कर्मियों की मिलीभगत से सारे नियमों को दरकिनार कर इसका लाभ पहुंचाया

दोनों प्रखंडों में अलग-अलग भवन के साथ खड़ा लाभुक लक्ष्मण बैठा

जा रहा है। जानकारी के अनुसार विश्रामपुर प्रखंड के जमारी गांव निवासी लक्ष्मण बैठा को प्रधानमंत्री आवास उपलब्ध कराया गया है। वहीं नावा बाजार के सोहदाग कला पंचायत के कुंभीकला ठेकही में भी एक आवास निर्माण कराया गया है। श्री बैठा गांव के संपन्न व्यक्ति हैं। इनके नाम बिश्रामपुर प्रखंड जमारी गांव सहित नावा बाजार प्रखंड के सोहदाग खुर्द पंचायत के ठेकही कुंभी कला में भी घर व जमीन है। दोनों प्रखंड के गांव की दूरी महज 1 किलोमीटर की है। इनके नाम दोनों प्रखंड के गांव में 5 एकड़ से अधिक का भूखंड भी है। इतना ही नहीं इनके परिवार के सदस्य भी संपन्न है। घर में ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल, लाखों का व्यवसाय आदि भी है। बावजूद इन सभी चीजों की अनदेखी करते हुए प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ इनहें प्रदान किया गया। प्रधानमंत्री आवास के लिए जरूरतमंद लोग जिला, प्रखंड व पंचायत की दौड़ लगाते लगाते थक जा रहे हैं, लेकिन उन्हें आवास नहीं मिल पा रहा है। वहीं लक्ष्मण बैठा को 2-2 आवास उपलब्ध कराया जाना विभागीय लापरवाही द्योतक है। नावाबाजार प्रखंड के सोहदाग पंचायत में मिले आवास का आईडी जेएच 1817051 जबकि विश्रामपुर प्रखंड के जमारी गांव के प्रधानमंत्री आवास योजना का आईडी 1530632 है।

क्या कहतीं हैं डीडीसी

पलामू के डीडीसी मेघा भारद्वाज ने कहा है कि मामला संज्ञान में आया है इसपर विधिसम्मत कार्रवाई करते हुए राशि की वसूली की जायेगी।

तालाब में कूदा अधेड़ कई घंटे से लापता

मेदिनीनगर। पलामू जिले के पाटन थाना क्षेत्र के मनिका में तालाब में कूदने के बाद से एक अधेड़ व्यक्ति लापता है। उसकी तलाश में स्थानीय गोताखोर के साथ पाटन थाना प्रभारी गुलशन गौरव व किशुनपुर ओपी प्रभारी कुमार नीरज पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर मौजूद रहे। कई घंटे बीत जाने के बाद भी समाचार लिखे जाने तक शव बरामद नहीं हुआ था। जानकारी के अनुसार तालाब में कूदने वाले की पहचान रघु भुइयां (उम्र 50वर्ष) के रूप में हुई है। वह इसी थाना क्षेत्र के मनिका गाँव का रहने वाला है। ग्रामीणों का कहना है कि रघु भुइयां शराब का सेवन करता था। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि नशे की हालत में तालाब में कूदा होगा। वहीं तालाब में एक कुआँ है, जहाँ से निकल पाना आसान नहीं होता है। पानी ज्यादा होने के कारण डूबकर मौत हो जाने की संभावना व्यक्त की जा रही है। हालांकि शव मिलने के बाद ही इसे स्पष्ट किया जा सकता है।

न्यूज गैलरी

प्रतिमा को प्रखंड परिसर में लगाने पर भाजपा ने अभार जताया

हैदरनगर। जिले के हुसैनाबाद शहरी क्षेत्र में लगें पूर्व विधायक हरिहर सिंह की प्रतिमा को पुर्नस्थापन के लिए क्षेत्रीय विधायक ने हुसैनाबाद प्रखण्ड परिसर में शिलान्यास किया। इधर प्रखण्ड परिसर में निर्विरोध रूप से पूर्व प्रतिमा स्थापना की मांग करने वाले भाजपा नेता व अधिवक्ता प्रेमतोष सिंह ने विधायक समेत सभी प्रशासनिक अधिकारियों व प्रबुद्ध लोगों के प्रति आभार जताया हैं । उन्होंने कहा हैं कि हरिहरबाबू एक सम्मानित नेता थे। लेकिन कुछ लोग राजनीति कर इस कार्य को गलत दिशा में बहस का केंद्र बिंदु बना दिये थे। जो सभ्य समाज के दृष्टिकोण से ठीक नही था। मैं पहले से प्रखण्ड परिसर में प्रतिमा को स्थापित करने की मांग की थी। लेकिन सभी लोगो ने मेरे बातों पर गम्भीरता से विचार नहीं किया । आज माननीय विधायक के द्वारा शिलान्यास किया गया, जो सभी के लिए स्वागत योग्य कदम हैं ।

राजद कार्यकर्ताओं की बैठक 23 नवम्बर को

हैदरनगर। राजद कार्यकर्ताओं द्वारा अनुमंडल स्तरीय बैठक का आयोजन किया हैं। इसकी जानकारी यदुवंशी राणा प्रताप ने दी है । उन्होंने बताया कि हुसैनाबाद ,हैदरनगर ,मोहम्मदगंज तीनों प्रखंड के सभी कार्यकर्ताओं को 23 नवम्बर बुधवार को समय 10:00बजे दिन में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक संजय सिंह यादव के आवास परिसर पर बैठक रखी गई है। इस बैठक में सभी लोगों से भाग लेने की अपील की गई है। कहा गया है कि आप सभी लोग सही समय पर पहुँच कर बैठक को सफल बनायें । बैठक में पूर्व विधायक संजय कुमार सिंह यादव सहित अन्य लोग उपस्थित रहेंगे।।

प्रखंड कार्यालय राजनैतिक अखाड़ा में तब्दील

पाटन। भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि पाटन ब्लॉक कार्यालय को सरकार में शामिल महागठबंधन के द्वारा अपनी पार्टी की निजी कार्यालय बना रखा है । जिस तरह से राजनैतिक पार्टी के जिला अध्यक्ष के द्वारा कार्यालय का फीता काट कर उद्घाटन किश्स्करना यह साफ दर्शाता हैं की ब्लॉक मुख्यालय को पार्टी कार्यालय बनाना चाहते हैं । अगर बीस सूत्री अध्यक्ष को कार्यालय निर्गत किया गया है तो उसको विस सूत्री अध्यक्ष या परखंड के वरीय पदाधिकारी के द्वारा उदघाटन कराया जाता लेकीन येहा तो लोकतंत्र की हत्या कर राज्यतंत्र की बढ़ावा दिया जा रहा है ये लोक हित में जन हित में उचित नहीं है भाजपा येसी तुष्टिकरण का घोर निन्दा करती है।

नपं के वार्ड–2 में पार्षद ने किया कंबल का वितरण

हुसैनाबाद। नगर पंचायत के वार्ड 2 की पार्षद सोनी देवी व पार्षद पति संतोष शर्मा ने शनिवार को वार्ड क्षेत्र के गरीबों के बीच कंबल का वितरण किया। मौके पर वार्ड पार्षद सोनी देवी ने बताया कि ठंड के मौसम में गरीब व असहाय को थोड़ी राहत मिले । इस उद्देश्य के तहत कंबल का वितरण किया गया है। उन्होंने कहा कि गरीबों की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। मौके पर दर्जनों वृद्ध व असहाय मौजूद थे। सभी को कंबल दिया गया। वार्ड सदस्य ने बताया कि नगर पंचायत वार्ड के गरीब असहाय के प्रति संवेदनशील है। पूरे वार्ड क्षेत्र में इसका वितरण सुनिश्चित किया जा रहा है। मौके पर लाभुक अजय सिंह,चंद्रावती देवी,सरस्वती देवी, कौशल्या देवी,कलावती देवी,उत्तम देवी, अंकिता विश्वकर्मा,लालो देवी,मुन्ना कुमार, सावित्री देवी,देवंती कुंवर,रामचंद्र विश्वकर्मा, शांति कुंवर,रजिया देवी,बेबी कुमारी सहित दर्जनों वार्ड के लोग उपस्थित थे।

बाइक चोर गिरफ्तार एक बार पहले भी जा चुका है जेल

मेदिनीनगर। शहर थाना क्षेत्र के जेलहाता इलाके से 13 दिन पहले चोरी गई मोटरसाइकिल बरामद कर ली गई है। इस सिलसिले में एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। युवक को दूसरी बार मोटरसाइकिल चोरी के आरोप में जेल भेजा गया है। टीओपी – 1 के प्रभारी रेवा शंकर राणा ने इस संबंध में कार्रवाई की है। रेवा शंकर राणा ने बताया कि गत 6 नवंबर की रात जेलहाता इलाके से मनीष राम की पल्सर मोटरसाइकिल (जेए018340) चोरी हो गई थी। घटना सीसीटीवी में कैद हुई थी। उसके बाद से पुलिस चोर की तलाश में वे जुटे हुए थे। शुक्रवार को साहित्य समाज चौक के समीप सीसीटीवी फुटेज में मोटरसाइकिल चोरी करते दिखने वाला युवक नजर आया। उसके साथ दो और युवक भी थे। तीनों को थाना ले जाकर पूछताछ की गई तो एक युवक हमीदगंज कंदाखाड़ के रहने वाले भीम राव के 22 वर्षीय पुत्र आकाश कुमार ने घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। आकाश ने बताया कि गत 6 नवंबर की देर रात पुलिस स्टेडियम से प्रोग्राम देखकर लौटने के क्रम में जेलहाता इलाके में घर के बाहर लगी मोटरसाइकिल चोरी की थी। इसके लिए उसने अपने दो दोस्तों से झूठ भी बोला था। कहा था कि उसकी बाइक की चाभी खो गई है।

उपायुक्त ने सभी राइस मिलरों के साथ की बैठक

एक सप्ताह के भीतर सीएमआर जमा करने का दिया निर्देश

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। उपायुक्त आंजनेयुलू दोड्डे ने शनिवार को सभी राइस मिलरों के साथ बैठक की। समाहरणालय के सभागार में आयोजित बैठक में उपायुक्त ने खरीफ विपणन मौसम 2021-22 अंतर्गतधान अधिप्राप्ति योजना के तहत राइस मिलरों से भारतीय खाद्य निगम के डिपो में सीएमआर सुपुर्द किए जाने की समीक्षा की । इस दौरान बताया गया कि धान अधिप्राप्ति योजना के तहत पक्सों से धान उठाओ किए जाने एवं सीएमआर जमा किये जाने हेतु कुल 14 राइस मिलरों को टैगिंग किया गया है। पलामू जिला अंतर्गत सभी पैक्सों से राइस मिलर के द्वारा 6 लाख 55 हजार 609 क्विंटल 35 किलोग्राम धान का उठाव किया गया है। जिसके विरुद्ध राइस मिलरों से 1537 लॉट सीएमआर जमा करने का लक्ष्य निर्धारित है। ऑनलाइन इ-उपार्जन पोर्टल के अनुसार अबतक 1295 लॉट सीएमआर राइस मिलरों द्वारा भारतीय

खाद्य निगम के डिपो में जमा कर दिया गया है। 242 लॉट सीएमआर जमा किये जाने हेतु शेष बचा हुआ है। उक्त वित्त वर्ष अंतर्गत शत-प्रतिशत सीएमआर जमा किए जाने के लिए अंतिम तिथि 30 नवंबर 2022 तक ही निर्धारित है। भारतीय खाद्य निगम के पास कुल 32 लॉट सीएमआर स्वीकृत किए जाने हेतु पेंडिंग है। बैठक में भारतीय खाद्य निगम के प्रतिनिधि की उपस्थिति नहीं रहने पर उपायुक्त ने कड़ी नाराजगी जाहिर की। उपायुक्त ने सभी राइस मिलरों को एक सप्ताह के भीतर शेष सीएमआर जमा करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं करने पर संबंधितों के विरुद्ध कार्रवाई की जायेगी।

हैदरनगर, राजहरा व पतरा के पैक्स अध्यक्ष पर एफआईआर

धान अधिप्राप्ति योजना के तहत हैदरनगर,राजहरा,एवं पतरा पैक्स के संचालक द्वारा किसानों से क्रय किये गये धान को शत-प्रतिशत राइस मिल में जमा नहीं किए जाने के कारण उनके विरुद्ध संबंधित थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। इसके अलावे 5 पैक्स के विरुद्ध सर्टिफिकेट केस दर्ज किया गया है। बैठक में उपायुक्त के अलावा जिला आपूर्ति पदाधिकारी शब्बीर अहमद, जिला सहकारिता पदाधिकारी अश्वनी ओझा, समेत सभी राइस मिलर उपस्थित थे।

थाना परिसर में विदाई समारोह का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

उटांरी रोड। पलामू जिले के उंटारी रोड थाना परिसर में शनिवार को विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता एएसआई राजकुमार शर्मा ने किया व संचालन पूर्व जिला पार्षद सह विधायक प्रतिनिधि मनोज कुमार सिंह ने की। मालूम हो की पलामू एसपी के निर्देश पर उंटारी रोड थाना के निवर्तमान थाना प्रभारी शिवकुमार का तबादला कर दिया गया है। जिसके उपलक्ष्य में विदाई समारोह का आयोजन कर फूल माला व अंग वस्त्र देकर लोगो ने सम्मानित किया। मौके पर निर्वतमान थाना प्रभारी शिवकुमार ने बताया कि सरकारी नौकरी में ट्रांसफर पोस्टिंग लगा रहता है। जिससे सभी को गुजरना पड़ता है। वहीं नये थाना प्रभारी अशोक कुमार महतो को उपस्थित लोगो ने फूल माला व पुष्पगुछ देकर स्वागत किया। नये थाना प्रभारी अशोक कुमार महतो ने बताया कि उंटारी रोड थाना क्षेत्र के सभी का सहयोग से विधि व्यवस्था को मजबूत रखने के साथ अपराध मुक्त व नशा मुक्त करने के लिए विशेष रणनीति के तहत काम करने की बात कही। मौके पर थाना के एएसआई राजकुमार शर्मा, मंडल अध्यक्ष सुशील ठाकुर, विस सूत्री अध्यक्ष अशोक सिंह, पूर्व जिला पार्षद मनोज सिंह, लाहरबंजारी पंचायत मुखिया अशोक कुमार सिंह, अश्विनी सिंह, अरविंद मेहता, रामसेवक पासवान, सभी पंचायत के जनप्रतिनिधि सहित थाने के पुलिसकर्मी मौजूद थे।

बगैर मध्याह्न भोजन संचालन के खाता से निकला पैसा

मुखिया समेत ग्रामीणों ने बीईओ से की शिकायत

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। पलामू जिले के हैदरनगर प्रखंड के चौकड़ी पंचायत अंर्तगत उत्क्रमित मिडिल स्कूल सरगाड़ा में सितंबर 2022 में बगैर मध्याह्न भोजन संचालन के पैसा खाता से निकाले जाने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबध में मुखिया शारदा देवी सहित 50 से अधिक ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त शिकायत आवेदन बीईईओ को देकर कारवाई करने की मांग की है। उन्होंने आवेदन में बताया है कि प्रभारी प्रधानाध्यापक श्यामलाल राम ने सितंबर माह में बच्चों के बीच मध्याह्न भोजन कराये बिना उपयोगिता प्रमाण पत्र जमा कर खाता से राशि की निकासी कर ली है। उन्होंने यह भी ध्यान दिलाया कि यही प्रभारी ने मई, जून व जुलाई तीन माह का 19 क्विंटल चावल डीलर से मिलीभगत से खुले बाजार में बेच दिया है। जबकि वर्ष 2017 में भी स्कूल में अध्ययनरत छात्रों के लिये आवंटित पुस्तकों को बाजार में बेचने के आरोप में निलंबित किये जा चुके हैं। बावजूद इनकी आदतों में सुधार नहीं आने से ग्रामीण बच्चे व उनके अभिवावक त्रस्त हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जांच व कार्रवाई नहीं हुई तो मामले को लेकर उपायुक्त से मिलकर शिकायत को रखने का कार्य करेंगे। उधर इस मामले में पूछे जाने पर प्रभारी ने आरोपों को मनगढंत बताया है।

शिक्षक प्रतिनिधि बने जयशंकर प्रसाद

हुसैनाबाद। एके सिंह कॉलेज जपला में शनिवार को शिक्षक प्रतिनिधि का चुनाव विश्वविद्यालय प्रतिनिधि प्रो. सत्येन्द्र कुमार सिंह एवं महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. सूर्यमणि सिंह की उपस्थिति में निर्वाचन पदाधिकारी प्रो. अजय कुमार सिंह ने शांति पूर्वक करायें। इसमें शिक्षक प्रतिनिधि का चुनाव प्रो. जयशंकर प्रसाद सिंह एवं प्रो. शशिभूषण सिंह दो उम्मीदवारों के बीच किया गया। मौके पर एकाउंटेंट ओम प्रकाश सिंह एवं प्रो. अशोक कुमार देव उपस्थित थे। महाविद्यालय के सचिव रौनक सिंह, प्राचार्य प्रो. सूर्यमणि सिंह एवं अन्य पदाधिकारियों ने नवनिर्वाचित शिक्षक प्रतिनिधि जयशंकर प्रसाद सिंह को बधाई दी है।

एसडीओ ने बीएलओ को शो कॉज करने का दिया निर्देश

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। एसडीओ सह निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी कमलेश्वर नारायण ने शनिवार को मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2023 के तहत आयोजित विशेष कैंप के निरीक्षण किया। इस क्रम में रा म वि में बूथ संख्या 35, 36 व 37 का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित बीएलओ से विभिन्न बिंदुओं पर जानकारी ली। जिसमें उन्होंने बूथ संख्या 37 पर शून्य आवेदन को पाते हुए बीएलओ को फटकार लगाई। एइआरओ सह सीओ यशवंत नायक को इसके लिए संबंधित बीएलओ को शो कॉज करने का निर्देश दिया है। एसडीओ ने बताया कि पहली जनवरी 2023 को अहर्ता तिथि मानकर इस कार्य में तेजी लाने का निर्देश दिया गया है। जिसके आलोक में नाम जोड़ने, हटाने, सुधारने के कार्य को पूरा किया जाना है। दावा आपत्ति प्राप्त करने की अंतिम तिथि आठ दिसंबर 2022 तक निर्धारित है। इसके लिए स्पेशल कैंप 19 - 20 नवंबर को सभी मतदान केंद्रों पर लगाया जाना है। इस दिन सभी बीएलओ को संबंधित मतदान केन्द्रों पर उपस्थित रहकर दावा आपत्ति प्राप्त करना है। कई जगहों पर इसके प्रति लापरवाही बरतने की शिकायत पाई गई है। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को आधार से जोड़ने के शत प्रतिशत लक्ष्य को प्राप्त करने का भी निर्देश बीएलओ को पहले से ही दिया गया है। इसके प्रति लापरवाही को गंभीरता से लेते हुए संबंधित बीएलओं के विरुद्ध कार्रवाई की जायेगी।

स्टोन माइंस के खिलाफ प्रमुख का आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

पाटन। प्रमुख शोभा देवी ने पलामू उपायुक्त को आवेदन देकर तथा प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से अवगत कराया कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान देखा कि पाटन प्रखंड के उताकी पंचायत के नावाडीह स्थित आयुष स्टोन माइंस संचालित है । माइंस कस्तूरबा विद्यालय मध्य विद्यालय एवं बस्ती से सटा हुआ है। जिससे बस्ती के लोगों एवं विद्यालय के बच्चे को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । जैसा कि भारी गाड़ी का आवागमन, ध्वनि प्रदूषण, धूल उड़ना, ओवरलोड गाड़ी चलना, सड़क दुर्घटना, एक ही चालान पर दो-तीन ट्रिप्पी माल ढुलाई इत्यादि कर किया जा रहा है। जिसे हम ग्रामीण जनता एवं बच्चों को जान माल का खतरा बना हुआ है,आये दिन दुर्घटना होते रहता है । आयुष स्टोन माइंस जहां पर स्थापित है ,वहां से कस्तूरबा विद्यालय की दूरी 100 मीटर मध्य विद्यालय की दूरी 50 मीटर बस्ती की दूरी 100 मीटर है । उन्होंने कहा कि माइंस में ब्लास्टिंग होने पर घर मे पत्थर का टुकड़ा गिरता है। उन्होंने उपायुक्त से आयुष स्टोन माइंस को तत्काल बंद कराने की मांग की है। ताकि ग्रामीण जनता को प्रदूषण दुर्घटना आदि से निजात मिल सके एवं बच्चों की पढ़ाई लिखाई सुचारू रूप से चल सके। मौके पर समाजसेवी शक्ति गुप्ता,पंचायत समिति सदस्य सहित कई लोग उपस्थित थे ।

पूर्व विधायक की प्रतिमा का शिलान्यास

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। रेलवे ओवर ब्रिज निर्माण को लेकर हुसैनाबाद के पूर्व विधायक स्व. हरिहर सिंह की प्रतिमा के स्थानांतरण के बाद शनिवार को प्रखंड कार्यालय परिसर में प्रतिमा के पुर्नस्थापना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रतिमा का शिलान्यास स्थानीय विधायक कमलेश कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कांग्रेसी नेता रघुराइ यादव ने की। संचालन 20 सूत्री प्रखंड अध्यक्ष योगेंद्र कुमार सिंह उर्फ गुड्डू सिंह ने किया। मौके पर समिति के पदाधिकारियों ने ओवर ब्रिज का नामकरण स्व. हरिहर सिंह के नाम पर कराने व जपला दंगवार पथ का नाम हरिहर सिंह के नाम पर करने की मांग की। विधायक कमलेश कुमार सिंह ने कहा कि स्व. हरिहर सिंह क्षेत्र के महान विभूति थे। उनका व्यक्तित्व आदर्शवादी था। वह समाज के सभी लोगों में प्रिय रहे। यही वजह है कि उनकी प्रतिमा स्थापना के इस कार्यक्रम में सभी दल सभी वर्ग के लोग शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हरिहर बाबू के आर्दशों पर चलकर ही बेहतर समाज की कल्पना की जा सकती है। उन्होंने हरिहर बाबू को नमन किया व उन्हे श्रद्धांजलि दी। मौके पर ओवर ब्रिज निर्माण कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर देवेंद्र प्रसाद, विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह, मनान खान, भाजपा नेता रामप्रवेश सिंह, भुनेश प्रसाद सिंह, बद्री सिंह, अश्विनी सिंह, चंदन सिंह, टुन्ना सिंह, विनय पासवान, सुशील कुमार सिंह, भोला सिंह, रविन्द्र कुमार कांस्यकार, जिशान हसन, मंदीप राम, जाफर इमाम, बुधन राम, धनंजय सिंह, विजय राजवंशी, शेख जुबैर अहमद, राजकुमार ठाकुर के अलावा बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

खेलो झारखंड के तहत प्रखंड स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

नावा बाजार। प्रखंड स्तरीय तीन दिवसीय खेलो झारखंड 2022-23 प्रतियोगिता का आयोजन विश्रामपुर मध्य विद्यालय के प्रांगण में आयोजित की गई है। जो 21 नवंबर से शुरू होकर 23 नवंबर को संपन्न होगी। इसकी जानकारी देते हुए प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी रामानंद सिन्हा ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रखंड क्षेत्र के सभी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शामिल होगी। खेल प्रतियोगिता आयोजन को लेकर पलामू जिला शिक्षा पदाधिकारी को आदेश निर्गत किया गया है। प्रतियोगिता के सफल संचालन को लेकर शिक्षक व अन्य कर्मियों को 3 दिनों के लिए प्रतिनियोजित किया गया है। जो विश्रामपुर मध्य विद्यालय में आयोजित खेल प्रतियोगिता में भाग लेकर उसे सफल बनाने में अपनी सहयोग स्थापित करेंगे। प्रतिनियोजित शिक्षकों में रंजीत सिंह, अंजू कुमारी, लक्ष्मीकांत, अकाश कुमार दास, सुनील कुमार सिंह, प्रमिला कुमारी, रीना कुमारी, अशोक तिवारी, मनु शेषाद्री, प्रेम शीला कुमारी, अनिता कुमारी, विनीता कुमारी, हर्षवर्धन चतुवेर्दी, वीरेंद्र शर्मा, विनोद दीक्षित, विनोद पांडेय, मनोज द्विवेदी, विनय कुमार तिवारी, लाल कृष्ण भारद्वाज, नीरज कुमार मिश्रा, विजय कुमार सिंह, कृष्णकांत शाह, ब्रजेश कुमार चौबे, रोहित कुमार तिवारी सहित प्रखंड के सभी सीआरपी व बीआरपी का नाम शामिल है। इनका प्रतिनियोजन 21 नवंबर से 23 नवंबर तक विश्रामपुर मध्य विद्यालय के प्रांगण में खेल व्यवस्था की देखरेख व निर्णायक मंडली आदि सदस्यों के रूप में किया गया है। सभी प्रति नियोजित शिक्षकों को निर्देशित किया गया है कि वे समय पर पहुंच अपनी जिम्मेवारियों का निर्वहन करेंगे।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, मेदिनीनगर

आवश्यक सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि मेदिनीनगर शहरी जलापूर्ति योजनान्तर्गत बेलवाटिका स्थित क्लारिफ्लोकुलेटर (विशुद्धक) में बालू एवं मड भर जाने के कारण पेयजलापूर्ति हेतु क्लारिफ्लोकुलेटर का सफाई कराया जाना अति–आवश्यक है। इस हेतु सफाई कराने के क्रम में मेदिनीनगर शहरी जलापूर्ति योजना दिनांक **20.11.2022** से दिनांक **27.11.2022** तक पेयजलापूर्ति बाधित रहेंगी।

अतः नगरवासियों से अनुरोध है कि अपने जरूरत के अनुसार आपलोग पानी का संग्रह कर लें।

कार्यपालक अभियंता,
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, मेदिनीनगर।

PR.NO.282729 Drinking Water and Sanitation(22-23):D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल लातेहार।
अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0– : 08/2022–23

1. विभाग का नाम :– भवन निर्माण विभाग
2. विज्ञापनदाता का नाम :– कार्यपालक अभियंता, भवन प्रमंड़ल, लातेहार
3. परिमाण विपत्र प्राप्ति हेतु आवेदन की अंतिम तिथि एवं समय :– 28.11.2022 के 1.00 बजे अपराह्ण तक ।
4. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– 29.11.2022 के 3.00 बजे अपराह्ण तक ।
5. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– 29.11.2022 के 3.30 बजे अपराह्ण तक ।
6. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– 1.अधीक्षण अभियंता, भवन निर्माण विभाग, भवन अंचल सं0–02 रॉची के द्वारा प्राधिकृत स्थान एवं प्रतिनिधि के द्वारा।
   2. कार्यपालक अभियंता भवन प्रमंड़ल, लातेहार के द्वारा प्राधिकृत स्थान एवं प्रतिनिधि के द्वारा।
   3. सहायक अभियंता भवन अवर प्रमंड़ल, लातेहार के द्वारा प्राधिकृत स्थान एवं प्रतिनिधि के द्वारा।
7. .निविदा प्राप्ति एवं खोलने का स्थान :– 1.कार्यपालक अभियंता भवन प्रमंड़ल, लातेहार के द्वारा प्राधिकृत स्थान एवं प्रतिनिधि के द्वारा।
8. कार्य का नाम एवं अन्य सूचना :–

क्र. सं0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि रु0	अग्रधन राशि रु0	परिमाण विपत्र का मूल्य रु0	कार्य समाप्ति की अवधि
1.	2.	3.	4.	5.	6.
1	Construction of Model Labour Room at CHC Chandwa, Latehar	299602/-	6000/-	750/-	01 (One) Month
2	Construction of Model Labour Room at PHC Herhanj, Latehar	263112/-	5500/-	750/	01 (One) Month
3	Construction of Model Labour Room at PHC Murup, Latehar	263500/-	5500/-	750/	01 (One) Month
4	Construction of Model Labour Room at PHC Bariyatu, Latehar	263030/-	5500/-	750/	01 (One) Month
5	Renovation of Existing Labour Room for Developed as a Model Labour Room in the Campus of HSC Mahuadanr Latehar	264500/-	5500/-	750/	01 (One) Month
6	Construction of Model Labour Room at HSC Matlong Manika, Latehar	264983/-	5500/-	750/	01 (One) Month
7	Construction of Model Labour Room at CHC Manika, Latehar	265009/-	5500/-	750/	01 (One) Month
8	Construction of Model Labour Room at PHC Palheya,Manika Latehar	268677/-	5500/-	750/	01 (One) Month
9	Construction of Model Labour Room at HSC Saryu, Latehar	264988/-	5500/-	750/	01 (One) Month
10	Construction of Model Labour Room at HSC Nawagarh, Latehar	264846/-	5500/-	750/	01 (One) Month
11	Construction of Model Labour Room at HSC Hotwag, Latehar	264987/-	5500/-	750/	01 (One) Month
12	Renovation of Existing Labour Room for Developed as a Model Labour Room in PHC Mandal under Barwadih Block in Latehar District.	265300/-	5500/-	750/	01 (One) Month
13	Renovation of Existing Labour Room for Developed as a Model Labour Room in the Campus of CHC Barwadih in Latehar District.	265000/-	5500/-	750/	01 (One) Month

नियम एवं शर्त कार्यालय के सूचना पट्ट या **www.jharkhand.gov.in** पर देखें ।

कार्यपालक अभियंता,
भवन प्रमंड़ल, लातेहार।

PR 282726 Building(22-23)D

NETARHAT RESIDENTIAL SCHOOL
NETARHAT
(An autonomous Institution under School Education & Literacy Dept. Govt. of Jharkhand)

Letter No. - 2009 Date:19.11.2022

NOTICE FOR WALK IN INTERVIEW FOR APPOINTMENT OF NON TEACHEING STAFF ON CONTRACTUAL BASIS

In the light of advertisement No. 1243, dated 02.08.2022 regarding appointment of non-teaching staff on contractual basis which was earlier cancelled due to unavoidable reason now again requires/invites the application for appointment of non-teaching staff on contractual basis keeping the all terms & condition remain constant against our earlier advertisement published in this regard.

A Walk-in Interview will be Conducted in the School Premises for the recruitment of Non-Teaching Staff as Contractual Basis for the period of 11 Months. Interested Candidates may appear for the interview as per the given details:

1. SCHEDULE OF REGISTRATION FOR WALK IN INTERVIEW:

Post	Date of Interview	Registration	Interview
Accounts Clerk – 01 Post	26.11.2022	09:45 AM to 10:30 AM	12:30 PM to 5:30 PM
Store Keeper – 01 Post	27.11.2022	09:45 AM to 10:30 AM	12:30 PM to 5:30 PM
Computer Operator cum Typist – 01 Post	27.11.2022	09:45 AM to 10:30 AM	12:30 PM to 5:30 PM

Venue: Netarhat Residential School, Netarhat.

Sd/-
Principal
Netarhat Residential School, Cum – Member Secretary
Netarhat Vidyalaya Samiti, Netarhat

PR 282741 Human Resource Developement(22-23)#D

न्यूज गैलरी

निकाय चुनाव में भाग्य आजमाने उतरेंगे जेजेएमजे के कार्यकर्ता

मेदिनीनगर। राज्य निर्वाचन आयोग ने नगर निकाय चुनाव को लेकर नगर निगमों के महापौर तथा नगर परिषद के अध्यक्ष पदों का आरक्षण तय कर दिया है। इस संबंध में अधिसूचना सरकार की ओर से जारी कर दी गई है। राज्य के 9 नगर निगम , नगर परिषद ,मेयर, महापौर ,अध्यक्ष के पदों को आरक्षित और अनारक्षित कोटे में बांट दिया गया है। अधिसूचना के मुताबिक रांची नगर निगम के मेयर पद को अनुसूचित जाति में शामिल किया गया है । इस बाबत जेजेएमजे ने एक आवश्यक बैठक कर यह निर्णय लिया कि नगर निकाय ,नगर परिषद के चुनाव में जेजेएमजे के कार्यकर्ता भी भाग्य आजमायेंगे। पार्टी ने समर्थित नगर निगम, नगर निकाय चुनाव में अलग से उम्मीदवारों को समर्थित करेगी । ज्ञात हो कि नगर निगम चुनाव पार्टी बेसिस पर नहीं हो रही है । नगर निगम चेयरमैन के लिए पार्टी ने पूर्व आपूर्ति पदाधिकारी राजेंद्र प्रसाद को चुनाव के लिए उम्मीदवार घोषीत किया है एवं विभा सिंह को भी समर्थित उम्मीदवार बनाया है।

विद्यार्थियों को ससमय पर नहीं मिल रहा प्रमाणपत्र व माइग्रेशन सर्टिफिकेट

मेदिनीनगर। पलामू के नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय के पास आउट विद्यार्थियों को मूल प्रमाणपत्र, औपबंधित प्रमाणपत्र और माइग्रेशन सर्टिफिकेट ससमय नहीं मिल पा रहा है। तत्काल जरूरत वाले विद्यार्थियों को अतिरिक्त 200 रुपए का रसीद कटवाकर आवेदन करने पर 20 से 25 दिनों में डिग्री या माइग्रेशन मिल पा रहा है। सामान्य श्रेणी वालों को ढ़ाई से तीन माह में डिग्री व माइग्रेशन सर्टिफिकेट मिल पा रहा है। एनपीयू में विद्यार्थियों को हो रही इस परेशानी के कारण क्षोभ पैदा हो रहा है। परेशान विद्यार्थी लगातार इन परेशानियों को उठा रहे हैं। एनपीयू के परीक्षा नियंत्रक डॉ. शिवपूजन प्रसाद सिंह ने कहा कि सर्टिफिकेट निर्गत करने में उनके स्तर से कोई विलंब नहीं हो रहा है। डाटा वेरिफिकेशन आदि करने में थोड़ा देर हो जा रहा है। उन्होंने कहा कि समय से छात्रों को डिग्री और माइग्रेशन आदि मिले सके। इसके लिए वे अपने स्तर से लगातार प्रयास कर रहे हैं। विद्यार्थियों से जूड़ी सूचना सत्यापन में लगने वाले समय को कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

मेयर प्रत्याशी ने गुरियाही वार्ड नम्बर 4 का किया दौरा

मेदिनीनगर। मेयर प्रत्याशी जुगल किशोर चंद्रवंशी शनिवार को अपने जन समर्थकों के साथ गुरियाही क्षेत्र का दौरा किया। वार्ड का दौरा करने के दौरान उन्होंने जनता से अपने पक्ष में मतदान करने का आग्रह किया। लोगों ने भी उनका साथ देने का दावा किया। मौके पर उपस्थित जुगल किशोर ने कहा कि हमारी पूरी कोशिश है कि मेदिनीनगर शहर के विकास में किसी प्रकार की कोई कमी ना हो। उन्होंने कहा कि बिना किसी भेदभाव के सभी को साथ लेकर शहर का विकास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि समाज में मानवता की सेवा करना मेरा परम उद्देश्य है जिससे हम कभी पीछे नहीं हटेंगे।

प्राकृतिक चिकित्सा दिवस मना

मेदिनीनगर। जन विकास ट्रस्ट द्वारा संचालित जेवीटी योगा नेचुरोपैथी हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर ने शुक्रवार को प्राकृतिक चिकित्सा दिवस मनाया। नीलांबर-पीतांबरपुर प्रखंड मुख्यालय स्थित राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय में आयोजित प्राकृतिक चिकित्सा दिवस कार्यक्रम में शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के बीच प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को बताया गया । प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ सह योगा इंस्ट्रक्टर अजीत कुमार ने कहा कि जीवन शैली को अपने आहार और विचार से परिवर्तन किया जा सकता है।

पलामू असंगठित संघ ने कमिटी गठित की

मेदिनीनगर। पलामू असंगठित सेल की जिला कमेटी प्रदेश अंसगठित कामगार कर्मचारी कांग्रेस के अध्यक्ष शैलेश पाण्डे एंव चेयरमैन सह जिला कोर्डिनेटर अनिल सिंह के निर्देशानुसार गठन किया गया। इस कमेटी मे मुख्य सलाहकार चंद्रशेखर शुक्ला, दिनानाथ तिवारी ,जितेन्द्र कमलापूरी, परवेज अहमद, विक्रम दबे,जीवन सिंह ,एडवोकेट कमलेश सिंह ,विशाल कुमार, सिद्धनाथ प्रसाद गुप्ता, रंजन पाठक, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष सुरेन्द्र सिंह है। कमेटी में उपाध्यक्ष के लिए राजीव रंजन, कुणाल किशोर, आनंद चंदेल, अनुराधा कुमारी ,छोटू चंद्रवंशी, कमलेश कुमार दुबे को शामिल किया गया है। महामंत्री के रूप में साबीर अली, राजू सिंह, नुमान अली, शशांक दुबे , सुधिर शर्मा, शकेश तिवारी को शामिल किया गया है। जबकि सदस्य में चंदन कुमार ,राहुल कुमार अलोक सिंह ,अंशु सिंह भुषण देते शकेश दुबे रंजीत पाठक दिवाकर ,अंकित , अमन वर्मा, नितिंश चन्द्राशी आयुष राज , रितीक राज रजत कुमार राहुल कुमार दिवाकर तिवारी ,जितेंद्र कुमार पप्पू चन्द्रवंशी जितेन्द्र ठाकुर पाटन प्रखंड अध्यक्ष शामिल थे।

कांग्रेस ने इंदिरा गाँधी की जयंती मनाई

मेदिनीनगर। पलामू जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जैश रंजन पाठक की अध्यक्षता में शनिवार को पलामू जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय में भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री भारत रत्न इंदिरा गांधी की जयंती मनाई गई। सर्वप्रथम कांग्रेस जनों ने उनके चित्र पर माला फूल अर्पित करके श्रद्धांजलि सुमन अर्पित किए। उसके बाद कार्यलय में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी में जिला अध्यक्ष ने कहा कि देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश की आंतरिक एवं बाहरी सुरक्षा के साथ-साथ सर्वांगीण विकास के लिए जो कार्य किया है ,वह सराहनीय व अनुकरणीय है। दूर दृष्टि ,पक्का इरादा ,कड़ी मेहनत और अनुशासन के बदौलत उन्होंने अपने शासनकाल में कई उल्लेखनीय कार्य किए । उन्होंने विश्व के मानस पटल पर भारत को लाकर खड़ा कर दिया और विश्व समुदाय को अपने दृढ़ निश्चय और पक्के इरादे का लोहा मनवाया । हमें उनके सिद्धांतों और आदर्श जीवन से सीख लेने की जरूरत है। उनके भीतर गजब की राजनीतिक दूरदर्शिता थी। बैंकों का राष्ट्रीयकरण करने जैसा साहसिक फैसला लेने और पृथक बांग्लादेश के गठन कराके पाकिस्तान को भारत की ताकत का एहसास दिलवाया। मौके पर वरिष्ठ कांग्रेसी दीनानाथ तिवारी जिला के 20 सूत्री उपाध्यक्ष विमला कुमारी ,सत्यानंद दुबे ,शमीम अहमद राइन ,ईश्वरी प्रसाद सिंह, सुरेश पाठक सहिल कई लोग उपस्थित थे।

उपायुक्त ने जिले में संचालित योजनाओं की समीक्षा की

दो बीपीओ को शोकॉज, दो आंगनबाड़ी सेविका बर्खास्त

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। उपायुक्त आंजनेयुलू दोड्डे ने शनिवार को सभी बीडीओ व जिला स्तरीय पदाधिकारियों संग बैठक कर जिले में संचालित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन एवं अद्यतन स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत संचालित मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना की समीक्षा के दौरान सभी बीपीओ को नियमित रूप से फील्ड विजिट करने की बात कही। इसी क्रम में फील्ड विजिट नहीं करने व योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही बरतने को लेकर सतबरवा के बीपीओ व विश्रामपुर के बीपीओ से स्पष्टीकरण पूछा गया। साथ ही आवास में अपेक्षा पूर्ण प्रगति नहीं करने को लेकर सतबरवा के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर को भी शोकॉज किया गया।

आंगनवाड़ी सेविका को उपायुक्त ने बर्खास्तगी के दिए निर्देश

आंगनबाड़ी केंद्रों की समीक्षा के दौरान उपायुक्त को बताया गया कि पांकी में एक आंगनवाड़ी सेविका लंबे समय से अनधिकृत रूप से बगैर सूचना दिए अनुपस्थित है । इसी तरह पाटन के हिसरा बरवाडीह की सेविका के संबंध में बताया कि उक्त सेविका द्वारा आंगनबाड़ी केंद्र का संचालन ठीक से नहीं किया जा रहा है। दोनों ही मामलों पर त्वरित संज्ञान लेते हुए उपायुक्त ने दोनों आंगनवाड़ी सेविकाओं को बर्खास्त करने के निर्देश दिया। इसी तरह उपायुक्त ने सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के बेहतर क्रियान्वयन को लेकर बाल विकास परियोजना पदाधिकारी एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी को अपने क्षेत्र के शिक्षकों के साथ मीटिंग करने की बात कही। इसी क्रम में उन्होंने फर्जी राशन कार्ड धारियों पर कार्रवाई के लिये जिला आपूर्ति पदाधिकारी को व फर्जी पेंशनधारियों पर कार्रवाई हेतु सामाजिक सुरक्षा के सहायक निदेशक को निर्देशित किया। इसी तरह उपायुक्त ने मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना,सभी प्रकार के छात्रवृत्ति, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना,सहित अन्य योजनाओं की समीक्षा की। मौके पर उप विकास आयुक्त मेघा भारद्वाज,प्रशिक्षु आईएएस विसपुते श्रीकांत,जिला आपूर्ति पदाधिकारी, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी समेत सभी जिला स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

आज मनाई जायेगी उत्पन्ना एकादशी

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू में आज उत्पन्ना एकादशी मनाई जायेगी। हिंदू पंचांग के अनुसार हर माह के कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष को पड़ने वाली एकादशी का बहुत धार्मिक महत्व है। मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष को पड़ने वाली एकादशी उत्पन्ना एकादशी कहती है। मान्यता है कि इस दिन जो भगवान विष्णु की उपासना करता है और व्रत रखता है उसकी हर इच्छा पूर्ण होती है। जो भी एकादशी व्रत रखता है उसके वर्तमान के साथ पिछले जन्म के पाप भी मिट जाते हैं। शास्त्रों में उत्पन्ना एकादशी को पहला एकादशी व्रत माना गया है। जो लोग भी एकादशी का व्रत शुरू करना चाहते हैं । वे इस व्रत से शुरूआत कर सकते हैं। इस व्रत को उत्पत्तिका, प्राकट्य और वैतरणी एकादशी भी कहते हैं। उत्पन्ना एकादशी व्रत के प्रभाव से जातक को संतान सुख, आरोग्य और जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मिलती है। इस साल उत्पन्ना एकादशी का व्रत बेहद खास रहने वाला है। हिंदू पंचांग के अनुसार, इस बार उत्पन्ना एकादशी पर एक नहीं बल्कि पांच-पांच शुभ योग बन रहे ।

एकादशी के शुभ मुहूर्त : पुरोहित ओम पाठक में बताया कि मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि शनिवार को सुबह से प्रारंभ होगी। जो रविवार 10 बजकर 41 बजे खत्म होगी। इस व्रत का पारण अगले दिन 21 नवंबर को प्रातःकाल 6:48 से 8:56 के बीच किया जायेगा।

अनियंत्रित स्कॉर्पियो ने ऑटो को मारी टक्कर, चालक घायल

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के रेड़मा चौक के पास सड़क पर लगे डिवाइडर की वजह से प्रतिदिन दुर्घटनाएं हो रही है। इसी क्रम में शनिवार की सुबह 11:00 रेड़मा से डाल्टेनगंज की ओर जा रहे एक स्कॉर्पियो डिवाइडर से टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई । इसी बीच स्कॉर्पियो की चपेट में आने से एक ऑटो भी दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दुर्घटना में टेंपो चालक घायल हो गया। जिसे इलाज के लिए मेदिनीनगर सदर अस्पताल भेजा गया है। वही इस घटना की जानकारी मिलने पर ट्रैफिक प्रभारी रामजीत सिंह अपने दल बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर वाहन को हटाने में जुट गए थे। वहीं स्थानीय लोगों ने बताया कि रेड़मा में सड़क के दोनों किनारे हमेशा गाड़ी लगी रहताी है ,इसके वजह से दुर्घटना की संभावना हमेशा बनी रहती है। पुलिस के द्वारा लगातार सड़क से वाहन को हटाया जाता है । परंतु लोग अपने मनमाने ढंग से वाहन को सड़क के किनारे लगा कर सड़क को जाम कर देते हैं। इस संबंध में ट्रैफिक प्रभारी रामजीत सिंह ने बताया कि अब सड़क के किनारे गाड़ी लगाने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जायेगी तभी जाकर सड़क पर लोग गाड़ी लगाना छोड़ेंगे।

मेयर प्रत्याशी ने चलाया जनसंपर्क अभियान

मेदिनीनगर। क्षेत्र को स्पेशल पैकेज देकर आदर्श क्षेत्र के रुप में विकसित किया जायेगा। यह कहना है भावी मेयर प्रत्याशी मनोज सिंह का। श्री सिंह शनिवार को चैनपुर क्षेत्र के वार्ड नंबर 34 में घर घर यात्रा के तहत जनसंपर्क में जनता से सिधे रुबरु हुए। श्री सिंह ने इस दौरान बताया कि नगरनिगम के जो भी क्षेत्र नए जूडे. उन क्षेत्रों को उपेक्षित छोड़ दिया गया है और यह परिदृश्य पूरे नए क्षेत्रों में देखी जा रही है । उन्होंने कहा कि जबकि इन क्षेत्रों में स्पेशल योजना चलाकर बुनियादी सुविधाओं को बहाल किया जाना चाहिए था।उन्होंने कहा कि इसीलिए वो बार बार बूनियादी समस्याओं को दूर करने की बात कर रहे हैं।उन्होंने कहा कि पूरे नगरनिगम क्षेत्र में पानी निकसी व पेयजल संकट वृहद स्तर पर देखी जा रही है। उन्होंने कहा कि जनता ने उन्हें जनमत दिया तो सबसे पहले बुनियादी समस्याओं के निराकरण करने की पहल की जाएगी।

पलामू में ठंड ने दी दस्तक, लोगों ने निकाले गर्म कपड़े

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। गुलाबी ठंड ने पलामू में दस्तक दे दी है। सुबह और शाम में हल्की सिहरन महसूस होने लगी है। रात में बाहर निकलने पर गर्म कपड़ा और घर में भी चादर की जरूरत महसूस होने लगी है। दिन में धूप निकली, लेकिन शाम को ठंड भी महसूस होने लगी है। धूप भी गुनगुनी महसूस हुई। इससे न्यूनतम तापमान गिरकर 18 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। वही अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र अनुसार तापमान में कोई खास बढ़ोतरी नहीं होगी । पलामू में दिनों दिन चढ़ने के साथ ही धूप भी तेज होते जाती है और गर्मी का अहसास होने लगता है। सूर्योदय और सूर्यास्त से पहले हल्की सर्दी का अहसास होता है। समय के साथ सर्दी का डाल्टनगंज में प्रवेश होगा। मौसम वैज्ञानिक अभिषेक आनंद के अनुसार सर्दी के लिए फिलहाल हवा का पैटर्न माकूल नहीं है। इसके लिए हवा का रुख नॉर्थ वेस्टर्ली या नॉर्दन होना चाहिए, या पहाड़ी क्षेत्र में लगातार वर्फबारी के कारण भी तापमान में गिरावट है। फिलहाल दोनों चीजें नहीं हो रही है, ऐसे में सर्दी अपने समय से ही झारखंड आयेगी। विभाग के अनुसार नवंबर के अंत तक पलामू का अधिकतम तापमान 29 से 31 डिग्री सेल्सियस के बीच रहेगा। जबकि पलामू और गढ़वा जिले का न्यूनतम तापमान 16 से 17 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।

प्रशासन ने कंबल वितरण शुरू किया : पलामू के ठंड की आहट होते ही प्रशासन के ओर से कंबल वितरण का कार्य शुरू किया गया है। सदर एसडीओ राजेश शाह के द्वारा सड़कों पर रहने वाले जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया जा रहा है। वही निगम की ओर से भी सभी वार्ड पार्षदों को कंबल वितरण किया गया है, ताकि समय पर सभी जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किय जा सके।

प्रभात कुमार अग्रवाल फिर बने झाम्कोफेड के निर्देशक

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। झारखंड सरकार का उपक्रम झारखंड राज्य लघु वनोपज सहकारी विकास एवं विपणन संघ लिमिटेड जिसे झाम्कोफेड के नाम से भी जाना जाता है। संघ में निदेशक के पद पर प्रभात कुमार अग्रवाल को एक बार फिर सफलता मिली है। उन्हें अन्य उम्मीदवारों के मुकाबले अपार मतों से विजयी घोषित किया गया है। गौरतलब है कि श्री अग्रवाल पूर्व में भी वर्ष 2017 से 2022 तक निर्देशक के पद पर आसीन थे। प्रबंध निदेशक के कार्यालय से निर्वाचन पदाधिकारी देवेंद्र सिंह ने झारखंड सहकारी समिति नियम 1959 के नियम के अनुसार 14 नवंबर को प्रभात कुमार अग्रवाल को निर्वाचित होने की घोषणा की।

विहंगम योग ने किया पांच दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। सदगुरू सदाफल देव विहंगम योग संस्थान की पलामू जिला शाखा के देखरेख में जिले में पांच दिवसीय रक्तदान शिविर शुरू हुआ। पांकी प्रखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाया गया। संस्थान के पलामू जिला सह संयोजक बनारसी प्रसाद यादव, प्रखंड प्रमुख पंचम साव, उप प्रमुख अमित सिंह चौहान, डा रेयाज अनवर,जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि मुकेश सिंह चंदेल ने सदगुरू देव के तस्वीर पर माल्यार्पण किया। इसके बाद दीप प्रज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया गया। जिला सह संयोजक श्री यादव ने कहा कि रक्तदान जीवन दान के समान है। रक्तदान से बड़ा कोई भी मानव सेवा धर्म नही है। रक्तदान कर जरूरत मंद की जान बचाई जा सकती है। रक्त सेवा मानव सेवा के उद्देश्य को समझने की जरूरत है। संत प्रवर विज्ञान देव जी महाराज के पावन जन्मोत्सव पर शिविर लगाया गया। अतिथियों ने रक्तदान का महत्व बताते हुए रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाया। शिविर में सदगुरू देव के 17 भक्तजनों ने स्वैच्छिक रक्तदान किया। रक्तदान को लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा गया। शिविर में ओंकार नाथ पाठक, अवधेश सिंह, संजय प्रजापति, उमेश कुमार, अमलेश चौहान, गोल्डन, अलखदेव मांझी, अमित सिंह चौहान, अमित कुमार, दयानंद कुमार, राजमुनी सिंह, निरंजन भारती, नवीन कुमार, राजन कुमार, संजय सिंह, अगम सिंह, वर्धमान गौतम ने रक्त दान किए कार्यक्रम को सफल बनाने में भूलु मिस्त्री, कामाख्या पाठक, रंजीत सिंह, रवींद्र सिंह, दीवनंदन यादव, सुदामा सिंह, बढ़ान भोक्ता, अक्षय पाठक,योगेश्वर प्रसाद ,कामेश्वर सिंह सहित कई लोग सक्रिय थे।

संसदीय समिति की बैठक में फाइनल लोकेशन सर्वे की मिली स्वीकृति : वीडी राम

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। धनबाद रेल मंडल संसदीय समिति की बैठक में पलामू के सांसद वीडी राम ने भाग लिया। जिसकी अध्यक्षता धनबाद के सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने की। बैठक में चतरा के सांसद सुनील कुमार सिंह, गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी एवं राज्यसभा के सांसद आदित्य साहू, रामसकल उपस्थित थे।। जबकि जयंत सिन्हा, दीपक प्रकाश, पकौड़ी लाल, धीरज साहू, संजय सेठ के प्रतिनिधि उपस्थित थे। पलामू सांसद अपने क्षेत्र की रेलवे से संबंधित मांगों की ओर महाप्रबंधक पूर्व मध्य रेलवे एवं मंडल रेल प्रबंधक धनबाद तथा संबंधित पदाधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया। मांगो में प्रमुख रूप से पलामू एक्सप्रेस का राजहरा स्टेशन पर ठहराव, रांची वाराणसी इंटरसिटी एक्सप्रेस का हैदरनगर में ठहराव के साथ-साथ लालगढ़, पंजारी कला डाली, राजहरा रेलवे क्रॉसिंग के पास एलएचएस निर्माण की बात पूरे जोरदार ढंग से उठाई। इसके अतिरिक्त पलामू एक्सप्रेस ट्रेन में कोच की संख्या बढ़ाने तथा शक्तिपुंज एक्सप्रेस का मेराल में ठहराव का भी मसला जोरदार ढंग से उठाया। झारखंड स्वर्ण जयंती एक्सप्रेस का हमेशा विलंब से चलने का मुद्दा भी उठाया। इसके अतिरिक्त गरीब रथ का अलीगढ़ में ठहराव की भी मैंने मांग रखी है। रांची से गोरखपुर तक के लिए करोना काल के दौरान चलाई जा रही ट्रेन का परिचालन कराने, नगर उंटारी स्टेशन का नाम बदलकर बंशीधर नगर एवं डालटनगंज रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर मेदिनीनगर स्टेशन करने का आग्रह किया। बताया कि बंशीधर नगर मंदिर में राधा कृष्ण की अद्वितीय मूर्ति है जो सोने की है । जिसका वजन 1132 किलोग्राम है जो दुनिया में कहीं नहीं है। इस स्थान की महत्ता को बढ़ाने की दिशा में रेलवे को भी पूर्ण रूप से योगदान देना चाहिए। डालटनगंज एवं राजहरा स्टेशन के बीच चेड़ाबार सिंगरा पुल के पास आरओबी बनाने हेतु रेलवे द्वारा की गई कार्रवाई के संबंध में जानकारी मांगी। राज्य सरकार और रेलवे के बीच जीएडी अप्रूवल की स्वीकृति की कार्रवाई चल रही है। डाली, पंजारिकला, लालगढ़, सोनपुरवा, अहिरपुरवा, कजरात नावाडीह, सुआ में लो हाइट सबवे बनाने की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। विभिन्न स्टेशनों पर प्रतिक्षालय, पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने की बात कही। सांसद ने कहा कि यह बताते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि बरवाडीह चिरमिरी अंबिकापुर रेल लाइन का फाइनल लोकेशन सर्वे करने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। सर्वे का कार्य पूर्ण होने के बाद डीपीआर बनाया जाएगा और उसके बाद निर्माण करने से संबंधित आवश्यक कार्रवाई की जायेगी। गया शेरघाटी भाया रफीगंज रेल लाइन निर्माण के लिए एसएलएस की स्वीकृति की दिशा में कार्रवाई की जा रही है। मांगों पर महाप्रबंधक एवं रेल प्रबंधक धनबाद ने सकारात्मक रूप से कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

चुनावी लहर तेज मेयर प्रत्याशी जनता पर डाल रहे डोर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू में चुनाव की लहर तेज हो गई है । वहीं मेयर व पार्षद पद घर घर जाकर जनता पर डोर डालना शुरू कर दिए हैं। घर-घर पहुंचे नेता वोटरों को विजयी बनाने की अपील भी कर रहे हैं। हर राज्य व जिले मे अलग-अलग समय अंतराल में चुनाव होते है। हमारे यहां भी चुनाव प्रत्येक 5 वर्ष के अंतराल में ही होते है। चुनाव किसी भी लोकतांत्रिक देश मे होना अति आवश्यक है। यह लोकतंत्र को प्रदर्शित करता है।इस चुनावी दंगल में किस्मत अजमाने वाले प्रत्याशियों ने जमकर प्रचार में जुटे हुए हैं। चुनाव का मुख्य हिस्सा जनता ही होती है, उनके बिना चुनाव का कोई महत्व नहीं है। नेता और जनता, दोनों आजाद हो गए। जनता को वोट देने की आजादी मिली और नेता को वोट लेने की। चुनाव शब्द दो शब्दों को मिलाकर बनाया गया है, चुन और नाव । चुनाव की प्रक्रिया के तहत जनता एक ऐसे नेता रूपी नाव को चुनती है जो जनता को विकास की वैतरणी पार करा सके। चुनाव एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसके द्वारा ही जनता एक योग्य व्यक्ति का चुनाव करके सत्ता उसके हाथों में सौंपती है। इसमें केवल एक व्यक्ति को सीधे ही नहीं चुना जाता है बल्कि, इसकी एक लम्बी प्रक्रिया होती है। क्या की जनता को एक अच्छे नेता चुनने का उसका अपना पूरा अधिकार है। जनता के लिए सबसे अधिक शोर मचाने वालों को उसके कल्याण के लिए सबसे उत्सुक मान लेना सबसे बड़ी त्रुटि है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वर्तमान में हमारी मान्यता यही हो गई है कि मेयर व पार्षद या जो जनप्रतिनिधि अधिक शोर मचाये वही मुखर मेयर या पार्षद मान लिया जाता है। जबकि यहां मुखर का अर्थ ऐसे मेयर या पार्षद से होना चाहिए जो अपने क्षेत्र की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने के साथ -साथ हमारे पलामू जिले-हित का भी ध्यान रखे। उसके शब्दों में संतुलन होना चाहिए कि उसकी मांग यदि मानी भी जाये तो किसी सम्प्रदाय , वर्ग या जाति कि भावनाओं के प्रतिकूल न हो और उसका प्रभाव राष्ट्रीय अस्मिता , एकता और अखंडता पर भी न पड़ता हो।

न्यूज गैलरी

प्रखंड के सभी मतदान केन्द्रों पर विशेष शिविर का आयोजन

श्री बंशीधर नगर। मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2023 को लेकर प्रखंड के सभी मतदान केन्द्रों पर शनिवार को विशेष शिविर का आयोजन किया गया। सम्बंधित मतदान केन्द्रों के बीएलओ द्वारा एक जनवरी 2023 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले सभी योग्य व्यक्तियों से मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिये प्रपत्र 6,मतदाता सूची में नाम, आयु, उम्र आदि में हुई त्रुटि को सुधारने के लिये प्रपत्र 8 तथा मृत,स्थानांतरित मतदाताओं का नाम मतदाता सूची से हटाने के लिये प्रपत्र 7 प्राप्त किया गया। बीएलओ पर्यवेक्षकों द्वारा मतदान केन्द्रों का निरीक्षण किया गया।

नाबालिग के अपहरण को लेकर पिता ने थाना में दिया आवेदन

भवनाथपुर। थाना क्षेत्र के शिंगहिताली निवासी पीडित ने अपने नाबालिक बेटी का अपहरण करने का आरोप गांव के ही दो लड़कों पर लगाते हुए भवनाथपुर थाना में लिखित आवेदन दिया है। शिकायत मिलते ही पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। दिए आवेदन में लड़की के पिता ने कहा है कि मेरी लड़की हर दिन की भांति दिनांक 16 नवम्बर को घर से स्कूल के लिए निकली थी परन्तु शाम तक घर नही लौटने पर सब जगह पता किया। जिसमें पता चला कि गांव के ही दो लड़के कुन्दन कुमार बैठा 22वर्ष पिता बिलु बैठा व उसका सहयोगी राहुल बैठा 21 वर्ष पिता कुमार्क बैठा मेरी लड़की का अपरहण किये है। जिसमें एक लड़का सहयोगी राहुल बैठा अभी गांव में ही है और उसके सम्पर्क में है। जबकि राहुल बैठा का पूर्व में भी इतिहास संदेहास्पद है। सूचना के बाद पुलिस कानूनी करवाई में जुट गई है ।

प्रमुख ने आवास योजना में गड़बडी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की

भवनाथपुर। प्रमुख शोभा देवी ने मुख्यमंत्री के नाम पत्र लिखकर भवनाथपुर में प्रधान मंत्री आवास में हो रही गड़बड़ी की शिकायत अखबारों में छपने के बाद भी करवाई नही होने से चिंता वयक्त करते हुए सभी आवासों का जांच कर दोसी कर्मी व अधिकारियों पर करवाई करने की मांग की है। दिए पत्र में प्रमुख ने कहा है कि आये दिन अखबारों में भवनाथपुर प्रखंड के अंतर्गत आवास निर्माण में गड़बड़ी की शिकायत मिल रही है। जिसमे ताजा मामला मकरी पंचवायत में पति पत्नी दोनों के नाम मीले आवास में पैसा निकासी के बावजूद आवास अधूरा है। तो दूसरी घटना पंडरिया पंचायत के करमाहि में भी अदिमजनजाति परिवार को पूर्व के बिरसा आवास की मरमती कर प्रधानमंत्री आवास का फर्जी तरीके से पैसा निकासी का मामला सामने जांच में आया है। जिसको लेकर भवनाथपुर बीडीओ जयपाल महतो के द्वारा गढ़वा डीडीसी को पत्र लिखकर दोसी के विरुद्ध करवाई की मांग की गई थी परन्तु अभी तक इसमें कोई करवाई नही होने से लोंगो के बीच इसका गलत सन्देस जा रहा है। अतः दोसी कर्मी के विरुद्ध जांचों उपरांत कानूनी करवाई की जाय ताकि भविष्य में गरीबो के साथ इसतरह की घटना की पुनरावृत्ति नही हो ।इस पत्र की प्रतिलिपी प्रमुख ने गढ़वा उपायुक्त को भी दिया है ।

सड़क दुर्घटना में एक युवक घायल

भवनाथपुर। भवनाथपुर रेंज ऑफिस के पास बाईक एवं बोलेरो में सीधी टक्कर में बाइक सवार चेरवाड़ीह निवासी रंजीत कुमार साव गंभीर रूप से घायल हो गया। ग्रामीणों द्वारा घायल रंजीत कुमार साव को समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। जहां तैनात डॉक्टर कमल सैनी के द्वारा इलाज किया जा रहा है। घटना के संबंध में परिजनों ने बताया कि चेरवाडीह घर से भवनाथपुर कोचिंग की पढ़ाई के जा रहा थी। भवनाथपुर रेंज ऑफिस के पास बलोरो और बाईक में टक्कर हो गई। बोलेरो चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया।

गढ़वा। धुरकी थाना क्षेत्र के कदवा गांव निवासी जीतन कोरवा के पत्नी कबूतरी देवी कीटनाशक पदार्थ खाकर आत्महत्या करने का प्रयास की है। उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि पति पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ था। इसी बात से उग्र होकर कबूतरी देवी ने कीटनाशक पदार्थ खा ली जब उसकी तबीयत बिगड़ तो घर वालों ने उठाकर सदर अस्पताल में इलाज के लिए लाया है।

मारपीट की घटना में एक घायल

गढ़वा। कांडी थाना क्षेत्र के शिवपुर गांव निवासी नागेंद्र पांडे मारपीट की घटना में घायल हो गया उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के संबंध में नागेंद्र पांडे ने बताया खलिहान से घास छिल रहे थे। इसी बीच कि भाई का पोता बटोही पांडे मैं नोकझोंक हो गया। जिसके बाद मारपीट में बदल गया। इसमें नागेंद्र पांडे घायल हो गए। घर वालों के सहयोग से सदर अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया।

स्वयंसेवक संघ ने सामूहिक हड़ताल पर जाने को लेकर बीडीओ को सौंपा ज्ञापन

केतार। पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक संघ ने पिछले दो वर्षो से प्रोत्साहन राशि का भुगतान नहीं होने एवं कुछ प्रखंड कर्मियों के द्वारा बिना सेल्फी का जियो टैग करने को विरोध में सामूहिक हड़ताल पर जाने को लेकर प्रखंड विकास पदाधिकारी मुकेश मछुआ को ज्ञापन सौंपा है। जिसमे उल्लेख किया गया है कि दो वर्षो से अधिक समय से पंचायत स्वयंसेवकों का प्रोत्साहन राशि का भुगतान नहीं किया गया है। जिसके वजह से स्वयंसेवकों का आर्थिक स्थिति खराब हो गया है। हम लोगों को घर परिवार चलाना मुश्किल हो गया है ।2016 मे तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दास के द्वारा प्रधानमंत्री आवास सहित अन्य सरकारी कार्यों का ससमय निपटारा के लिए पंचायत स्वयंसेवक की बहाली की गई थी ।उन्हें प्रोत्साहन राशि बेस पर रखा गया था। पर केतार प्रखंड में दो वर्षो से अधिक समय तक का प्रोत्साहन राशि बाकी है। प्रखंड स्वयंसेवक संघ के अध्यक्ष राज किशोर सिंह ने बताया कि कुछ प्रखंड कर्मियों के द्वारा बिना सेल्फी का जियो टैग किया जा रहा है ।जो कि सरासर गलत बात है। और हम सभी स्वयंसेवकों को आर्थिक संकट के साथ साथ लाभुकों के बीच मानहानि झेलनी पर रही है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री आवास मे स्वयंसेवकों की भूमिका अहम होती है। लेकिन सरकार और विभाग द्वारा स्वयंसेवकों को नजरंदाज किया जा रहा है। स्वयंसेवकों ने बताया की जब तक हम लोगों का प्रोत्साहन राशि का भुगतान नहीं होंगा तब तक हमलोग हड़ताल पर रहेंगे। इस मौके पर स्वयंसेवक धीरेंद्र राम,सुनील राम, सुषमा देवी,भोला पासवान, कमलेश कुमार प्रजापति,रविकांत चंद्रवंशी, रवि कुमार सहित अन्य स्वयंसेवक उपस्थित थे।

मेराल में चिर-प्रतिक्षित सड़क निर्माण की मांग हुई पूरी

विषम परिस्थितियों में भी झारखंड सरकार विकास की नई गाथा लिख रही हैं: मिथिलेश

नवीन मेल संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मेराल प्रखंड के गेरुआ पंचायत का चिर प्रतिक्षित सड़क निर्माण की मांग अब पूरी हो गई है। देवगाना बस स्टैंड से बजनवाटोला तक करीब आठ किलोमीटर इस सड़क का निर्माण लागभग 10 करोड़ रुपए की लागत से किया जाएगा। इसकी प्रशासनिक स्वीकृति झारखंड सरकार ने प्रदान कर दी है। जल्द ही इसका निर्माण कार्य आरम्भ होगा। जानकारी देते हुए गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने बताया कि यह एक अति महत्वपूर्ण सड़क है। जो पूरी तरह

कच्ची सड़क है। इस क्षेत्र के ग्रामीणों को काफी समस्या हो रही थी। स्थानीय ग्रामीण लंबे समय से इस सड़क के निर्माण की मांग कर रहे थे। उन्होंने ग्रामीणों को इस सड़क का निर्माण कराने का आश्वासन दिया था जो पूरा हो गया है। मंत्री ने बताया कि देवगाना बस स्टैंड से ले कर बिछियादामर, यूरिया टोला, करियई जरही, गेरुआडीह होते हुए बजनवाटोला तक करीब 8.1 किलोमीटर लंबी इस सड़क का निर्माण किया जाएगा। इस सड़क के निर्माण से गेरुआ पंचायत का हर टोला सहित अन्य सीमावर्ती पंचायतों की लगभग आधा दर्जन गांवों की 12 हजार से अधिक की आबादी लाभान्वित होगी।

यह सड़क स्थानीय लोगों को एक नई जीवन रेखा प्रदान करेगा। गढ़वा विधानसभा क्षेत्र के हर गांव, हर टोले को पक्की सड़क से जोड़ने का संकल्प आगमी कुछ वर्षों में जल्द ही पूरा होगा। मंत्री ने कहा कि विषम परिस्थितियों में भी झारखंड सरकार विकास की नई गाथा लिख रही है।

मतदान केंद्रों पर आयोजित विशेष कैंप का बीडीओ ने किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी(गढ़वा)। प्रखंड के 48 मतदान केंद्रों पर मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम 2023 को लेकर शनिवार को विशेष कैम्प आयोजित किया गया। इस दौरान सम्बंधित मतदान केंद्र के बीएलओ द्वारा मतदाता सूची में नाम जोड़ने के लिये प्रपत्र 6,मतदाता सूची से नाम हटाने के लिये प्रपत्र 7 तथा मतदाता सूची में नाम,पता,उम्र आदि गलत होने पर सुधार के लिये प्रपत्र 8 प्राप्त किया गया।साथ ही मतदाताओं को वोटर कार्ड से आधार एवं मोबाइल नंबर लिंक करने के लिए 6बी प्रपत्र भरा गया।प्रखंड विकास पदाधिकारी गणेश महतो ने कई मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर बीएलओ से जानकारी प्राप्त किया साथ ही बीएलओ पर्यवेक्षक के द्वारा भी संबधित मतदान केंद्रों का अनुश्रवण किया गया।सभी मतदान केंद्रों पर बीएलओ शिविर में उपस्थित होकर कार्य करते पाए गए। मौके पर जीपीएस उमेश कुमार, बीएलओ पर्यवेक्षक कपिलदेव सिंह, नीतीश कुमार, वसीम अकरम अरविंद कुमार गुप्ता सहित सभी बीएलओ उपस्थित थे।

निर्वाचन संबंधी विषयों को लेकर बीडीओ ने की बैठक

छुटे हुए वोटरों का मतदाता सूची में नाम दर्ज करे

नवीन मेल संवाददाता

श्री बंशीधर नगर। प्रखण्ड कार्यालय के सभागार में शनिवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी श्रवण राम ने प्रखण्ड के सभी उच्च विद्यालय,महाविद्यालय के ईएलसी के नोडल पदाधिकारी, सभी राजनीतिक दलों के अध्यक्ष तथा दिव्यांग संघ के अध्यक्ष के साथ निर्वाचन संबंधी बैठक आयोजित कर निर्वाचन सम्बन्धी जानकारी दिया। बैठक में बीडीओ ने इएलसी के सभी नोडल अधिकारियों को चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित तिथि को विशेष कैंप आयोजित कर फ्यूचर वोटर को जागरूक करने तथा उनसे प्रपत्र 6 प्राप्त करने का निर्देश दिया। उन्होंने राजनीतिक दलों के प्रखंड अध्यक्ष से मतदाता सूची में छूटे हुए लोगों का नाम जोड़े जाने के कार्य मे सहयोग करने की अपील किया। उन्होंने

कहा कि आगामी 8 दिसंबर से पूर्व संबंधित बीएलओ के पास प्रपत्र 6 भरकर जमा कराएं ताकि योग्य लोगो का नाम मतदाता सूची में जोड़ा जा सके। उन्होंने कहा कि विशेषकर महिला मतदाता किसी भी हाल में ना छूटे यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने दिव्यांग संघ के अध्यक्ष से कहा कि यदि कोई दिव्यांग योग्य व्यक्ति अभी भी मतदाता सूची में निबंधन हेतु छूटे हुए हैं तो उनका प्रपत्र 6 भरकर अविलंब बीएलओ को उपलब्ध कराएं। बैठक में प्रभारी बीपीआरओ उत्तम रंजन, ठाकुर दयाल देव माणिक राज महाविद्यालय के ईएलसी नोडल अमरेश कुमार यादव, मां नगीना शाही महिला महाविद्यालय के केशरी अविनाश कुमार, उच्च विद्यालय गरबांध के कृष्णा गुप्ता, उच्च विद्यालय कधवन के अरिंदम विश्वास, राजकीय प्लस टू उच्च विद्यालय के अमरेंद्र दास, आम आदमी पार्टी के मंटू पांडेय, दिव्यांग संघ के अध्यक्ष कमलेश बिहारी सहित अन्य उपस्थित थे।

सीलिया टोनगर के समीप बाइक से गिरकर एक महिला घायल

गढ़वा। एनएच 75 पर के सीलिया टोनगर के समीप मोटरसाइकिल से गिरकर एक महिला घायल हो गई। उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में लाया गया। घायल धुरकी थाना क्षेत्र के मरचईया गांव निवासी प्रमोद कुमार राम की पत्नी सीमा देवी बताया जा रहा है। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि सीमा अपने पति के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर गढ़वा रहे थे। इसी बीच एनएच 75 पर सिलीया टोंगर के समिप अचानक कुता सामने आ जाने से ब्रेक मारने के बाद मोटरसाइकिल से गिरकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। जिसके बाद आसपास के लोगों के सहयोग से उठाकर सदर अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया है।

कलान पंचायत में मुख्यमंत्री फुटबॉल कप प्रतियोगिता का किया गया शुभारंभ

नवीन मेल संवाददाता

भवनाथपुर। कलान पंचायत में पंचायत स्तरीय मुख्यमंत्री आमंत्रण फुटबॉल कप प्रतियोगिता का शुभारंभ कैलान पंचायत के उप मुखिया श्री सुरेंद्र यादव जी ने किक मारकर शुभारंभ किया। पंचायत स्तरीय मुख्यमंत्री आमंत्रण फुटबॉल कप प्रतियोगिता में एक महिला टीम और दो पुरुष टीम भाग लिया जिसमें कोनमंडरा वर्सेस कैलान बीच खेला गया जिसमें दोनों टीमों ने अच्छा खेल का प्रदर्शन किया लास्ट में कैलान एक गोल से जीतने में कामयाब हुआ मुखिया जी ने कहा कि खेल से शारीरिक और मानसिक दोनों विकास होता है। हम लोगों को खेल खेलना चाहिए और सभी खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलना चाहिए और अपने पंचायत का नाम रोशन कीजिए। प्रखंड स्तर

पर जिला स्तर पर अपना नाम रोशन कीजिए मैं आप लोगों के साथ हर समय हर परिस्थिति में खड़ा रहूंगा। मैच के मुख्य रेफरी की भूमिका में शक्ति सिंह, अवधेश सिंह और जोगिंदर यादव जी ने निभाया साथ में अजय कुमार गुप्ता, झारखंड मुक्ति मोर्चा के पंचायत अध्यक्ष श्री उदय कुमार यादव जी वार्ड नंबर 11 के वार्ड पार्षद पति आमोद भुइयां जी, संजय यादव, बीरबल कुमार ,उमेश यादव, सुरेंद्र सिंह, जी पप्पू सिंह एवं कैलान पंचायत के पंचायत वासी उपस्थित थे।

जनविरोधी नीतियों के खिलाफ भाजपा मंडल इकाई ने किया धरना-प्रदर्शन

नवीन मेल संवाददाता

खरौंधी(गढ़वा)। शुक्रवार को प्रखंड कार्यालय के समीप पर झारखंड सरकार के जनविरोधी नीतियों के खिलाफ भाजपा मंडल इकाई ने एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया। इसे पूर्व भाजपा नेताओ तथा कार्यकताओं ने जुलूस निकाला। जुलूस खरौंधी बाजार से होकर प्रखंड कार्यालय पहुंचा था। इसमें कार्यक्रम प्रभारी उमेंद्र प्रसाद यादव ने कहा हेमंत सोरेन की सरकार में प्रदेश की लाइन ऑर्डर पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका है। झारखंड सरकार बलात्कारियों तथा भ्रष्टाचारियों पर अंकुश लगाने में पूरी तरह से फेल हो गया है। झारखंड में हेमंत सोरेन की सरकार जन विरोधी कार्य कर रही है। हेमंत सोरेन अपनी चुनावी वादों को पूरा नही कर पाए। इनके शासन काल में आमलोगों को थाना में झूठा केस में फसाया जा रहा है। झारखंड में बालू माफिया का चांदी ही चांदी है क्योंकि

सरकार ऐसे लोगो को संरक्षण दे रही है। प्रदेश में हर तरफ लूट मचा हुआ है। इसके पश्चात भाजपा नेताओ तथा कार्यकताओं ने बीडीओ गणेश महतो को राज्यपाल के नाम 11 सूत्री मांग पत्र सौंपा। धरना प्रदर्शन का संचालन भाजपा मंडल महामंत्री इग्नासियूस बाड़ा ने किया। इस दौरान पार्टी के खरौंधी प्रभारी विनय कुमार चौबे, लक्ष्मण राम, विधायक प्रतिनिधि उपेंद्र दास, जितेंद्र प्रसाद यादव,मंडल अध्यक्ष संध्याकर विश्वकर्मा, बसंत कुमार यादव, रामकृपाल द्विवेदी, अरुण कुमार सिंह सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

भवनाथपुर। डीएवी विद्यालय भवनाथपुर में केंद्र सरकार के दिशानुसार क्रिया कलाप के इंचार्ज अरुण कुमार सिंह एवं संजय राय भट्ट के मार्गदर्शन में सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह कार्यक्रम शुभारंभ किया गया। यह कार्यक्रम सात दिनों तक चलाया जाएगा। जिसके तहत भाषण, गीत संगीत, कला प्रदर्शनी, नुक्कड़ नाटक और सद्भावना रैली जैसे कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।

सांप्रदायिक सद्भावना सप्ताह की शुरूआत करते हुए प्राचार्य राकेश सिन्हा ने कहा कि मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना। इसलिए अपने धर्म के बताए हुए मार्ग पर चले और दूसरे धर्म का सम्मान करें। मौके पर शिक्षक बी शिक्षक विभूति भूषण साहू, ए के वर्मा, जे एस तिवारी, प्रवीण पाण्डेय ने भी अपने अपने विचार रखे।

आदिवासी कल्याण मद द्वारा पारित योजना सरना स्थल घेराबंदी के बदले शिव स्थल की हो रही घेराबंदी

नवीन मेल संवाददाता

चिनियां। प्रखंड के खुरी पंचायत के खुरी गांव में आदिवासी कल्याण मद द्वारा सरना स्थल पर घेराबंदी के लिए योजना पारीत था जिसे सरना स्थल पर घेराबंदी न कर शिव स्थान देवस्थान की घेराबंदी की जा रही है । जो खुरी पंचायत सचिवालय के पीछे है जबकि सरना स्थल दूसरे स्थान पर अवस्थित है जो आदिवासी कल्याण मद की राशि अनियमितता करते हुए अन्य देव स्थल जगहों पर खर्च किए जाने का मामला प्रकाश में आया है । जिसे लेकर आदिम जनजाति के लोगों ने विरोध किया तथा सरना स्थल पर घेराबंदी करने की मांग की बताते चलें कि जिस स्थान पर घेराबंदी किया जा रहा है वहां से लगभग 500 मीटर अलग सरना

स्थल है । आदिम जनजाति के अजय कोरवा,महेंद्र कोरवा, बिकास कोरवा,रामवृक्ष कोरवा, तरेगन परहिया,रितेंद्र कोरबा, दशरथ कोरवा,रमेश कोरवा,विजय कोरवा, सुकनी कोरईन,मानमती कोरइन, परमिला कोरइन, सुनीता कोरइन, अनीता कोरइन, जयवंती कोरइन, जसिनता कोरइन, चिंता कोरइन, मनता कोरइन, राजबली किसान, आदि लोगों ने शिव स्थान की घेराबंदी का विरोध किया । बताते चलें कि लगभग 1000000 रुपए की लागत से सरना स्थल की घेराबंदी पारीत थी जो सरना स्थल का घेराबंदी नौकर शिव स्थान का घेराबंदी कराया जा रहा है । मामले में जिला कल्याण पदाधिकारी नीलेश मुर्मू से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि अगर ऐसा हुआ है तो मामले की जांच कर संबंधित लोगों पर कार्रवाई की जाएगी । उधर योजना में लगभग ढाई लाख रुपए की निकासी भी कर ली गई है तथा 20 से 25% घेराबंदी का कार्य भी हो गया है । उधर आदिम जनजाति के लोगों को कहना है कि घेराबंदी के लिए किसी तरह का कोई ग्राम सभा का आयोजन नहीं किया गया था । इसे गोपनीय तरीके से काम कराया गया था । मौके पर काफी संख्या में आदिम जनजाति कोरवा समुदाय के लोग मौजूद थे ।

मुखिया ने किया आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण, मिला बंद

आंगनबाड़ी केंद्र में समय से पहले सेविका ने कर दी छुट्टी

नवीन मेल संवाददाता

केतार। शनिवार को केतार प्रखंड क्षेत्र के मुकुंदपुर पंचायत अंतर्गत विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण मुखिया मुंगा साह के द्वारा किया गया। निरीक्षण के क्रम में चार आंगनबाड़ी केंद्र का जांच किया गया, जिसमें चारों आंगनबाड़ी केंद्र बंद मिला। इस क्रम में मुखिया ने सबसे पहले मायर टोला के आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया। जहां सेविका द्वारा 11:00 बजे ही आंगनबाड़ी केंद्र में छुट्टी कर दी गई थी। आंगनबाड़ी सेविका तेतरी देवी ने बताया कि सहायिका सरोज देवी नहीं आई थी, जिसके कारण बच्चों का भोजन नहीं बना है उन्होंने बताया कि आज नामांकित 30 में से 7 बच्चे आए थे जो घर चले गये।वहीं बक्शीपुर आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण के क्रम में आंगनबाड़ी केंद्र बंद था। ग्रामीण ने बताया कि महीने में दो-चार दिन

ही टीकाकरण के दिन आंगनबाड़ी केंद्र खुलता है। जिसके बाद मुखिया मुंगा साह ने दूरभाष पर सेविका ऊषा देवी से बात किया। आंगनबाड़ी सेविका ऊषा देवी ने बताया कि वह बीएलओ कार्य मे है और आज सहायिका नहीं आई है। जिसके कारण आंगनबाड़ी केंद्र बंद है।इसके बाद मुखिया मुंगा साह के द्वारा ताली गांव आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया गया वहां भी आंगनबाड़ी केंद्र बंद मिला। ग्रामीणों ने बताया की सेविका आरती देवी आती है आज बीएलओ का काम से बाहर गई हैं। लेकिन सहायिका के नहीं आने के कारण बच्चों के लिए पौष्टिक भोजन नहीं बनता है जिसके कारण दो चार बच्चे ही केंद्र पर प्रतिदिन पहुंचते हैं। यही हाल परसोडीह आंगनबाड़ी केंद्र का भी था ।यहां आंगनबाड़ी केंद्र बंद था सेविका गीता देवी ने बताया कि आज स्कूल में छुट्टी है इसी के कारण बच्चे भी केंद्र नहीं आये थे। जिस कारण आंगनबाड़ी केंद्र बंद है। मुखिया मुंगा साह ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि सबसे बुरा हाल आंगनबाड़ी केंद्रों का है इनमें से ज्यादातर आंगनबाड़ी केंद्र सेविका के घर में ही संचालित होता हैं। जिसके कारण बच्चे सरकार से मिलने वाली सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। इस संबंध पर्यवेक्षिका सुचित्रा कुमारी ने बताया कि आंगनबाड़ी केंद्र बंद रखना गलत है, आंगनबाड़ी सेविका और सहायिका पर कार्रवाई की जाएगी।जबकि बीडीओ मुकेश मछुआ ने बताया कि आंगनबाड़ी केंद्र बंद रखना गलत है सेविका से स्पष्टीकरण के बाद कार्रवाई की जायेगी।

6 महीने से जलमीनार बंद, लोगों के सामने गहराया पेयजल संकट

नवीन मेल संवाददाता

चिनियां। प्रखंड मुख्यालय के खुरी के कोरवा टोली में मुखिया निधि से लगाई हुई जल मीनार को बंद हुए आज 6 महीने से भी ऊपर का समय होने को चला है जिसके कारण उक्त टोले में करीब 16 घरों के लोगों के सामने पेयजल की समस्या को लेकर एक बड़ी विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। इस टोले के लोग आज 6 महीनों से कुए का गंदा पानी पीने को लाचार है । जबकि टोले के लोगों को कहना है कि हम लोगों ने बंद जल मीनार की जानकारी स्थानीय जनप्रतिनिधि को दिए थे फिर भी अभी तक जल मीनार नहीं बना है जिसके कारण हम लोग पानी को लेकर काफी परेशान हैं । इसी बाबत पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि उदय भुइयां से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि बंद जल मीनार की जानकारी हमें नहीं थी आज ही जानकारी मिली है तथा आज ही मिस्त्री को भेचकर चापाकल में लगे बोर को खुलवा कर देखवा रहा हूं । चार दिनों के अंदर बंद चापाकल को चालू करा दिया जाएगा । जबकि इसी बाबत चिनिया प्रखंड विकास पदाधिकारी कालिदास मुंडा से पूछे जाने पर उन्होंने कहां की जल मीनार को बनवाने के लिए पंचायत निधि के फंड में पैसा जमा रहता है आखिर किस कारण से अभी तक बंद जल मीनार को नहीं बनाया गया है इसकी जांच करवाते हैं, बंजर मीनार को जल्द ही बनवा दिया जाएगा। मौके पर वृक्ष कोरवा, हरि कोरवा, शेलट कोरवा,वीरेंद्र कोरवा,रामनाथ कोरवा, राजनाथ कोरवा, दशरथ कोरवा, ब्रह्मदेव कोरवा,बुद्धू कोरवा, जसवंती कोराईन,ममता कोरईन,चिंता देवी, सहित काफी संख्या में महिला पुरुष मौके पर उपस्थित थे ।

न्यूज गैलरी

बारेसांढ़ में इको विकास समिति का पुनर्गठन, रामदास यादव बने अध्यक्ष

लातेहार(गारु)। ग्राम प्रधान कन्हाई सिंह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद के लिए रामदास यादव, उपाध्यक्ष पद के लिए रंजीत कुमार व सह सचिव पद के लिए मोजाहिर अंसारी का चयन किया गया।इस बैठक में बारेसांढ़ वनपाल परमजीत तिवारी के द्वारा वनों के संरक्षण तथा संवर्धन एवं वनों को अग्नि से सुरक्षा को लेकर एक विस्तृत चर्चा की गयी। बैठक में सभी ग्रामीणों ने एक स्वर में वन एवं वन्यजीव को बचाने का संकल्प लिया।
बैठक में गांव के समेकित विकास हेतु भी विभिन्न प्रस्ताव पारित किये गए। मौके पर सचिव परमजीत कुमार तिवारी, ग्रामीण मनोज यादव, कन्हाई सिंह, सचिन्द्र सिंह, कपिलदेव रजवार, कमला देवी, प्रदीप प्रसाद, राहुल सिंह, रंजन यादव, मोजाहिर अंसारी, अरुण यादव, कलेश्वर राम, कमेश्वर मांझी, कमलेश प्रसाद समेत अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

सीरम टोला झरनागढ़ में नया ट्रांसफॉर्मर लगने से ग्रामीणों में खुशी

बालूमाथ। प्रखंड अंतर्गत भगिया पंचायत के सीरम टोला एवं झरनागढ़ में ट्रांसफर लगाए जाने पर ग्रामीणों ने खुशी जहिर की। बता दें कि झरना गढ़ में दर्जनों घरें हैं जिसकी आबादी हजारों है जो पिछले कई माह से ट्रांसफार्मर खराब हो जाने के चलते लोग अंधेरे में रहने को विवश थे।इसकी जानकारी मिलते ही बालूमाथ पूर्व जिप सदस्य प्रियंका कुमारी और भाजपा मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण कुशवाहा ने संयुक्त रूप से समस्या का समाधान के लिए पहल किया और आज सिरम टोला के झरना गढ़ में बिजली विभाग द्वारा नए ट्रांसफार्मर दिया गया। जिसे आज जनप्रतिनिधि ने विधिवत शुभारंभ किया गया। अब गांव में बिजली जलता देख ग्रामीणों में खुशी का माहौल है। और ग्रामीणों ने भाजपा मंडल अध्यक्ष लक्ष्मण कुशवाहा एवं जिप सदस्य प्रियंका कुमारी को धन्यवाद कहा है। मौके पर उपरोक्त लोगों के अलावा भाजपा एससी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष अमित कुमार, एसटी मोर्चा मंडल अध्यक्ष सुरेंद्र मुंडा,बिजली मिस्त्री उमेश यादव, अशोक यादव, पंचायत समिति जतरी देवी, सुरेंद्र यादव ,जनकु उरांव, रामचंद्र मुंडा, महावीर मुंडा, ललिता देवी ,रज्जो देवी, धीरेंद्र मुंडा समेत दर्जनों ग्रामीण उपस्थित रहे।

गिद्धौर में किसानों की समस्या से अवगत हुए बीडीओ

गिद्धौर(चतरा)। शनिवार को बीडीओ संजीत कुमार सिंह गिद्धौर प्रखंड में चल रहे मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य का जायजा लेने के क्रम में किसानों की समस्या से भी अवगत हुवे। भ्रमण के क्रम में बीडीओ की नजर खेत में धान काट रहे किसानों पर पड़ी, तो उन्होंने किसानों के पास पहुंच कृषि समस्या, वर्षा, सूखाग्रस्त सहित कई जानकारी किसानों से प्राप्त की। किसानों ने बताया कि कम बारिस के वजह से धान की बाली नही भरपाई है। इस दौरान बीडीओ ने किसानों संग धान कटे। वहीं बीडीओ ने बांय गांव के समीप सड़क किनारे ग्रामीणों बनाए जा रहे पत्तल से संबंधित जानकारी ली। बीडीओ ने बताया कि ग्रामीण इलाके में पत्तल आजीविका का मुख्य साधन बन सकता है।उन्होंने कहा की जेएसलपीएस से जोड़कर पत्तल बना रहे ग्रामीणों को अच्छा मुनाफा दिलाने का प्रयास करेंगे। मौके पर जीपीएस मिथलेश कुमार सिंह, पंचायत सेवक महेश मिस्त्री उपस्थित थे।

अपहरणकर्ताओं के चंगुल से सकुशल मुक्त हुआ बालक

टंडवा (चतरा)। टंडवा थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़गांव निवासी शिवपूजन नायक के 12 वर्षीय पुत्र चन्द्रमा नायक को महज 12 घंटे के अंदर अपहृतों के चंगुल से पुलिस द्वारा मुक्त कराने से परिजनों ने राहत की सांस ली है। वहीं उक्त मामले में कांड संख्या 279/22 दर्ज करते हुए दो संदिग्धों को गिरफ्त में लेकर पुलिस पूछताछ कर रही है। मामले पर त्वरित संज्ञान लेते हुए थाना प्रभारी विजय कुमार सिंह ने एसआई भोलानाथ दास, अभिनव आनंद आदि के साथ तकनीकी इनपुट पर अपहरणकताओं के परिजनों पर कड़ा दबाव डाला गया। जिनकी निशानदेही पाकर सभी अधिकारी चंदवा निकले जहां बीच रास्ते में हीं बालक को छोड़कर सभी अपराधी फरार हो गए। इस दौरान निंदरा गांव के पास एक पुलिया में पुलिस गाड़ी दुर्घटना का शिकार हो गई, गनीमत रहा सभी को मामूली चोटें लगी और सभी बाल-बाल बच गए। हालांकि, पुलिस अधिकारियों की मानें तो घटना का मुख्य सरगना फरार है जिसे गिरफ्तार कर जल्द हीं सलाखों के पीछे भेजा जाएगा।

मतदान केंद्रों पर विशेष कैंप का आयोजन, बोले परियोजना पदाधिकारी

नये वोटरों को नाम मतदाता सूची में दर्ज करें

नवीन मेल संवाददाता

लातेहार। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 1 जनवरी 2023 को अर्हता तिथि मानते हुए मतदाता सूची का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत आज जिले के सभी मतदान केन्द्रों पर विशेष कैंप का आयोजन किया गया। इसी क्रम में आज परियोजना निदेशक श्री विदेश्वरी ततमा द्वारा बूथ नंबर 171,172,173,176,177,180,181, 182,183,190 का निरीक्षण किया गया और नए प्रपत्र-6, 7 एवं 8 में मतदाताओं का नाम जोड़ने, विलोपन एवं संशोधन करने का निर्देश दिया गया। इस दौरान उन्होंने वहां किए जा रहे मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्य के संबंध में विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के दौरान भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार गंभीरता से कार्य करने के निर्देश दिए।

इस दौरान उन्होंने मतदाता सूची में नाम जोड़ने एवं विलोपन तथा संशोधन हेतु प्राप्त आवेदनों का परीक्षण किया। उन्होंने मतदान केंद्र पर वाचन किये गये मतदाता सूची का परीक्षण कर मृत तथा अन्यत्र स्थानांतरित मतदाताओं के नाम विलोपित किये जाने तथा विलोपन में सावधानी बरतने के निर्देश दिये। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा प्रारूप-6, प्रारूप-6(ए) एवं प्रारूप-8 के नवीन संशोधनो के संबंध में बी.एल.ओ., अविहित अधिकारी एवं ग्राम वासियों से चर्चा की। उन्होंने वर्तमान में जिनकी उम्र-17 वर्ष है तथा आगामी वर्ष 2023 के 01 जनवरी को जिनकी आयु 18 वर्ष पूर्ण होगी, ऐसे नवीन मतदाताओं का नाम पात्रता अनुसार अधिक से अधिक संख्या में जोड़ने के निर्देश दिये।भारत निर्वाचन आयोग द्वारा चलाये जा रहे विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण के तहत जिला अंतर्गत सभी मतदान केंद्रों पर आयोजित विशेष कैम्प का पदाधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया गया। मौके पर बीएलओ , बीपीआरओ सहित अन्य उपस्थित थे।

कांग्रेसियों ने इंदिरा गांधी की मनायी जयंती

बालूमाथ। प्रखंड मुख्यालय स्थित कांग्रेस कार्यालय में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का 104 वी जयंती मंडल अध्यक्ष मो. आमिर हयात के अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कांग्रेसियों ने इंदिरा गांधी के तस्वीर पर पुष्प माला पहनाकर और दीप प्रज्वलित कर श्रद्धा सुमन अर्पित की। मौके पर पूर्व प्रखंड अध्यक्ष मो. जुबेर ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा भारतीय राजनीति में महिला नेतृत्व की सूची में इंदिरा गांधी का नाम शीर्ष पर आता है। भारत को चांद पर पहुंचाने की बात हो या परमाणु शक्ति बनाने की बात हो या फिर पंजाब में उग्रवाद को उखाड़ फेंकने की बात हो या फिर पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर देने की बात इंदिरा गांधी के अटल राष्ट्रभक्ति से ही संभव हो पाया। इस दौरान उपरोक्त लोगों के अलावे विनोद भुइंया, प्रिंस, आकिब, दानिश, सलमान, समीम खान समेत दर्जनों कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रेजांगला में शहीद वीर अहीर सैनिकों के याद में मनाया गया शौर्य दिवस

नवीन मेल संवाददाता

बालूमाथ। प्रखंड मुख्यालय स्थित बुनियादी विद्यालय परिसर में रेजांगला के शहीद वीर सैनिकों के याद में यादव महासभा यादव के बैनर तले प्रखंड अध्यक्ष श्यामसुंदर यादव की अध्यक्षता में शौर्य दिवस मनाया गया।कार्यक्रम की शुरूआत शहीद वीर सैनिकों की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर नमन किया गया। मौके पर यादुवंशी वक्ताओं ने अपने मंत्रियों को रखते हुए कहा रेजांगला युद्ध भारतीय 113 वीर अहीर सैनिकों ने चीन के लगभग 1300 सैनिकों को मार गिराते हुए शहीद हो गए। इस तरह कई राष्ट्रीय युद्ध में शहीद सैनिकों ने देश के लिए शहीद हो गए। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष श्याम सुंदर यादव ने कहा कि अहीर सैनिक भारतीय इतिहास में अपने प्राणों की आहुति देकर देश का रक्षा किया पर अब तक सेना में अहीर रेजिमेंट नहीं बन सकी । अगर आप सभी यदुवंशियों का सपोर्ट रहा तो आने वाले दिन में अहीर रेजिमेंट होगा।
मौके पर उपरोक्त लोगों के अलावे यादव महासभा प्रखंड उपाध्यक्ष दीपक यादव, संरक्षक चंद्र मोहन यादव, मनोज यादव ,चांदील यादव, कृष्णा यादव ,जगत नारायण यादव, राम लाल यादव, मनीष यादव, भरत यादव ,राजकुमार यादव, उदय यादव ,मनोज यादव, दिलीप यादव ,उमेश यादव, रंजीत यादव ,पंकज यादव, मुकेश यादव सहित दर्जनों यादव महासभा के लोग उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

बरवाडीह। प्रखंड कांग्रेस कमेटी द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी की जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया. जयंती कार्यक्रम जयंती कार्यक्रम प्रखंड कांग्रेस कार्यालय में प्रखंड अध्यक्ष प्रिंस राज गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित की गई. कार्यक्रम में आयरन लेडी स्वर्गीय इंदिरा गांधी की तस्वीर पर उपस्थित कांग्रेस जनों ने बारी बारी से पुष्पांजलि अर्पित किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड अध्यक्ष प्रिंस राज गुप्ता ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी एक आयरन लेडी थी उन्होंने देश को एक नया आयाम तक पहुचाया था. भारत देश इनकी शहादत को कभी भूल नही पायेगा। श्री गुप्ता ने कहा की पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा देश के लिए किए गए स्वर्णिम विकाश कोदेश हमेशा ऋणी रहेगा। कार्यक्रम को उपस्थित अंग्रेजों ने संबोधित करते हुए पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जीवनी व उनकी शहादत पर प्रकाश डाला।
कार्यक्रम में वरीय कांग्रेसी नेता सुरेश मिश्रा, यूथ कोंग्रेस स्टेट कोडिनेटर हिमांशु गुप्ता, जिला सचिव एससी मोर्चा नेता पंकज पासवान, प्रखंड महासचिव आलोक कुमार सिंह, संजीव सिंह, संजीव कुमार बड़ा बाबू, इस्माइल अंसारी, सुजीत गुप्ता, मंगरा पंचायत के मुखिया बिपिन बिहारी सिंह , संतोष कुमार सिंह चेरो, दीपक राज ,आलोक कुमार रवि, मुकेश सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

अनदेखी की वजह से शास्त्री चौक पर लगा सोलर लाइटें बंद, अंधेरे में आवागमन कर रहे ग्रामीण

नवीन मेल संवाददाता

महुआडांड़। गांव-गांव में लगाई गई सोलर लाइट मात्र शो-पीस साबित हो रही है। विभाग द्वारा इन लाइटों को लगाने के बाद एक बार भी पलट कर नहीं देखा गया है, जिसके चलते कबाड़ साबित हो रहा है। ग्रामीण अंचलों के गलियों व चौक चौराहों में सांसद मद से लाखों रुपये खर्च कर लगाई गई सोलर लाइट बंद पड़ी हुई है। वहीं, आसपास के गांवों में लगी अधिकतर सोलर लाइटें बंद होने से इन्हें लगाने का उद्देश्य पूरा नहीं हो पा रहा। लोगों को अंधेरे में ही आवाजाही करने को विवश होना पड़ रहा है। जहां स्ट्रीट लाइटों की सुविधा हो पर सुचारू संचालन नहीं हो, तो इसे सरकारी पैसों का दुरुपयोग ही कहा जाए। शास्त्री चौक में लाखों रुपये की लागत से सात व आठ महीने पहले चौक में एक सोलर लाइटें लगाई गई थी। जो एक माह भी ठीक से नहीं जली और वह बंद पड़ी हुई है। गांवों को सौर ऊर्जा से रोशन करने के लिए लगाए गई स्ट्रीट लाइटें बंद हैं। प्रखंड के आधा दर्जन गांवों में रोशनी फैलाने के लिए सांसद मद से लगी लाइटों में पांच वर्ष तक मरम्मत की गारंटी भी है। गांवों को सौर ऊर्जा स्ट्रीट लाइटों से जगमगाने का सपना साकार होते नहीं दिख रहा है।
गांवों में लगवाई गई स्ट्रीट लाइटें मात्र शो-पीस बन कर रह गई है। कुछ दिनों तक जलने के बाद गांवों में लगाई गई स्ट्रीट लाइटें काम नहीं कर रही है। वहीं ग्रामीण सहित मोहल्ले वासियों ने बताया कि उन्हें ये सोलर स्ट्रीट लाइटें सांसद मद से लगवाई गई हैं। सोलर लाइट बंद होने से इन चौक चौराहों पर अंधेरा रहता है। अब आलम यह है कि सरकारी सोलर लाइट के खंभों पर भी जंग लग गया है। गांव में सोलर लाइटों के पोल व संयंत्र व्यर्थ में लगे हुए हैं। हालात यह है कि किसी में बल्ब, बैटरी खराब है तो किसी का वायर टूटा हुआ है।

यादव महासभा ने मनाया रेजांगला शौर्य दिवस

चंदवा। यादव महासभा ने प्रखंड अध्यक्ष रामचरित्र यादव की अध्यक्षता में यादव वीर शहीदों की याद में रेजांगला शौर्य दिवस योगेंद्र यादव के घर में मनाया। इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि प्रदेश संरक्षक सतेंद्र प्रसाद यादव शामिल हुए। सबों ने बारी-बारी से पुष्पांजलि अर्पित कर शहीदों को याद किया। मुख्यातिथि सतेंद्र यादव ने कहा कि यादव समाज का योगदान अतुलनीय है।हमारे समाज के कई युवाओं ने देश की रक्षा के लिए अपनी प्राणों की आहुति दी है। युवाओं को इन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। इसके साथ ही यादव महासभा चंदवा प्रखंड कमेटी के पुनर्गठन हेतु आगामी बैठक भी निर्धारित की गई है। कार्यक्रम में सुरेश यादव, मनोज यादव,गजेंद्र यादव, राम नरेश यादव,प्रदीप कुमार यादव, संजय कुमार यादव,सुरेंद्र यादव समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

एनसीओआरडी कि जिला स्तरीय समिति की हुई बैठक

नशा के दुष्प्रभाव के प्रति प्रचार-प्रसार करें: डीसी

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। शनिवार को राष्ट्र नारकोटिक्स समन्वय पोर्टल (एनसीओआरडी) कि जिला स्तरीय समिति की बैठक समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त के अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुख्य रूप से नशीले पदार्थों की तस्करी, जिले में अफीम या भांग की अवैध खेती, नशीले दवाओं के दुरूपयोग के खिलाफ जागरूकता को बढ़ावा देने, विशेष रूप से स्कूल एवं कॉलेजो में एनडीपीएस अधिनियम के अवैध प्रावधानों और नशीली दवाओं के हानिकारक प्रभावों से प्रभावित क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन, प्रभावित क्षेत्रों में वैकल्पिक विकास कार्यक्रमों को लागू करना, दवा का पता लगाने और प्रस्तुत करने के लिए उपकरणों की आवश्कताओं का आकलन, जिले में नशामुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्रों का पर्यवेक्षण समेत अन्य बिन्दुओं पर विचार विमर्श कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने जिला शिक्षा पदाधिकारी दिनेष मिश्रा को सभी संबंधित पदाधिकारी के साथ समन्वय स्थापित करते हुए जिले के सभी विद्यालयों में छात्र-छात्राओं को नशा के दुष्प्रभाव के प्रति प्रचार-प्रसार कर जागरूक करने का निर्देश दिया। साथ ही उन्होने कहा कि अगर नशा मुक्त चतरा का निर्माण करना है तो सभी को नशा के प्रति जागरूक होना आवश्यक है तभी नशा मुक्त चतरा का निर्माण संभव है। ग्रामीण क्षेत्रों में अफीम की खेती को लेकर पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन ने सभी एसडीपीओ, थाना प्रभारी को अपने-अपने क्षेत्रों में विशेष जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को पोस्ता-अफीम से होनेवाले दुष्प्रभाव के बारें में जागरूक करने एवं अवैध खेती में संल्पितों के उपर कड़ी कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उक्त बैठक में डीएफओ उत्तरी आर थांगा पाण्डियन, डीएफओ दक्षिणी एसपी सुमन, एसी पवन कुमार मंडल, एसडीओ मुमताज अंसारी, एसडीपीओ अविनाश कुमार, एसडीपीओ सिमरिया अशोक प्रियदर्शी, टंडवा शम्भु सिंह, जिला परिवहन पदाधिकारी संतोष सिंह समेत संबंधित पदाधिकारी एवं सभी अंचल अधिकारी आदि उपस्थित थे।

मयूरहंड में अवैध बालू उत्खनन के प्रति प्रशासन सख्त, चार ट्रैक्टर जब्त

नवीन मेल संवाददाता

मयूरहंड(चतरा)। जिले के मयूरहंड थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़ाकर नदी किनारे विभिन्न घाटों से अवैध बालू उत्खनन के प्रति प्रशासन सख्ती दिखाते हुए अंचल अधिकारी साकेत कुमार सिन्हा एवं थाना प्रभारी रामवृक्ष राम ने संयुक्त रुप से शनिवार को अभियान चलाकर अवैध बालू लदे ट्रेक्टर को जप्त किया। जिसमें दो ट्रेक्टर पेटादेरी एवं दो ट्रेक्टर सोकी घाट से अवैध बालू उत्खनन करते जप्त किया गया। इसके अलावा महुगांई एवं गौरक्षणी घाट में भी छापामारी अभियान चलाया गया। पर उक्त घाटों से एक भी वाहन प्रशासन के पकड में नहीं आया।जानकारी अनुसार प्रखंड में बालू घाटों का बंदोबस्ती नहीं होने से सरकार को राजस्व का नुकसान होने के साथ प्रखंड क्षेत्र में लोगों को ऊंचे दामो में बालू की खरीददारी करनी पड रही है। प्रशासन को नजर अंदाज कर प्रत्येक दिन बालू माफियाओं द्वारा अवैध उत्खनन कर सैकड़ों ट्रेक्टर बालू दूसरे जिला में भेजा जा रहा है। इसे देख अंचल अधिकारी ने टीम गठित कर छापामारी कर कार्रवाई शुरू की।

जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी ने बूथों का किया निरीक्षण

गिद्धौर(चतरा)। मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य का जायजा शनिवार को जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी पूर्णिमा कुमारी ने गिद्धौर प्रखंड के बूथों में पहुंच कर लिया। इस दौरान प्रखंड के दुवारी, तिलैया, बांय, बारियातु, महुआटांड सहित अन्य बूथों का निरीक्षण कर जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी ने मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्य का जायजा लिया। उन्होंने बीएलओ को फार्म 6, 7 व 8 से सम्बंधित नियम संगत के तहत गरुड़एप के माध्यम से अपलोड करने का निर्देश दिया। उन्होमे बताया कि बूथों में 19 व 20 नवम्बर को विशेष कैंप किया गया है। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी संजीत कुमार सिंह, जीपीएस मिथलेश कुमार सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

मतदाता पुनरीक्षण केंद्रों का अधिकारियों ने किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता

टंडवा (चतरा)। जिले के टंडवा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न मतदाता पुनरीक्षण केंद्रों का निरीक्षण एसडीओ सह निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सिमरिया सुधीर दस एवं बीडीओ सह सहायक निर्वाचक निबंधक पदाधिकारी सिमरिया तथा बीडीओ सह पंचायती राज पदाधिकारी टंडवा रंथु महतो ने शनिवार को किया। इस क्रम में एसएस हाई स्कूल, कन्या मध्य विद्यालय एवं आदर्श मध्य विद्यालय केंद्र का निरीक्षण कर वस्तु स्थिति से अवगत हुए। बताया गया कि विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2023 के लिए प्रखंड क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों में दो दिवसीय विशेष कैंप 19 व 20 नवंबर को आयोजित किया गया है। जहां वैसे व्यक्ति जिनकी आयु आगामी 1 जनवरी 2023 तक 18 वर्ष पूर्ण हो रही हो, उनका मतदाता सूची में नाम की प्रविष्टि की जा रही है। साथ हीं वोटर कार्ड में किसी भी प्रकार के त्रुटि सुधार तथा आधार नंबर का भी संकलन किया जा रहा है। ऐसे में पदाधिकारियों ने आमलोगों से आह्वान करते हुए कहा कि वे अविलंब अपने-अपने बीएलओ से संपर्क करते हुए कैंप में भाग लें।

अवैध उत्खनन के रोकथाम को लेकर उपायुक्त ने की बैठक, कहा

विभाग से समन्वय स्थापित कर चलाएं जांच अभियान

नवीन मेल संवाददाता

चतरा। शनिवार को समाहणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त अबु इमरान की अध्यक्षता में जिले में अवैध उत्खनन रोकथाम हेतु समीक्षात्मक बैठक की गई। बैठक में मुख्य रूप से पूर्व की बैठक में दिए गये निदेर्शों के अनुपालन प्रतिवेदन की क्रमवार समीक्षा कि गई। समीक्षा के क्रम में पूर्व में सभी काटा घरों में सीसीटीवी लगाने हेतु प्रबंधक कोल परियोजना को निर्देशित किया गया था, जिसे लेकर संबंधित द्वारा बताया गया सीसीटीवी लगाने का कार्य किया जा रहा है जल्द पूर्ण करा लिया जायेगा। वहीं अवैध उत्खनन पर रोकथाम हेतु जांच कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया था, जिसे लेकर जिला खनन पदाधिकारी गोपाल दास द्वारा बताया गया कि जिले के विभिन्न क्षेत्रों में औचक निरीक्षण एवं अभियान मोड़ में अवैध उत्खनन के विरूद्ध जांच कर संलिप्त व्यक्ति एवं वाहन पर कार्रवाई करने का कार्य किया जा रहा है। उपायुक्त ने मोटरसाइकिल से कोयला की चोरी को लेकर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। बढ़ते सड़क दुर्घटना को देखते हुए सभी परियोजनाओं से उपस्थित प्रबंधकों को निर्देशित किया गया कि अधीनस्थ सभी कोल वाहनों में स्पीड लिमिट डिवाइस लगवाना सुनिश्चित करें। साथ ही सभी वाहन चालक को सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन हेतु प्रशिक्षण देने को कहा गया।

सड़क किनारे साईनेज लगवाना सुनिश्चित करें

उपायुक्त ने कहा कि हो रहे सड़क दुर्घटना वाले स्थलों को चिन्हित कर सड़क किनारे साईनेज लगवाना सुनिश्चित करें। अंत में उपायुक्त ने खनन विभाग, वन विभाग, प्रदुषण विभाग को एक साथ समन्वय स्थापित कर लगातार जिले में जांच अभियान चलाने व अवैध कार्य में लगे लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करने की बात कही। बैठक में पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन, डीएफओ उत्तरी आर. थांगा पाण्डियन, डीएफओ दक्षिणी एसपी सुमन, एसी पवन कुमार मंडल, सदर एसडीओ मुमताज अंसारी, सदर एसडीपीओ अविनाश कुमार, एसडीपीओ सिमरिया अशोक प्रियदर्शी, एसडीपीओ सम्भु सिंह, डीएमओ, जिला भू अर्जन पदाधिकारी गौरांग महतो सभी अंचलाधिकारी, परियोजनाओं के प्रबंधक समेत संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

चंदवा में मनी देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती

नवीन मेल संवाददाता

चंदवा। पूर्व प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी की जयंती भारती काम्प्लेक्स में प्रखंड कांग्रेस कमिटि के द्वारा मनाई गई, इसके पूर्व दिप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित की उन्हें नमन किया। इस अवसर पर प्रखंड अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि असगर खान ने कहा कि भारत को शक्तिशाली देश बनाने में देश की पहली महिला प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी की अहम भूमिका रही है।
अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने कई ऐतिहासिक निर्णय पूरी निडरता से लिए, जिन्होंने न केवल देश में क्रांति लाई बल्कि विश्व में भारत के प्रति राय को भी बदल दिया। उन्होंने आगे कहा की इंदिरा गांधी ने देश को विभिन्न क्षेत्रों में सफलता की महान ऊंचाइयों तक पहुंचाया और उनके सक्षम नेतृत्व के कारण भारत दुनिया में एक मजबूत और शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष सह राज्यसभा सांसद प्रतिनिधि असगर खान, वरिष्ठ कांग्रेसी रामयश पाठक, सेवादल जिला अध्यक्ष बाबर खान, निर्मल भारती, मुकेश कुमार सिंह, श्रीराम शर्मा, सरवर अंसारी, अरुण भारती, दामोदर उपाध्याय, कैलाश बैठा, बालजी उरांव, सुनील ठाकुर, राजू भारती, अभिषेक भारती, अशोक भारती, मोहम्मद रसीद, छठन राम,सागर प्रजापति समेत कई कांग्रेसी उपस्थित थे।

न्यूज गैलरी

बानो और ठेठईटांगर में नेहरू युवा केंद्र ने मनाया कौमी एकता दिवस

बानो। नेहरू युवा केंद्र सिमडेगा द्वारा बानो प्रखंड के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय बानो और ठेठईटांगर प्रखंड में देश की प्रथम महिला प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी की जयंती के अवसर पर कौमी एकता दिवस मनाया गया। बानो में कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की वार्डेन जगरानी सुरीन द्वारा इंदिरा गांधी की तस्वीर पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। बानो में सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता विषय पर निबंध प्रतियोगिता और ठेठईटांगर में पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बानो में कार्यक्रम का आयोजन बानो प्रखंड की राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक चंद्रकांता कुमारी, वहीं ठेठईटांगर में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक रोशन सुरीन और सरिता लुगुन के द्वारा किया गया। वार्डेन ने युवाओं को संबोधित करते हुए इंदिरा गांधी की जीवन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक शकुंतला कुमारी, आभा होरो, प्रदीप कुमार सिंह, थिलुवन्ती कुमारी, महिमा लुगुन और रीना कुमारी उपस्थित रहे।

पुत्र के लापता होने पर मां ने कराई सनहा दर्ज, कार्रवाई में जुटी पुलिस

सेन्हा-लोहरदगा। सेन्हा थाना क्षेत्र के भड़गांव निवासी स्व भीम लोहरा का पुत्र राजेश लोहरा 9 नवम्बर को लोहरदगा जाने की बात बोल कर सुबह करीब 9:30 बजे घर से निकल जो घर नही लौट तो पुत्र का घर नही लौटने पर मां चिंतित हो अपने स्तर से छानबीन करने लगी तथा परिजनों के सहयोग से सगे संबन्धी में पुत्र के बारे में पता लगाया। लेकिन कहीं पता नही चलने पर मां देवन्ती देवी ने 18 नवम्बर को सेन्हा थाना में आवेदन देते हुए सनहा दर्ज कराते हुए प्रशासन से मदद की गुहार लगाई है। बताया जाता है कि लापता युवक का उम्र लगभग 23 वर्ष लम्बाई 5 फिट रंग सांवला पहनावा सफेद शर्ट कला पैंट पैर में काला जूता तथा भाषा नागपुरी एवं हिंदी बोलता है। वहीं थाना प्रभारी ऋषिकांत ने बताया कि आवेदन के आलोक पर सेन्हा थाना में एक युवक के लापता होने की सनहा दर्ज कर पुलिस कारवाई में जुट गई है। साथ ही उन्होंने अमा लोगो से अपील करते हुए कहा कि किसी सज्जन व्यक्ति को युवक के बारे में कोई सुराग मिलता हो या आस पास दिखाई देने पर स्थानीय थाना को सूचना कर प्रशासन का सहयोग करने की बात कही इसके अलावे प्रशासन युवक के छानबीन में जुट गई है।

अवगा में मोटरसाइकिल दुर्घटना से युवक हुआ घायल

बोलबा। बोलबा प्रखंड के अवगा गांव में एक युवक मोटरसाइकिल से गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। बताया गया कि अवगा गांव के सोनू तुरी किसी काम से अवगा से बोलबा की ओर आ रहा था इसी क्रम में अवगा खरवा टोली के पास मोटरसाइकिल अनियंत्रित होकर गढ़े में जा गिरी और सोनू तुरी गंभीर रूप से घायल हो गया ।उसे इलाज के लिए बोलबा अस्पताल लाया गया किन्तु गंभीर रूप घायल होने के कारण प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए सिमडेगा सदर अस्पताल भेज दिया गया। इधर सदर अस्पताल में घायल सोनू का इलाज चल रहा है।

सिम्हातु पंचायत में प्रारंभ हुआ कांग्रेस भारत जोड़ो यात्रा

बानो। कांग्रेस पार्टी भारत जोड़ो यात्रा सिम्हातु पंचायत के जितुटोली रुगड़ीटोली से आरम्भ हुई एवं जामटोली-गटीबांदू सिमाना में सभा मे बदल गई। प्रखंड अध्यक्ष अजीत कन्डुलना की अगुवाई में भारत जोड़ो यात्रा के कार्यक्रम के तहत पदयात्रा का आयोजन किया गया। मौके पर उन्होंने कार्यकर्तओं को जानकारी देते हुए बताया कि इस समय राहुल गांधी देश के विभिन्न भागों का दौरा कर रहे हैं। भारत जोड़ो यात्रा का मकसद है लोगोके बीच आपसी भाईचारा बढ़ाना, मंहगाई को कम करना, आदि विषयो को लेकर कांग्रेस पार्टी पद यात्रा कर रही हैं। कार्यकर्ता न भटके, लोगों के बहकावे में न आएं। कार्यक्रम में हेलेन होरो की भूमिका विशेष रही, मौके पर अगाथा कुल्लू, बिबियाना बागे, संजीव कैथवार,जेवियर तोपनो आदि लोगो ने भाग लिया।

तेली समाज कार्यसमिति भंगकर जल्द होगा चुनाव : कैलाश साहू

लोहरदगा। छोटानागपुरिया तेली उत्थान समाज कि बैठक जिला अध्यक्ष कैलाश साहू कि अध्यक्षता में तेली धर्मशाला में सम्पन्न हुआ। बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों के समक्ष जिला अध्यक्ष कैलाश साहू ने वर्तमान कार्यसमिति को भंग करने का घोषणा किए। अगली बैठक 11 दिसम्बर 2022 दिन रविवार को तेली धर्मशाला में समय अपराह्न 1 बजे से आहुत किया जाएगा जिसमें विचार विमर्श कर नए कार्यसमिति का चुनाव कराने हेतु कोर कमिटि गठन किया जाएगा, जिनके नेतृत्व में चुनाव सम्पन्न कराया जाएगा। अगली बैठक 11 दिसम्बर 2022 दिन रविवार को तेली धर्मशाला में समय अपराह्न 1 बजे से आहुत किया गया है। उक्त बैठक में समाज के वरिष्ठ, सभी पदाधिकारी, युवा एवं महिला मोर्चा के लोगों से अपील किया गया कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में शामिल हो।

माध्यमिक वार्षिक परीक्षा व इंटरमीडिएट परीक्षा को लेकर परीक्षा केंद्रों के निर्धारण संबंधी बैठक आयोजित

लोहरदगा। उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में माध्यमिक वार्षिक परीक्षा और इंटरमीडिएट, परीक्षा-2023 के लिए लोहरदगा जिला में परीक्षा केंद्रों के निर्धारण संबंधी बैठक आयोजित हुई। बैठक में लोहरदगा जिला में माध्यमिक परीक्षा-2023 के लिए 17 केंद्र और इंटरमीडिएट की परीक्षा के परीक्षा के लिए 11 परीक्षा केंद्र निर्धारित किये जाने संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा हुई और सहमति बनी। बैठक में पुलिस अधीक्षक आर रामकुमार, अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारी अभिषेक झा समेत अन्य सदस्य उपस्थित थे।

बिजली कटते ही अंधकारमय हो जाता है कस्तूरबा गांधी विद्यालय

वार्डन और प्रबंधन समिति की लापरवाही के कारण मोमबत्ती के सहारे पढ़ने को मजबूर हैं बच्चे

नवीन मेल संवाददाता

जलडेगा। प्रखंड के कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की वार्डन और विद्यालय प्रबंधन समिति की लापरवाही के कारण आवासीय विद्यालय में आज भी वैकल्पिक बिजली की व्यवस्था नहीं हो पाई। जिम्मेदारों की लापरवाही का नतीजा आज स्कूल की छात्राओं को झेलना पड़ रहा है। महीनो पहले अभिभावकों की शिकायत पर स्कूल में बिजली की समस्या को अखबार में प्रकाशित कर जिम्मेदारों की नजरें इनायत की गई थी। लेकिन सब धरा का धरा रह गया। आज तक स्कूल

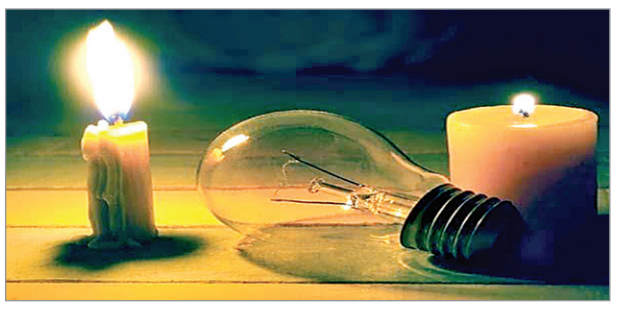

में बिजली की कोई वैकल्पिक व्यवस्था नही की गई। अभिभावक बैठक के दौरान छात्रवास में रहने वाली कुछ लड़कियों ने अपने माता पिता को यह जानकारी दी थी की बिजली कटने पर यहां पूरा अंधेरा में रहना पड़ता है, रात के समय अंधेरे में अकेले बाथरूम जाना में डर का सामना करना पड़ता है। यही नहीं बिजली कटने से बच्चे पढ़ भी नही पाते हैं। अभिभावकों के द्वारा समस्या को प्रबंधन समिति की बैठक में भी रखा गया लेकिन समिति ने इस पर न ही कोई रुचि दिखाई न ही वार्डन ने इसकी जिम्मेदारी ली। जिसके बाद माता पिता बाजार से टॉर्च और स्टडी लैंप खरीदकर अपने बच्चों को दिया है।

विद्यालय में लगे सीसीटीवी बेकार, अंधेरे का फायदा उठाकर कोई भी घुस सकता है स्कूल

रात में बिजली कटने के बाद विद्यालय में लगे सीसीटीवी सब बेकार हो जाते हैं, चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा जा जाता है, यहां बिजली जाने पर कोई भी स्कूल की चारदीवारी फांद कर आसानी से अंदर घुस सकता है। शिक्षिकाओं के कमरों में लाइट की रोशनी तो दिखाई पड़ती है लेकिन बच्चों के कमरे अंधेरा रहता है।

बिजली की समस्या को लेकर वार्डन ने अभी तक किसी भी अधिकारी को नही दिया लिखित आवेदन

ये बात सच है की अगर अपना काम बन रहा है तो बाकी और लोगों की सोचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। ठीक यही हाल कस्तूरबा की वार्डन सीमा लकड़ा का है, इसे पहले जब वार्डन से खबर लिखने से पहले बात की गई थी तो उन्हों कहा था की जल्द ही इसपर वरीय अधिकारियों को चिट्ठी लिखकर बिजली की वैकल्पिक व्यवस्था करने को कहेंगे, लेकिन आज फिर जब हमने वार्डन सीमा लकड़ा से बात की तो उन्होंने कहा की अभी तक उन्हीं किसी भी अधिकारी को बिजली की समस्या को लेकर लिखित आवेदन नही दिया है। इससे यह समझा जा सकता है की स्कूल में लाइट रहे या ना रहे इससे विद्यालय की वार्डन और प्रबंधन समिति को कोई मतलब नहीं।

इमरजेंसी केयर संस्था ने लगाया निःशुल्क कैंसर जांच शिविर, 200 से ज्यादा लोगों ने उठाया लाभ

कैंसर स्क्रीनिंग वैन की व्यवस्था समाज के लिए एक बेहतर कदम : सुदर्शन भगत

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। शहरी क्षेत्र के अग्रसेन भवन में इमरजेंसी केयर संस्था के तत्वावधान में निःशुल्क कैंसर जांच शिविर लगाया गया। शिविर का उद्घाटन लोकसभा सांसद सुदर्शन भगत और इमरजेंसी केयर के सदस्यों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। जय श्री राम समिति के अध्यक्ष राजीव रंजन ने सांसद को गीता भेंट कर उनका स्वागत किया। जांच शिविर में जिले के विभिन्न गांव से आए 200 लोगों ने अपना निबंधन कराया। मौके पर सांसद सुदर्शन भगत ने कहा कि इमरजेंसी केयर संस्था जिले में मेडिकल और ब्लड डोनेशन कैंप को लेकर लगातार कार्य कर रही है। कैंसर जैसे असाध्य रोग की जांच के लिए कैंसर स्क्रीनिंग वैन की व्यवस्था समाज के लिए एक बेहतर कदम है। उन्होंने कहा कि इमरजेंसी केयर संस्था के हर सामाजिक

कार्य पर मैं उनके साथ हूं। मेरी जहाँ तक जरूरी होगी मैं हमेशा खड़ा हूं। संस्था के उपाध्यक्ष जय प्रकाश शर्मा ने कहा की अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा यह कार्यक्रम जब से चालू किया गया है, तभी से वह प्रयासरत थे कि लोहरदगा में भी इसका लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्यवश उनकी माता का स्वर्गवास कैंसर के कारण ही हुआ था। इसलिए उन्हें पता है की इस बीमारी के फैलने से पहले ही सही समय पर जांच हो जाए तो लोगों की जान बच सकती है। मौके पर डॉ. कुमुद अग्रवाल, डॉ. राजेश कुमार, संस्था के अध्यक्ष विक्रम चौहान, संस्था के उपाध्यक्ष, जयप्रकाश शर्मा, सचिव देशराज गोयल, उपाध्यक्ष अमित वर्मा, उपाध्यक्ष पारस साहू, एचआर हेड और कार्यक्रम समन्वयक सजल कुमार, उपाध्यक्ष जितेंद्र सिंह, सोमनाथ दत्ता, कौशिक दास, गोकुल कुमार, सुधांशु कुमार, निखिल कुमार, संदीप पोद्दार। गोकुल मित्तल, नीलेश गुप्ता, सनराइज हॉस्पिटल के विकास अग्रवाल, एसआरएल डायग्नोसिस के सोमनाथ दत्ता, पशुपतिनाथ पारस, सूरज चौरसिया, अभिषेक पाठक, राजीव रंजन, दीपक सर्राफ, पंकज महतो, मनीष राजगढ़िया, कौशल मित्तल, आशीष गुप्ता सहित अन्य मौजूद थे।

एनएच सड़क निर्माण का हाल बेहाल, दुकानदारों के साथ राहगीर भी धूल फांकने को विवश

नवीन मेल संवाददाता

सेन्हा/लोहरदगा। प्रखंड स्थित नवनिर्माण में लगी एनएच घाघरा से कुडू मार्ग इन दिनों दुकानदारों के साथ राहगीरों पर भी धूल फाकने के लिये मजबूर करते नजर आ रहे हैं। ज्ञात हो कि इन दिनों सड़क का निर्माण मुख्यालय समीप कराया जा रहा है जिसपर पानी का छिड़काव नहीं होने के कारण गाड़ी का आवागमन से अत्यधिक मात्रा में डस्ट उड़ने से राहगीर तो परेशान है ही दुकानदार भी डस्ट का श्रवण करने से वंचित नहीं हो रहे हैं। सड़क पर लगभग प्रसासन के लोग हमेशा आना जाना कर रहें हैं लेकिन इसपर नजर तो आ रहा है लेकिन मौन धारण किये हुए हैं। दुकानदार ग्रिसलाल साहू, राजेश साहू, आशुतोष महतो, आकाश कुमार, कमेश महतो, मंगल कुजूर, आंगन महतो, टिंकू इत्यादि का कहना है कि हम दुकानदार मजबूर हैं मौखिक बोल के थक गए हैं। इसपर ठेकेदार के अलावे प्रसासन को ध्यान देना चाहिये अगर यही स्थिति रही तो हमलोगों को भयावह विमारी से कोई नही रोक सकता है।

ठेकेदार का पोल खुलते नाली का निर्माण में

सेन्हा/लोहरदगा। एनएच 143 का निर्माण कर रही बीकेएस कंपनी के द्वारा सड़क एवम नाली का निर्माण में गुणवत्ता पर सवालिया निशान लग रहा है। जानकारी के अनुसार संत मार्क्स स्कूल जाने वाला सड़क पर नाली निर्माण कुछ दिनों पूर्व कराया गया था। जिसपर स्कूल का गाड़ी पार होने पर नाली का ऊपरी हिस्सा धस गया है। इससे ग्रामीणों के द्वारा तरह तरह कार्यो पर सवाल खड़ा कर रहे हैं।

राज्य में बढ़ती आपराधिक घटनाओं को लेकर भाजपा का जन आक्रोश रैली 23 को

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। भारतीय जनता पार्टी जिलाध्यक्ष मनीर उरांव की अध्यक्षता में बैठक हुई। इस दौरान आगामी 23 नवंबर 2022 को वर्तमान झारखंड सरकार के भ्रष्टाचार एवं राज्य में बढ़ती आपराधिक घटनाओं को लेकर जन आक्रोश रैली के माध्यम से लोहरदगा जिला समाहरणालय के समक्ष प्रदर्शन को लेकर चर्चा की गई। भाजपा जिलाध्यक्ष मनीर उरांव ने कहा इस पदाधिकारी की बैठक में उपस्थित सभी नेतृत्वकर्ता भारतीय जनता पार्टी के रीढ़ है। पिछले दिनों हर प्रखंड मुख्यालय में आप लोगों ने हेमंत सोरेन सरकार के खिलाफ सफलतापूर्वक जन आक्रोश रैली निकाली आगामी 23 नवंबर को लोहरदगा जिला मुख्यालय में हजारों की संख्या में एकत्रित होकर प्रदर्शन के माध्यम से हेमंत सोरेन सरकार के शासन में भ्रष्टाचार एवं राज में बढ़ती अपराधिक गतिविधियां के खिलाफ जन आक्रोश प्रदर्शन करने का आह्वान किया है। ऐसी लूटपाट करने वाली सरकार को उखाड़ फेंकने का काम जनता करेगी। ओमप्रकाश सिंह ने कहा भाजपा के कार्यकर्ता जन जन तक जन आक्रोश रैली का उद्देश्य बताएं जनता

खुद चाहती है कि अब भ्रष्ट सरकार को उखाड़ने के आज किसी भी कार्यालय में बिना भ्रष्टाचार का कोई काम होता नहीं है जिले में अपराधिक घटनाएं बढ़ती जा रही हैं भाई का वातावरण व्याप्त है। पूर्व जिलाध्यक्ष राकेश प्रसाद ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार के कार्यकाल में जिस तरह की लूट मची है वह 22 वर्षों में कभी दिखाई नहीं दी है आज हमारे जिले के बालू की लूट जिस तरीके से हुई है आज नदियों में जाने के बाद बालू खोज कर निकालना पड़ रहा है। बैठक में जिला उपाध्यक्ष हर्ष नाथ महतो, नवीन कुमार टिंकू ,सूरज मोहन साहू, राजकुमार वर्मा, समेला भगत, मीना बाखला, भारती सिन्हा, अनिल उरांव, मनीष शिखर, जितेंद्र महतो,नासिर अंसारी, अमित लोहरा, दिलीप लकड़ा, अमरेश भारती आदि उपस्थित थे।

एसडीओ की अगुवाई में आकांक्षी जिला अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन

विद्यालयों में हाइब्रिड शिक्षा से बच्चों को शिक्षित किया जायेगा

नवीन मेल संवाददाता

लोहरदगा। अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार लाल की अध्यक्षता में पुराना डीआरडीए भवन स्थित अभिलाषा कक्ष में आकांक्षी जिला अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कुबेर सॉल्यूशन एवं इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड रांची की ओर से वर्कशॉप-कम- इंटरेक्शन प्रोग्राम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अनुमंडल पदाधिकारी अरविंद कुमार लाल ने कहा प्रौद्योगिकी में निरंतर प्रगति छात्रों के सीखने, जुड़ने और हर दिन बातचीत करने के तरीके को बदल रही है। एसटीईएम के माध्यम से छात्रों द्वारा विकसित कौशल उन्हें स्कूल और उसके बाहर सफल होने की नींव प्रदान करते हैं। जिला कार्यक्रम अधिकारी अपरूपा पॉल चौधरी ने एसएमसी के क्रियान्वयन को दीर्घकालीन नीति पर लागू करने की बात कही। इन्होंने कॅरियर काउंसलिंग क्लब को कंटीन्यूअस डेवलपमेंट क्लब के साथ इंटीग्रेटेड रूप में जोड़कर विकसित करने की बात कही। अनुमण्डल शिक्षा पदाधिकारी अभिषेक झा ने स्टेट ऑफ द आर्ट स्कूल के उद्देश्य को सफल माना और बताया कि लोहरदगा जिला के ग्रामीण बच्चे बच्चियों की उचित शिक्षा, प्रशिक्षण और दिशा निर्देश प्रदान कर उनका सामाजिक और आर्थिक विकास करना है। स्टेट ऑफ द आर्ट स्कूल का परिचय कराते हुए कुबेर सॉल्यूशन की ओर से अभिषेक वैभव ने बताया कि लोहरदगा के विद्यालयों में आधुनिक शिक्षा पद्धति जैसे एसटीईएम -(साइंस टेक्नोलॉजी इंजीनियरिंग मैथमेटिक्स) / एटीएल (अटल टिंकरिंग लैब)/एबीएल (एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग)/ एआईएल (ऑर्ट इंटिग्रेडेड लर्निंग) की पढ़ाई नई शिक्षा नीति के तहत करायी जा रही है। इन विद्यालयों में बाला पेंटिंग तथा बाल वाटिका भी करवाई जाएगी। इन विद्यालयों में हाइब्रिड शिक्षा के द्वारा बच्चों को शिक्षित किया जा रहा है। कार्यक्रम के मेंटर के रूप में उपस्थित अनिल कुमार ने अभी तक किये गए कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि लोहरदगा जिला आकांक्षी जिलों में सातवें स्थान पर है और हमें इस संदर्भ में अभी काफी कुछ किया जाना बाकी है। एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम के तहत लोहरदगा जिला में स्टेट ऑफ आर्ट स्कूल प्रारंभ की गई है। इसमें जिला स्तर पर 07 सरकारी स्कूलों का चयन किया है, जिनमें-राज्यकृत उत्क्रमित प्लस टू हाइ स्कूल बिटपी भंडरा, प्लस टू हाइ स्कूल किस्को, राज्यकृत प्लस नंदलाल हाई स्कूल अरु सेन्हा, प्रोजेक्ट हाई स्कूल मुंगो पेशरार, डॉ अनुग्रह नारायण प्लस टू हाइ स्कूल कैरो, प्लस टू जीएम हाई स्कूल माराडीह कुटू, राज्यकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय कुजरा 'स्टेट-ऑफ-द-आर्ट स्कूल' ऐसे विद्यालयों को बनाया गया है जिनके अंतर्गत अत्याधुनिक तकनीकों के द्वारा पढ़ाई होगी। कॅरियर काउंसलर के रूप में विकास कुमार ने दसवीं तथा बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए विशेष रुप से काउंसलिंग की बात कही। गतिविधि आधारित शिक्षा के विशेषज्ञ माने जाने वाले मोहन प्रकाश ने गतिविधि आधारित शिक्षा का प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया। इन्होंने बताया कि गतिविधि-आधारित शिक्षा इस विचार में निहित है कि बच्चे निष्क्रिय जानकारी प्राप्त करने वालों के बजाय सक्रिय शिक्षार्थी हैं। यदि बच्चों को स्वयं खोज करने का अवसर प्रदान किया जाता है और उन्हें सीखने का एक इष्टतम वातावरण प्रदान किया जाता है, तो सीखना अधिक आनंदमय और लंबे समय तक चलने वाला हो जाता है। कार्यक्रम से संबंधित पदाधिकारियों एवं विभिन्न प्रखंडों में चयनित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों सहित, कुबेर सॉल्यूशन तथा जीत के शिक्षाविदों की समूह जीवंत कुमार अजय श्रीवास्तव, सुभजित पाल शामिल थे।

काश! अस्पताल चालू होती तो, बच जाती कई लोगों की जान

सड़क दुर्घटना में घायल युवक की रिम्स ले जाने के दौरान रास्ते में हुई मौत

शकील अहमद

कैरो / लोहरदगा। जिले के कैरो थाना क्षेत्र में शुक्रवार को एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ, हादसे में घायल व्यक्ति को कैरो पुलिस के द्वारा अपने वाहन से कुडू स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उसे रांची रिम्स रेफर कर दिया लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान विजय उरांव उर्फ लाले तिग्गा पिता स्व मंदरू उरांव के रूप में किया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दुर्घटना के बाद लगभग एक घंटे तक युवक सड़क पर ही तड़पता रहा। घायल व्यक्ति को अगर समय पर अस्पताल पहुंचाया जाता तो शायद इनकी जान बच सकती थी। सड़क पर आवागमन कर रहे लोगो ने घायल व्यक्ति को देखा लेकिन किसी ने पुलिस को सूचना नही दिया। जबकी सड़क दुर्घटना में होने वाली मौत को रोकने के लिए सरकार द्वारा आवश्यक प्रयास किए जा रहे हैं। सड़क दुर्घटना में घायल

अनजान व्यक्ति को समय पर अस्पताल पहुंचा कर जान बचाने वाले लोगों को सरकार अब पांच हजार रुपए इनाम भी देगी,बावजूद घायल व्यक्ति घंटों तक सड़क में पड़ा रहा। क्षेत्र में सड़क दुर्घटना का ये कोई पहला मामला नहीं है,आए दिन सड़क हादसे में किसी की मौत तो कोई घायल हो रहे है। हालांकि इसको रोकने के लिए पुलिस प्रशासन की ओर से कुछ कदम उठाए जाते हैं, जैसे आए दिन वाहन जांच अभियान चलाकर लोगों को यातायात नियमों के बारे में जागरूक किया जाता है लेकिन वह कारगर साबित नहीं होते नही दिख रही है। कैरो प्रखंड से किसी को प्राथमिक उपचार के लिए 14 किमी दूर कुडू या भंडरा ले जाना पड़ता है। हालांकि कैरो में एक अतिरिक्त स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कार्य पूर्ण होकर 2014 से पड़ी हुई है।जो खुद अब अपना इलाज खोज रही है।अस्पताल को चालू कराने के लिए लगातार स्थानीय लोगों ने विधायक,मंत्री से लेकर सांसद तक गुहार लगा चुके हैं परंतु परिणाम वही ढाक के तीन पात। वर्ष 2014 से अस्पताल का भवन बनकर तैयार है। लेकिन आज तक अस्पताल चालू नहीं हुआ। यदि अस्पताल चालू हो जाता तो क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं आसानी से मुहैया होती। आये दिन दुर्घटना घटते रहती है समय पर ईलाज के अभाव में कई लोगों की जान चली गई है। कई अपंग हो गए है। अगर अस्पताल चालू होती तो शायद एक की जीवन बच जाती।

भाजपा सिमडेगा ने रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर किया माल्यार्पण

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। भारतीय जनता पार्टी सिमडेगा इकाई के द्वारा नगर अध्यक्ष सत्यनारायण के नेतृत्व में सिमडेगा प्रखंड कार्यालय के समीप बने महारानी लक्ष्मीबाई के प्रतिमा पर उनके जयंती के मौके पर माल्यार्पण किया। बारी-बारी से सभी लोगों ने माल्यार्पण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित की। मौके पर नगर अध्यक्ष ने कहा कि महारानी लक्ष्मी बाई भारत आजाद कराने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है हमें उनकी जीवनी से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है कि एक महिला होकर अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे और अंग्रेजी हुकूमत उनके आगे घुटने टेक दिए थे उन्होंने हमेशा भारत के स्वाभिमान की रक्षा के लिए लोगों को एकजुट करने का कार्य किया था इसलिए हमें उनके जीवनी से प्रेरणा लेकर आगे भी कार्य करना है जिससे कि समाज का भला हो सके।जिसमें मुख्य रुप से पूर्व जिला अध्यक्ष संजय ठाकुर, सावित्री देवी,चन्दन लाल, श्रवण गोवंशी, जीतू, आंकित कुमार, अनिरुद्ध सिंह, महावीर बड़ाईक, फुलसुन्दरी देवी सहित अन्य भाजपाई शामिल रहे।

अडानी को भरोसाः 2030 तक हम दुनिया की तीसरी बड़ी इकोनॉमी होंगे

अडानी ने मुंबई में वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ अकाउंटेंट्स 2022 को संबोधित करते हुए ये बात कही

नई दिल्ली (एजेंसी)। साल 2030 तक भारत, दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकोनॉमी बन जाएगा। यह भरोसा दुनिया के तीसरे सबसे रईस अरबपति गौतम अडानी को है। गौतम अडानी के मुताबिक देश की इकोनॉमी 2050 तक दुनिया में दूसरे स्थान पर आ जाएगी। अडानी ने मुंबई में वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ अकाउंटेंट्स 2022 को संबोधित करते हुए ये बात कही। वेंचर कैपिटल फंडिंग में तेजीः गौतम अडानी ने कहा कि अगले तीन दशक भारत को उद्यमिता के मामले में सबसे आगे ले जाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत में यूनिकॉर्न्स की रफ्तार दुनिया में सबसे तेज है। गौतम अडानी ने कहा- मुझे उम्मीद है कि स्टार्टअप्स की संख्या भारत में वेंचर कैपिटल यानी श्उ फंडिंग की ओर ले जाएगी। भारत ने पहले ही आठ वर्षों में श्उ फंडिंग में 50 बिलियन डॉलर की तेजी देखी है। रिन्यूएबल एनर्जी पर गौतम अडानी ने कहा कि सोलर और ग्रीन एनर्जी का संयोजन, ग्रीन हाइड्रोजन के साथ मिलकर भविष्य के लिए बड़े अवसर खोलेगा। अडानी ने कहा कि साल 2050 तक, भारत के पास ग्रीन एनर्जी का शुद्ध निर्यातक बनने की क्षमता है। इसके साथ ही अडानी ने देश की इकोनॉमी को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की पहल की सराहना की। मजबूत सरकार से बढ़ी क्षमताः अडानी ने कहा- साल 1947 में, एक राय थी कि भारतीय लोकतंत्र जीवित नहीं रहेगा। न केवल हम जीवित रहे, बल्कि अब भारत को सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण के लिए एक रोल मॉडल के रूप में माना जाता है। गौतम अडानी ने आगे कहा कि दो दशक से अधिक समय के बाद, अब हमारे पास बहुमत की सरकार है। इसने हमारे देश को कई संरचनात्मक सुधार शुरू करने की क्षमता दी है।

गौतम अडानी ने कहा- हमें जीडीपी का पहला ट्रिलियन डॉलर हासिल करने में 58 साल लग गए। वहीं, अगला 1 ट्रिलियन डॉलर हासिल करने के लिए 12 साल और तीसरे ट्रिलियन के लिए सिर्फ 5 साल लगे। उन्होंने कहा कि 2050 तक भारत 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। वहीं, शेयर मार्केट कैपिटल संभवतः $45 ट्रिलियन से अधिक हो जाएगा।

कृषि, ग्रामीण मजदूरों संबंधी महंगाई दर अक्टूबर में हल्की नरमी

नयी दिल्ली। कृषि और ग्रामीण श्रमिकों के लिए अखिल भारतीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 1986-87=100) पर आधारित मुद्रास्फीति अक्टूबर 2022 में एक माह पहले की तुलना में नरम होकर क्रमशः 7.22 प्रतिशत और 7.34 प्रतिशत थी। यह जानकारी श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की शुक्रवार को जारी एक विज्ञप्ति में दी गयी। कृषि श्रमिकों और ग्रामीण श्रमिकों से संबंधित खुदरा मुद्रास्फीति सितंबर 2022 में क्रमशः 7.69 प्रतिशत और 7.90 प्रतिशत थी। पिछले वर्ष की तुलना में मुद्रास्फीति का स्तर अब भी काफी ऊंचा है। पिछले वर्ष अक्टूबर महीने के दौरान कृषि श्रमिकों और ग्रामीण श्रमिकों के लिए खुदरा मुद्रास्फीति क्रमशः 2.76 प्रतिशत और 3.12 प्रतिशत थी। कृषि श्रमिकों और ग्रामीण श्रमिकों के लिए खाद्य मुद्रास्फीति अक्टूबर, 2022 में क्रमशः 7.05 प्रतिशत और 7.00 प्रतिशत रही जबकि सितंबर में यह क्रमशः 7.47 प्रतिशत और 7.52 प्रतिशत तथा और पिछले वर्ष के इसी महीने के दौरान क्रमशः 0.39 प्रतिशत और 0.59 प्रतिशत थी। पिछले वर्ष की तुलना में मुख्य रूप से चावल, गेहूं-आटा, ज्वार, रागी, दाल, दूध, घी की कीमतों में वृद्धि के कारण कृषि मजदूरों और ग्रामीण मजदूरों के सामान्य मूल्य सूचकांक में वृद्धि हुई है।

राजीव चंद्रशेखर ने व्यापार में नागालैंड पवेलियन का किया भ्रमण

नयी दिल्ली। इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल विकास एवं उद्यमिता राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने शुक्रवार यहां प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में नागालैंड पवेलियन का दौरा किया। इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के अुनसार उन्होंने राज्य के विभिन्न विभागों, गैर-सरकारी संगठनों और राज्य के कारीगरों द्वारा लगाए गए विभिन्न स्टालों का दौरा किया। श्री चंद्रशेखर ने नागालैंड के निहुनुओ सोरही से मुलाकात की-राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार (दो बार) और संत कबीर पुरस्कार प्राप्त किया और हथकरघा विरासत को जीवित रखने में बहुमूल्य योगदान देने के लिए उनकी सराहना की। उन्होंनेने ड्रीम ड्रैगन फ्रूट फार्म के स्टाल का भी दौरा किया-और युवा नागा महिला उद्यमी लुसी न्गुल्ली से मुलाकात की, जो फार्म की मालिक हैं और जैविक ड्रैगन फ्रूट वाइन के उत्पादन में प्रवेश कर चुकी हैं।

विदेशी मुद्रा भंडार 14.72 अरब बढ़कर 544.72 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि में जबरदस्त बढ़ोतरी होने से देश का विदेशी मुद्रा भंडार 11 नवंबर को समाप्त सप्ताह में 14.72 अरब डॉलर बढ़कर 544.72 अरब डॉलर पर पहुंच गया जबकि इसके पिछले सप्ताह 1.09 अरब डॉलर घटकर 529.9 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 11 नवंबर को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 11.8 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 482.53 अरब डॉलर हो गयी। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 2.64 अरब डॉलर की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 39.7 अरब डॉलर हो गया। आलोच्य सप्ताह एसडीआर में 16.5 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी हुई और यह बढ़कर 17.6 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि 11.6 करोड़ डॉलर बढ़कर 4.94 अरब डॉलर पर पहुंच गई।

यात्रा ऑनलाइन को आईपीओ लाने के लिए सेबी की मंजूरी

नई दिल्ली। यात्रा ऑनलाइन लिमिटेड को आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाने के लिए भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की मंजूरी मिली है। यात्रा ऑनलाइन लिमिटेड की पितृ कंपनी यात्रा ऑनलाइन इंक ने यह जानकारी दी। मसौदा दस्तावेजों के अनुसार, निर्गम के तहत कंपनी 750 करोड़ रुपए के नए शेयर जारी करेगी। इसके अलावा 93,28,358 इक्विटी शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) भी की जाएगी। नैसडेक में सूचीबद्ध यात्रा ऑनलाइन इंक ने एक बयान में कहा कि यात्रा ऑनलाइन लिमिटेड को मार्च में जमा कराए आईपीओ दस्तावेजों के संबंध में 17 नवंबर को बाजार नियामक सेबी से मंजूरी मिली। कंपनी आईपीओ से जुटाई गई रकम का इस्तेमाल रणनीतिक निवेश, अधिग्रहण और कारोबार वृद्धि के लिए करेगी।

सुकन्या समृद्धि योजना बेटियों के लिए सरकार की बड़ी योजना खुलवाने पर होगा बड़ा फायदा

नई दिल्ली। सरकार की ओर से लोगों के कल्याण के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं में सरकार लोगों को आर्थिक मदद देती है तो वहीं लोगों के लिए कई बचत योजनाएं भी चलाई जा रही है। इन बचत योजनाओं में निवेश कर अच्छा रिटर्न भी हासिल किया जा सकता है। वहीं सरकार की ओर से बेटियों के लिए भी बढ़िया निवेश की स्कीम चलाई जा रही है। इस स्कीम का लॉन्ग टर्म में फायदा मिल सकता है। दरअसल, हम बात कर रहे हैं पोस्ट ऑफिस के जरिए चलाई जा रही सुकन्या समृद्धि योजना की. यह योजना विशेष तौर पर बेटियों के लिए चलाई जाती है. सुकन्या समृद्धि योजना, पोस्ट ऑफिस के जरिए संचालित की जाती है। कोई भी अपनी बेटी के नाम पर पोस्ट ऑफिस में सुकन्या समृद्धि अकाउंट खोल सकता है। इस निवेश योजना पर 7.6 फीसदी की दर से ब्याज मिलता है. वहीं इस योजना के जरिए छोटी बचत से भी लाखों रुपये बनाए जा सकते हैं.

कार्यालय, जिला शिक्षा पदाधिकारी, चतरा
वी०जे० इंस्टीच्यूट भवन, पुराना कचहरी परिसर, चतरा।
Email Id- deormsachatra@gmail.com

-सूचना-

सर्वसाधारण को सूचित करना है कि SCA/DMFT मद् अंतर्गत् चतरा जिला के इच्छुक छात्र/छात्राओं के लिये Integrated Coaching Programme for Copetitions (UPSC-CSE/ JPSC/ NEET/JEE/UG-CLAT/Computer Coaching/सिविल सेवा) परीक्षा की तैयारी कराने हेतु निःशुल्क कोचिंग का संचालन किया जाना है। जिसके लिये योग्य छात्र-छात्राओं से विहत प्रपत्र में सिर्फ ईमेल (deormsachatra@gmail.com के माध्यम से ही दिनांक-25.12.2022 तक आवेदन स्वीकार किया जाएगा। नियमावली एवं प्रपत्र इसके साथ संलग्न है। साथ ही इसकी सूचना चतरा जिला के Official Webside www.chatra.nic.in पर भी Upload है।

जिला शिक्षा पदाधिकारी
चतरा

PR 282820 School Education and Literacy(22-23)#D

जिला अभियन्ता, जिला परिषद, लोहरदगा
(अभियंत्रण कोषांग)

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 07/2022-23

1. विज्ञापन दाता का नाम : जिला अभियन्ता, जिला परिषद, लोहरदगा
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि : दिनांक 03.12.2022 को 01.00 बजे अपराह्न तक
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 05.12.2022 को 04.00 बजे अपराह्न तक
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 05.12.2022 को 04.30 बजे अपराह्न में
5. परिमाण विपत्र बिक्री की स्थान : जिला अभियन्ता का कार्यालय, जिला परिषद, लोहरदगा।
6. निविदा प्राप्त करने / खोलने का स्थान : जिला अभियन्ता का कार्यालय, जिला परिषद, लोहरदगा।
7. योजना मद : जिला योजना अनाबद्ध मद
8. कार्य का विवरण

क्र0सं/ ग्रुप संख्या	प्रखण्ड	ग्राम का नाम	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र की राशि	अग्रधन की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6	7	8
1	भण्डरा	भण्डरा	मध्य विद्यालय भण्डरा में पेयजल आपूर्ति कार्य	434200.00	1250.00	8700.00	02 (दो) माह
2	भण्डरा	भण्डरा	लाल बहादुर शास्त्री +2 विद्यालय भण्डरा में पेयजल आपूर्ति कार्य	440100.00	1250.00	8800.00	02 (दो) माह
3	किस्को	बरनांग	ग्राम बरनांग में बाँस हस्तशिल्प उद्योग केन्द्र की स्थापना हेतु पूर्व निर्मित भवन की मरम्मति एवं चबुतरा निर्माण	315000.00	1250.00	6300.00	02 (दो) माह

योजनाओं की विस्तृत विवरणी, निविदा की शर्तें जिला परिषद्, लोहरदगा के सूचनापट्ट पर देखी जा सकती है।
2. जिला परिषद लोहरदगा में निबंधित संवेदक ही निविदा में भाग ले सकेंगे। संवेदको को UCAN में निबंधन अनिवार्य होगा।
3. परिमान विपत्र हेतु बैंक ड्रॉफ्ट DDC-Cum-CEO, ZilaParishad, Lohardaga के पदनाम से देय होगा, जो बैंक ऑफ इण्डिया के कोर्ट एरिया लोहरदगा शाखा (बैंक कोड-4968) में भुगतेय होगा।

जिला अभियन्ता,
जिला परिषद, लोहरदगा

PR 282757 Lohardaga(22-23).D

OFFICE NAGAR PANCHAYAT MANJHIAON
Quotation for Suppling and installation of High Mast Light at NP Manjhiaon
Very Short term Quotation Notice No. 13/2022-23

Place of the Office inviting Quotation	Nagar Panchayat Manjhiaon Office
Place & Time of receiving Quotation	28.11.2022 up to 02:00 PM
Place & Time of opening of Quotation	29.11.2022 At 02:30 PM
Place of receiving of Quotation	Nagar Panchayat Manjhiaon Office
Place of Opening of Quotation	Nagar Panchayat Manjhiaon Office

Sl No	Description	Qty.	Unit	Rate (Rs.)	Amt. (Rs.)
01/M-880	Suppling of 20 mtr. High Mast in one Section Construction S355 grade as per BS-EN 10: 025 Top dia 15mm..... GI Single Spike (With 14.95% Overhead Charge)	01	Set		
02/M-883	For 20mtr. High Mast: ITC of the high Mast and light fixture with the help of suitable tools and plants .....for 20 M High mast (with 14.95% Overhead Charge)	01	Set		
03/9.2.8	S.I.T.C of following rating LED flood lighting submarine with pressure dia cast housing .....complete with all necessary accessories is required (240W LED Flood Light)	12	No.		
04/M-740	16sq mm 4 crexlpe inducted pvc heavy duty armored cable	20	m.		
05/3.6	Earthling with copper earth plate 600mm x 600 mm x 3 mm thick including accessories .....watering pipe etc.	01	Set		
06/3.17	Providing and fixing 4.00mm dia copper wire on surface or in recess for loop earthling etc. required	05	m		
07/3.2	Earthling with G.I earth pipe 4.5 mtr long 40mm dia including accessories .....with charcoal or coke and salt as required .	01	Set		
			Add 15% GST		
			Grand Total		

Terms and Conditions are also reach at Notice Board of Municipal Office NP Manjhiaon and Website http://www.udhd.gov.in

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर पंचायत मझिऑव

PR 282771 Urban Development (22-23)_D

Government of Jharkhand Urban Development Department
Medininagar Municipal Corporation
e-Procurment Very Short Tender Notice

S.I.	Tender id	Name of work	Estimate	Earnest Money	Tender Fee	Completion Of Work
Part – A						
1	UDHD/MMC/71/2022-23	Laying of Paver Block from Panki main road to Nahar via Bali singh house (Part) ii. Drain from Bablu upadhya house to Sanjay tiwari via. Shiv Shankar Dubey house ward 02 iii. Laying of 450 MM Hume pipe from Anand Prasad house to Sambhu Agarwal house (Part) Ward no. 02 iv. Drain from Ajay Singh house to Nahar via. Satyendra Choudhary house (Part) ward no. 03 v. Laying of 300 MM hume pipe from Vijay singh house to Damodar singh house ward no. 05 Vi. Drain from Punit Manjhi house to Naha ward no. 05	2413030	48300	5000	3 माह
2	UDHD/MMC/72/2022-23	Repair of Drain from Viru Singh house to Sanjay tiwari house, Naveen singh to Vijay paswan house, TT Sahab house to Munna singh house, Rajkumar Mehta house to Shibu Guruji house (Part) in ward no. 06 ii. Ashok dubey house to sunil tirkey house ward no. 07 iii. Vani Mishra house to Anil Shukla house warde no. 07 iv. Laying of 300 MM hume pipe from Dipak Ram house to Ravindra Pandey house ward no. 07 V. Laying of paver block from kamleshwar Prasad to nakul ram house, Awdhes Pandey house to Anjani Pandey house, pramod gupta house to Nandlal Prasad ward 08 Vi. PCC road from Gopal Mishra house to Sanjay Singh house ward no. 10 Vii. PCC road near Ashish Kumar house to Drain in ward no. 10 Under Medininagar Municipal Corporation	2450220	49100	5000	3 माह
3	UDHD/MMC/73/2022-23	Detailed Estimate for (i) PCC Road from Chandrika Paswan house to River bank ward no 11 (ii) Laying of Paver Block road from Girwar ji house to Kunal Tiwari house via chandrashekhar dubey house,satayanaryan pandey house ward 12 iii Drain From Manoj chodhery house to Jailhata chock in ward 13	2223030	44500	5000	3 माह
4	UDHD/MMC/74/2022-23	Detailed Estimate for (i) Laying of paver block road from late Girwar singh house to Manoj singh house ward 14 (ii) pcc road and hume pipe from Asrani bhuiya house to hulas dubey house ward 14 (iii) Laying of paver block road from Bablu ojha house to By pass road (Kalimandir) ward 15 (iv) P.C.C. road from Manoj yadav house to Syam sundar gupta house ward 16 (v) P.C.C. road from Satyaprakash Divedi house to Dilip Tiwari house ward 17	2222850	44500	5000	3 माह
5	UDHD/MMC/75/2022-23	Detailed Estimate for (i) Repairing of dashgatra shed in ward 18 (ii) Construction of kalbudh sthal (near WC house) in ward 18 (iii) PCC road from kanta prasad house to sudhir paswan house in ward 19 (iv) hume pipe from munna sharma house to main road ward 19 (v) New PCC over old Pcc road from Munna sharma house to main road ward 19 (vi) Drain from Ghanshyam sahu house to dwarka sahu house in ward 20	1936180	38800	5000	3 माह
6	UDHD/MMC/76/2022-23	Detailed Estimate for (i) Drain from nauketan mode to milan marriage hall on both side (part) in ward 21 (ii) PCC road from Dharmendra Kumar house to anil agrawal house in ward no 22 (iii) drain from wasim car service centre to deepak dubey house ward no 22 (iv) Laying of paver block , Ramp, stairsm drain and asbestose sheet shet at samudayik bhawan in ward 23 (v) New PCC over old Pcc road from Polyclininc to ramesh Ram house ward 24 (vi) PCC road in front of ramesh ram house and PCC work at dabar chowk ward 24 (vii) 2 nos. culvert near Sunil gupta house and 1 culvert at dabar chowk ward 24 Under Medininagar Municipal Corporation.	2370770	47500	5000	3 माह
7	UDHD/MMC/77/2022-23	Detailed Estimate for (i) New PCC over old PCC road from late Mahendra tiwari house to bharat ram house via md mustafa house and from anil ram house to Azamal khan house in ward 25 (ii) PCC road from Rinku chasma house to Faeem raen house ward 26 (iii) PCC Road from Haidu Balki house to arif shiddiqui house via rinku tent house ward 26 (iv) New PCC over PCC road from Late kayum ansari house to shamu driver house ward 27 (v) New PCC over PCC road from Late kayum ansari house to shamu driver house ward 27 Under Medininagar Municipal Corporation.	1660120	33300	5000	3 माह
8	UDHD/MMC/78/2022-23	Detailed Estimate for (i) Drain From Bablu singh house to Bhagwan saw and P.C.C road near Markajja madarsa (ii) Repair of Drain from Balsamaj to Durgapit (iii) PCC Road fromMurari Ram house to Suresh soni house ward 29 (iv) PCC Road From Lakhabn mehta house to dharmendra bhuiya house in ward 03 (v) PCC Road from Main road to Nausad house (140ft) ,Main road to Tanveer Alam house (200ft) , Sadik tailor house to Imran house (L-200ft) , Munarik Paswan house to Dhruv Chandravanshi house ward 31 Under Medininagar Municipal Corporation.	1981120	39700	5000	3 माह
9	UDHD/MMC/79/2022-23	Detailed Estimate for (i) PCC Road from Main road to Aslam kureshi house via Hind sewa sadan (190ft) and Main road to Ganesh ram house(280ft) ward no 32 (ii) P.C.C. road from Kamruddin miya house to Bhola Choudhary house (L-200ft) (ii) anil Gupta house to Main road (200ft) ward 33 (iii) PCC Road from Haji Sahab house to Bhila house ward 34 (iv) Drain From Vigan Saw house to Purushottam Vishwakarma house (335ft) , Gourishankar Prasad shailu ji house to East muhalla thakurbar mandir (61ft) awrd 35	2498990	50000	5000	3 माह
10	UDHD/MMC/80/2022-23	Detailed Estimate for (i) Laying of Paver Block from Binod singh house to Ajay Pandey house (ii) Laying of Paver Block from Main road to Surendra kumar and main road to Sanjay pathak (iii) Laying of Paver Block from Dinesh Gupta house to primary school (iv) Construction of recharge pit near Brajesh Sharma home ward 08 (v) Beautification in Front of bengali school in front of Police thana ward 24	2369080	47500	5000	3 माह
11	UDHD/MMC/81/2022-23	Construction of RCC road Divider with RCC Plantation pot from Chhaumuhan Chowk in ward no. 23 & 24	2499260	50000	5000	3 माह
12	UDHD/MMC/82/2022-23	Construction of RCC road Divider with RCC Plantation pot from Redma Chowk to Forest office in ward no. 23 & 24	2498820	50000	5000	3 माह
13	UDHD/MMC/83/2022-23	Strenghting of old black topped from Nandlal ram house to Raunak Medical Store in ward no. 25	1270220	25500	5000	3 माह
14	UDHD/MMC/84/2022-23	Providing Parking tiles and drain in Chaudharana market Campus in ward no. 24 & 29	2498430	50000	5000	3 माह
15	UDHD/MMC/85/2022-23	Construction of Drain from Main road to Geeta Rani Sinha house ward no. 02 (ii) New PCC over old PCC road from Dadan Prasad sinha house to Manoj prakash house via. Balmiki Tiwari house ward no. 08 under Medininagar Municipal Corporation	622690	12500	5000	3 माह
16	UDHD/MMC/86/2022-23	Construction of RCC drain near Nirmal Awas ward no. 30 (ii) PCC road from Jaigoving Mehta house to Primary school Mouryanagar ward no. 10 (iii) Chabutra near Gambhel baba in ward no. 11 (iv) stair repair near Koyal river ghart ward no. 22	598110	12000	5000	3 माह
17	UDHD/MMC/87/2022-23	Construction of Drain from Bihari lal house to Ghiran BNhagat house (ii) PCC from Bihari lal houseto Ghiran Bhagat house (iii) Drain from Dheeraj Jaiswal house to Ramkamal Sharma ji house (iv) PCC from Dheeraj Jaiswal house to Ramkamal Sharma ji house Medininagar ward no. 33	1881150	37700	5000	3 माह
18	UDHD/MMC/88/2022-23	Constrution for repair of Yatri Shed under Medininagar Municpal Corporation	1600320	32100	5000	3 माह
19	UDHD/MMC/89/2022-23	Construction of repair of old drain in front of Girwar School ward no. 22 (ii) Repair of Rickshwa stand ward no. 24 (iii) Drain from Kajri Bhawan to bhola pandey house ward no. 02 (iv) Laying of Paver Block from old PCC road to Near Dr. House in ward no. 03	1430280	28700	5000	3 माह
20	UDHD/MMC/90/2022-23	Repair of boundary wall, Gate and construction of shed and laying of Paver block in Harischandra ghat ward no. 24	1453580	29100	5000	3 माह
21	UDHD/MMC/91/2022-23	Construction of new PCC over old PCC from Dadai Singh house to Bhikari yadav house ward no. 19 (ii) Drain from Dadai Singh house to Bhikari yadav house ward no. 19 (iii) Culvert near bhikari yadav house ward no. 19 (iv) Installation of High mast light in bada talab ward no. 24 (v) Drain from Abhimanyu Tiwari house to Culvert near Railway line ward no. 24	1635120	32800	5000	3 माह
22	UDHD/MMC/92/2022-23	Construction of PCC road from khaderan saw houwe to mahua tree via suresh bhuiya house, santosh thakur house in ward no. 03	1473260	29500	5000	3 माह

Part – B		
1	Date Of Publication Of Tender On Website	28/11/2022 AT 10:00 AM
2	Mode Of Submission Of Bids	E-Tendering Http//:Jharkhandtenders.gov.In
3	Date Start Of Submission Of Bids	28/11/2022 AT 10:00 AM
4	Last Date/Time Of Submission Of Bids	08/12/2022 AT 02:00 PM
5	Date Of Bid Opening	09/12/2022 AT 02:00 PM
6	Last Date/Time Of Submission At Office Cost of BOQ, Earnest Money And Tender Document	09/12/2022 AT (11.00 AM to 01:00 PM)
7	Name & Address Of Office Inviting Tender	Municipal Commissioner, Medininagar Municipal Corporation
8	Contact No. Of Procurement Officer	9431105183
9	Helpline Number Of E-Procurement Cell	9304883244

NOTE :- Only E-Tender will be accepted. Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in & Notice Board office of the Medininagar Municipal Corporation

ह0/-
उप नगर आयुक्त,
मेदिनीनगर नगर निगम

PR 282776 District(22-23)D

एक नजर इधर भी

मानगढ़ धाम की गौरव यात्रा

15 नवंबर को देश भर में भगवान बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई। इस दिन को द्वितीय 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाया गया और देश ने जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के पराक्रम और साहसिक कृत्यों को याद किया। 17 नवंबर के ही दिन राजस्थान में जनजातीय लोग अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचारों के विरुद्ध गोविंद गुरु के नेतृत्व में उठ खड़े हुए थे। इसी दिन अंग्रेजों ने इनका भीषण नरसंहार किया था। **दयानंद के शिष्य :** राजस्थान के डूंगरपुर बांसवाड़ा क्षेत्र में एक बंजारा परिवार में जन्मे गोविंद गुरु ने स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षा को आत्मसात किया, सामाजिक-धार्मिक उत्थान के माध्यम से भील जनजातियों को एकजुट करने के लिए सक्रिय हो गये। भारतीय परंपरा और आदर्शों के सच्चे प्रतिपादक के रूप में उन्होंने 25 वर्ष की आयु में सन 1883 में जनजातीय लोगों के बीच एकता और सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए 'संप सभा' की स्थापना की। ये सामाजिक-आर्थिक कदम तब उठाये गये, जब ब्रिटिशराज भारत से योजनाबद्ध तरीके से लूट रहा था और स्थानीय लोगों के हितों के प्रति असंवेदनशील हो गया था। सन 1903 के बाद से मानगढ़ पहाड़ी क्षेत्र के भीलों और अन्य जनजातीय लोगों के लिए एक मेले के रूप में आयोजित वार्षिक समागम के लिए प्रसिद्ध स्थान बन गया था। **गोविंद गुरु की मांग :** भारत में स्व-शासन की मांग ने 20वीं शताब्दी के पहले दशक में बहुत अधिक जोर पकड़ लिया। गोविंद गुरु ने भी सूखा/अकाल प्रभावित परिस्थितियों में जनजातियों से लिए जाने वाले लगान को कम करने और धर्म तथा रीति-रिवाजों का पालन करने में स्वतंत्रता की मांग रखी। स्वतंत्रता संग्राम के भाग के रूप में जनजातियां और भील समुदाय अंग्रेजों के विरुद्ध बड़े संघर्ष की तैयारी में जुटे थे। सन 1913 में 17 नवंबर की पूर्णिमा के दिन मानगढ़ पहाड़ी पर डेढ़ लाख से अधिक भील गुरु के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाते हुए इक्ठा हुए। भूरेटिया नहीं मानू रे' (मैं अंग्रेजों के दमनकारी शासन के प्रति कभी भी वफादार होना स्वीकार नहीं करूंगा) गीत जनजातीय लोगों की मुखर अभिव्यक्ति बन गया। अंग्रेजों को जब इसकी भनक लगी तो उन्होंने मानगढ़ पहाड़ी पर 7 कंपनियां और तोपें तैनात कीं, जिन्होंने पूरी मानगढ़ पहाड़ी को घेर लिया। अंग्रेजी हुकूमत ने गोविंद गुरु और उनके अनुयायी भील समाज के लोगों को मानगढ़ पहाड़ी खाली करने का आदेश दिया, मगर गुरु के प्रति निष्ठावान ये लोग टस से मस नहीं हुए। संवेदनहीन अंग्रेजों ने बड़े पैमाने पर गोलीबारी का आदेश दिया, जिसमें 1500 से अधिक जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राण त्याग दिये। **मानगढ़ का गौरव :** हाल ही में 1 नवंबर को मानगढ़ पहाड़ी पर आयोजित 'मानगढ़ धाम की गौरव गाथा' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के मुख्यमंत्रियों के साथ, गोविंद गुरु और बलिदानी भील समाज के वीरों को श्रद्धांजलि देने उपस्थित हुए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 1913 में इसी पहाड़ी पर एकत्रित जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के वंशज भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। राष्ट्रीय जनजातीय केंद्र के रूप में इसका विकास राष्ट्र निर्माण में जनजातीय योगदान को मान्यता देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इसके अतिरिक्त आदिवासी समाज के राष्ट्र निर्माण में योगदान एवं देश की स्वतंत्रता में उनके योगदान और बलिदान को रेखांकित करते हुए भारत सरकार दस राज्यों- अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, गुजरात, आंध्र प्रदेश, गोवा और केरल में जनजाति संग्रहालय विकसित कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के कारण सामाजिक न्याय की एक नई परिभाषा तैयार हो रही है। आज हम मानगढ़ के शहीदों और विस्मृत वीरों के उत्कृष्ट बलिदान को याद करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

■ अर्जुन राम मेघवाल

पराली के धुएं में प्रदूषण से उड़ते सवाल

लेकिन विडंबना यह है कि इसे रोकने के लिए कोई खास उपाय न कर इस पर हर साल दो महीने सियासत निश्चित रूप से होती है। किसानों के पास न तो वक्त होता है और न ही पैसे, जिससे वे इसके निस्तारण का कोई दूसरा रास्ता निकाल सकें। दरअसल हर किसी खास मौके का एक वक्त मुकर्रर होता है। हर साल ठंड की शुरूआत के साथ ही पराली पर सियासत का भी ऐसा ही दौर आता है। जलाई जा रही पराली के धुएं से प्रदूषण पर सत्ता-विपक्ष से लेकर टीवी पर चलने वाली बहसों में आरोप-प्रत्यारोप उफान पर होते हैं। अक्तूबर आखिर से नवंबर अंत तक पूरे देश में पंजाब में जल रही पराली पर जम कर बहस होती है। लेकिन धीरे-धीरे इसका कुहासा भी छंटता है और नया साल आते-आते कुछ दिनों में सब कुछ भुला दिया जाता है। पूरा देश राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र यानी दिल्ली-एनसीआर के प्रदूषण को देख कर दंग रहता है और केवल पंजाब की जलती पराली को कोसा जाता है। लेकिन हकीकत यह है कि देश के दूसरे कई भागों में भी इससे कम या बराबर ऐसा ही प्रदूषण रहता है जहां कहीं इसे पुआल तो कहीं पइरा भी कहते हैं और तब इस पर कोई खास आवाज नहीं उठती। एक सच्चाई भी है कि इसी नवंबर के पहले हफ्ते में दुनिया के सबसे प्रदूषित देशों में हम शीर्ष पर रहे। वायु प्रदूषण की वजह पराली जलाने के साथ दिवाली के पटाखों का धुआं भी रहा। इसके अलावा गेहूं कटने के बाद खेतों में बची जड़, जिसे नरवाई कहा जाता है, को जलाने की समस्या मार्च-अप्रैल में शुरू हो जाती है। कई गेहूं उत्पादक राज्यों में पूरे खेत के खेत जलते देखे जा सकते हैं। इस पर भी उतनी ही जिम्मेदारी और संवेदनशीलता जरूरी है, जितनी पराली को लेकर होती है। यह भी पूरी तरह सच है कि जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा के लिए जंगल की आग के बराबर ही इंसानों द्वारा फैलाया जा रहा प्रदूषण भी कोई कम नहीं है। इसलिए सवाल तो इस बात का है कि आखिर वायु प्रदूषण है क्या और इस पर इतनी चिंता व बहस कैसी? दरअसल, हमारे वायुमंडल में उपलब्ध रहने वाली सारी गैसों की मात्रा का संतुलन प्राकृतिक रूप से तय होता है। इनके बिगड़ने से हवा की गुणवत्ता बिगड़ती है। यह असंतुलन प्राकृतिक कारकों से ज्यादा इंसानी गतिविधियों से होता है। इसी संतुलन को मापने के लिए ही वायु गुणवत्ता सूचकांक उपकरण इस्तेमाल किया जाता है, जो बताता है कि उस जगह की हवा की वास्तविक गुणवत्ता कैसी है। वायु गुणवत्ता की जांच के लिए आठ प्रदूषक कारक तत्वों का परीक्षण किया जाता है ताकि हवा में उनकी मात्रा का पता चल सके। इसी से प्रदूषण का स्तर पता लगता है। हवा

> **वायु प्रदूषण की वजह पराली जलाने के साथ दिवाली के पटाखों का धुआं भी रहा। इसके अलावा गेहूं कटने के बाद खेतों में बची जड़, जिसे नरवाई कहा जाता है, को जलाने की समस्या मार्च-अप्रैल में शुरू हो जाती है। कई गेहूं उत्पादक राज्यों में पूरे खेत के खेत जलते देखे जा सकते हैं। इस पर भी उतनी ही जिम्मेदारी और संवेदनशीलता जरूरी है, जितनी पराली को लेकर होती है। यह भी पूरी तरह सच है कि जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा के लिए जंगल की आग के बराबर ही इंसानों द्वारा फैलाया जा रहा प्रदूषण भी कोई कम नहीं है। इसलिए सवाल तो इस बात का है कि आखिर वायु प्रदूषण है क्या और इस पर इतनी चिंता व बहस कैसी? दरअसल, हमारे वायुमंडल में उपलब्ध रहने वाली सारी गैसों की मात्रा का संतुलन प्राकृतिक रूप से तय होता है। इनके बिगड़ने से हवा की गुणवत्ता बिगड़ती है। यह असंतुलन प्राकृतिक कारकों से ज्यादा इंसानी गतिविधियों से होता है। इसी संतुलन को मापने के लिए ही वायु गुणवत्ता सूचकांक उपकरण इस्तेमाल किया जाता है, जो बताता है कि उस जगह की हवा की वास्तविक गुणवत्ता कैसी है। वायु गुणवत्ता की जांच के लिए आठ प्रदूषक कारक तत्वों का परीक्षण किया जाता है ताकि हवा में उनकी मात्रा का पता चल सके। इसी से प्रदूषण का स्तर पता लगता है। हवा के भीतर नुकसानदायक अति सूक्ष्म कण जिन्हें पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) कहा जाता है, मौजूद रहते हैं। पीएम-2.5 पीएम-10 से भी छोटे हैं और आसानी से शरीर में जाने लायक यहां तक खून में भी घुलने लायक होते हैं। सल्फर डाइआक्साइड जो कोयले और तेल के जलने से निकलने वाली गैस है, हवा में काफी मात्रा में रहती है और यह बेहद खतरनाक भी है। इसी तरह प्राकृतिक गैस, कोयला या लकड़ी जैसे ईंधन जलाने और वाहनों से कार्बन**

के भीतर नुकसानदायक अति सूक्ष्म कण जिन्हें पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) कहा जाता है, मौजूद रहते हैं। पीएम-2.5 की मात्रा 60 और पीएम-10 की 100 मात्रा वाली हवा सांस के लिए सुरक्षित होती है। गैसोलीन, तेल, डीजल, कोयला या लकड़ी के जलने से पीएम-2.5 अधिक बनते हैं। अपने छोटे आकार के कारण ये कण फेफड़ों तक पहुंच जाते हैं और सांस सहित तमाम रोगों का कारण बनते हैं। इंसानों के बालों का आकार पचास से साठ माइक्रोन होता है और पीएम-10 का मतलब हवा में मौजूद धूल, गर्द और धातु के ऐसे कण जो बाल से भी छोटे होते हैं। पीएम-2.5 पीएम-10 से भी छोटे हैं और आसानी से शरीर में जाने लायक यहां तक खून में भी घुलने लायक होते हैं। सल्फर डाइआक्साइड जो कोयले और तेल के जलने से निकलने वाली गैस है, हवा में काफी मात्रा में रहती है और यह बेहद खतरनाक भी है। इसी तरह प्राकृतिक गैस, कोयला या लकड़ी जैसे ईंधन जलाने और वाहनों से कार्बन डाइआक्साइड सबसे ज्यादा निकलती है। यही हाल नाइट्रोजन आक्साइड है जो उच्च ताप पर दहन से पैदा होती है और धुंध सरीखी दिखने वाली इस गैस का रंग भूरा होता है। इसके लंबे वक्त तक संपर्क में रहने से फेफड़ों को भारी नुकसान पहुंचाता है। कृषि प्रक्रिया से उत्सर्जित गैस अमोनिया भी प्रदूषण का कारण है। कूड़े, सीवेज और औद्योगिक प्रक्रिया से निकलने वाली गैसों में भी अमोनिया रहती है। इससे नाक, गले और श्वांस नली में जलन व अन्य समस्याएं पैदा होती हैं। प्रदूषण का एक बड़ा कारण सीसा (लैड) भी है। सबको पता है कि हवा, पानी, मिट्टी, धूल के कण और रंग-रोगन की सामग्री में सीसे की मात्रा काफी ज्यादा होती है। जाहिर है, फेफड़ों के लिए सीसा भारी नुकसान पहुंचाने वाला है। इसी तरह एक गैस है ओजोन है जो पृथ्वी के ऊपरी वायुमंडल और जमीन दोनों जगह मिलती है। अच्छी ओजोन ऊपरी वायुमंडल में वास्तविक रूप से होती है जो सुरक्षात्मक परत का काम कर हमें सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से बचाती है। लेकिन प्रदूषण से इस परत में छेद हो गया है जो धरती के पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचा रहा है। वहीं दूसरी ओजोन जमीनी स्तर पर बनती है जो हवा में तो उत्सर्जित नहीं होती है लेकिन नाइट्रोजन आक्साइड और कार्बनिक यौगिकों की रासायनिक क्रियाओं से बनती है। बिजली संयंत्रों, औद्योगिक बायलरों, रिफाइनरियों, रासायनिक संयंत्रों, वाहनों और अन्य स्रोतों से उत्सर्जित होकर सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में रासायनिक प्रतिक्रिया से बनने वाली ओजोन बेहद नुकसान पहुंचाती है। इन तमाम वायुमंडलीय गैसों के प्राकृतिक सामंजस्य बिगड़ने से ही सांस और फेफड़ों के गंभीर रोग होते हैं। इतना ही नहीं, हृदय रोग और दूसरी गंभीर बीमारियां व शारीरिक समस्याएं भी इसी असंतुलन से पैदा होती हैं। लगातार प्रदूषण सहने से त्वचा संबंधी रोग भी हो जाते हैं। यकीनन पराली जलाना एक गंभीर समस्या है। यह समस्या आज की नहीं, बल्कि बरसों से है। विडंबना यह है कि इसे रोकने के लिए कोई खास उपाय न कर इस पर हर साल दो महीने सियासत निश्चित रूप से होती है। किसानों के पास न तो वक्त होता है और न ही पैसे, जिससे वे इसके निस्तारण का कोई दूसरा रास्ता निकाल सकें। मजबूरी और दूसरी फसलें लगाने की जल्दबाजी में इसे जलाना ही एकमात्र सस्ता और सुलभ विकल्प बचता है। यह भी सच है कि इस पर काफी पैसा खर्चा गया, लेकिन नतीजा सिफर रहा। यह नहीं भूलना चाहिए कि हवा की गुणवत्ता बिगडने से पैदा हुए प्रदूषण से हर साल भारत सहित दुनिया में लाखों मौतें होती हैं। राज्यवार आंकड़े भी हैं और कारण भी, जो अलग से लिखे जाने लायक हैं।

■ ऋतुपर्ण दुबे

उठने के लिए गिरने का अभ्यास

जब उठना ही है तो फिर गिरा क्यों जाए? कुछ दिनों पहले दफ्तर में काम करते हुए एक परिचित गिर पड़े। शाम को छुट्टी होने का समय था, लेकिन लोगों की नजर पड़ी कि वे अपने कक्ष के फर्श पर बेहोश पड़े हैं। उनकी कुर्सी भी लुढकी पड़ी थी! जाहिर है, वहां मौजूद लोगों को घोर आश्चर्य हुआ, क्योंकि सबको यही लग रहा था कि वे इतने बीमार तो नहीं थे कि अचानक ऐसी हालत हो जाती। आसपास बैठने के नाते उनके सहकर्मियों को उनके स्वास्थ्य के बारे में मोटा-मोटी जानकारी थी। बहरहाल, लोग फौरन दौड़े और उन्हें होश में लाने की कोशिश की गई। चेहरे पर पानी छिड़का गया तब होश आया। सहकर्मी उन्हें अस्पताल ले जाना चाहते थे, लेकिन होश में आने के बाद उन्होंने मना कर दिया। उसने बताया कि चिंता की कोई बात नहीं है, बस वे कई दिनों से ठीक से सोए नहीं हैं। नींद नहीं आती। बहुत प्रयास करने के बाद भी रात भर जागते रहते हैं। शायद वे अनिद्रा के शिकार थे। दरअसल, इन दिनों बहुत सारे लोग अनिद्रा की बीमारी से ग्रस्त हैं। इस बीमारी ने महानगरों को अपनी चपेट में ले रखा है। अब तो गांवों में भी यह बीमारी पैर पसार रही है। चिकित्सक मानते हैं कि आधुनिक जीवन शैली इसका मूल कारण है। असमय खान-पान, देर-सवेर बिस्तर पर जाना, नशे का सेवन, जीविकोपार्जन के लिए आधारभूत आवश्यकता से अधिक कमाने की होड़ और व्यर्थ की चिंताएं शहरी जीवन शैली में रच-बस गई हैं। ये सब बातें अलग-अलग होते हुए एक-दूसरे में गुथी हुईं हैं। इसलिए इन सबसे बचने का कोई उपाय भी नजर नहीं आता। भलाई इसी में है कि संकल्पित होकर आवश्यकताओं को कम किया जाए। बेतरतीब दिनचर्या में समुचित सुधार लाने की कोशिश की जानी चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण भी दूसरा सबसे बड़ा कारण है। शहरी हवाओं में पेट्रोल-डीजल की गंध और कीचड़ से बजबजाते नालों की बदबू तैरती रहती है। महानगरों में रोजमर्रा के उपयोग से एकत्रित गीले और सूखे कचरे को आबादी से दूर 'डंपिंग-एरिया' में संग्रहित किया जाता है। न केवल महानगर, बल्कि छोटे-छोटे शहरों का भी तेजी से विकास हो रहा है। इसकी वजह से डंपिंग-क्षेत्र के आसपास रिहाइशी कालोनियां बस गईं हैं। इन कालोनियों में बदबूदार हवा की समस्या अधिक है। बढ़ते वाहनों के उपयोग से भी वायु बुरी तरह प्रदूषित हो रही है। इसके अलावा, ध्वनि विस्तारक यंत्रों और बिजली के उपकरणों के शोर को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इनसे वातावरण में एक अजीब-सी झनझनाहट बनी रहती है। इस झनझनाहट का अंदाजा उस समय सहज ही लगाया जा सकता है, जब क्षेत्र की बिजली कुछ देर के लिए गुल हो जाती है। एक सुकून भरा सन्नाटा हमारे चारों ओर पसर जाता है। पक्षियों की आवाजें सुनाई पड़ने लगती हैं। हवा के बहने की सरसराहट महसूस होने लगती है। यहां तक कि बहुत थका हुआ व्यक्ति पास बैठा हो तो उसकी धडकनें तक सुनाई दे जाती हैं। बिजली-उपकरणों के इस्तेमाल में मितव्ययिता के जैसी समझदारी होनी चाहिए। बहरहाल, अनिद्रा से परेशान होकर उस परिचित ने डाक्टर को दिखाने का विचार किया। उनसे बात करने और कुछ जांच उपक्रम निपटाने के बाद डाक्टर ने समझाया कि वे चिंता न करें, क्योंकि उन्हें कोई बीमारी नहीं है। जहां तक नींद नहीं आने की बात है तो उन्हें ऐसा सोचना ही नहीं चाहिए कि नींद नहीं आ रही है। ऐसा सोचने से नींद और दूर भाग जाती है। हम बार-बार करवट बदलते हैं और अपने आप पर झल्लाते हैं। अपने आप को नींद के सामने असहाय-सा महसूस करते हैं। जबकि सच यह है कि नींद के लिए तो बस नींद में गिर जाना होता है। डाक्टर की बात सुन कर परिचित चौंके। आखिर नींद में गिरना कैसे संभव है! यह सही है कि जब कोई किसी से अचानक टकरा कर गिर जाता है, तब लोग मजाक में ताना कसते हैं- 'भैया नींद में हो क्या? देख कर चलो!' आश्चर्य मिश्रित चुप्पी देख कर डाक्टर ने मुस्कुराते हुए समझाया, देखिए, जैसे प्यार करने के बारे में आदमी को सोचना नहीं पड़ता, बस वह प्यार में पड़ जाता है।

> **असमय खान-पान, देर-सवेर बिस्तर पर जाना, नशे का सेवन, जीविकोपार्जन के लिए आधारभूत आवश्यकता से अधिक कमाने की होड़ और व्यर्थ की चिंताएं शहरी जीवन शैली में रच-बस गई हैं। ये सब बातें अलग-अलग होते हुए एक-दूसरे में गुथी हुईं हैं। इसलिए इन सबसे बचने का कोई उपाय भी नजर नहीं आता। भलाई इसी में है कि संकल्पित होकर आवश्यकताओं को कम किया जाए। बेतरतीब दिनचर्या में समुचित सुधार लाने की कोशिश की जानी चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण भी दूसरा सबसे बड़ा कारण है।**

■ राकेश सोहम

है न विचित्र बात !

भारत की बढ़ती आबादी

यों तो भारत में जनसंख्या की रफ्तार पिछले दशकों के मुकाबले थोड़ी कम हुई है लेकिन हमारे देश में अभी भी लगभग 100 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनके लिए हम पर्याप्त भोजन, निवास, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा और मनोरंजन की व्यवस्था नहीं कर पाए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की ताजा रपट के मुताबिक दुनिया की आबादी 8 अरब से भी ज्यादा हो गई है। पिछले 50 साल में दुनिया की जनसंख्या जितनी तेजी से बढ़ी है, पहले कभी नहीं बढ़ी। अभी तक यही समझा जा रहा था कि चीन दुनिया का सबसे बड़ी आबादी वाला देश है लेकिन भारत उसको भी मात करने वाला है। भारत में इधर बढ़े 17 करोड़ लोग उसे दुनिया का सबसे बड़ा देश बना देंगे। ऐसा नहीं है कि भारत जनसंख्या के हिसाब से ही बहुत आगे बढ़ गया है। इस देश ने कई मामलों में सारी दुनिया से बेहतर उपलब्धियां भी हासिल की हैं। इस समय डिजिटल व्यवहार में वह दुनिया में सबसे आगे हैं। जहां तक प्रवासी भारतीयों का सवाल है, दुनिया के जितने अन्य देशों में भारतीय मूल के लोग शीर्ष स्थानों पर पहुंचे हैं, दुनिया के किसी मुल्क के लोग नहीं पहुंच सके हैं। भारतीय मूल के लोग जिस देश में भी जाकर बसते हैं, वे हर क्षेत्र में आगे निकल जाते हैं। वे अपने सभ्य और सुसंस्कृत आचरण के लिए सारे विश्व में जाने जाते हैं लेकिन दुनिया की बढ़ती हुई आबादी कई देशों के लिए तो खतरनाक सिद्ध हो ही रही है, वह भारत के लिए भी चिंता का विषय है। यदि आपके देश की या परिवार की आबादी बढ़ती चली जाए और उसकी जरूरतों की पूर्ति भी होती चली जाए तो कोई बात नहीं है लेकिन आबादी के साथ-साथ गरीबी और असमानता भी बढ़ती चली जाए तो वह समाज के लिए बोझ बन जाती है। यों तो भारत में जनसंख्या की रफ्तार पिछले दशकों के मुकाबले थोड़ी कम हुई है लेकिन हमारे देश में अभी भी लगभग 100 करोड़ लोग ऐसे हैं, जिनके लिए हम पर्याप्त भोजन, निवास, वस्त्र, शिक्षा, चिकित्सा और मनोरंजन की व्यवस्था नहीं कर पाए हैं। हमारी जनसंख्या-बढ़ोतरी का यह अच्छा पहलू है कि भारत में युवा लोगों का अनुपात वृद्धों के मुकाबले बेहतर है। दुनिया के मालदार देशों में दीघार्यु की सुविधाओं के कारण वृद्धों की संख्या कहीं ज्यादा है। जनसंख्या के खतरे से निपटने के लिए भारत सरकार को दो बच्चों वाले प्रतिबंध पर भी तुरंत विचार करना होगा। जनसंख्या की दृष्टि से भारत का फायदा उसके इस तेवर में भी है कि भारत से पढ़े-लिखे युवक बढियां आमदनी की तलाश में विदेशों में जाकर अपना ठिकाना बना लेते हैं। लेकिन भारत चाहे तो अपने दक्षिण और मध्य एशिया के देशों में विकास का इतना बड़ा अभियान चला सकता है कि देश के कई करोड़ लोगों को वहां रोजगार मिल सकता है और वे वहां बस भी सकते हैं। मध्य एशिया के पांचों देशों का क्षेत्रफल भारत से डेढ़ गुना है और उनकी आबादी मुश्किल से साढ़े सात करोड़ है। भारतीय लोगों को अगर उचित मार्गदर्शन और सुविधा मिले तो वे न केवल भारत की बढ़ती आबादी की समस्या हल कर सकते हैं बल्कि प्राचीन आर्यावर्त्त की अकूत संपदा का दोहन करके एशिया को यूरोप से भी आगे ले जा सकते हैं।

■ डॉ. वेदप्रताप वैदिक

ईडब्ल्यूएस आरक्षण में राजनीतिक स्वार्थ

अच्छे वेतन, स्थिर और उच्च गुणवत्ता वाली नौकरियों की कमी के कारण ईडब्ल्यूएस आरक्षण में बहुत राजनीतिक स्वार्थ है। वैसे भी अधिकांश नौकरियां निजी क्षेत्र में पैदा होने जा रही हैं जिसमें कोटा लागू नहीं होता है। इसलिए सामाजिक या आर्थिक अन्याय को ठीक करने का सबसे विश्वसनीय तरीका अर्थव्यवस्था में नौकरियों और आजीविका का उच्च, निरंतर व समावेशी विकास है। जनवरी 2019 में संसद ने सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए 103 वां संविधान संशोधन पारित कर आरक्षित कोटा की एक नई श्रेणी बनाई थी। यह आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (इकॉनामिकली वीकर सेक्शन- ईडब्ल्यूएस) के व्यक्तियों के लिए 10 प्रतिशत का एक नया कोटा था। इस संशोधन की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली कई याचिकाएं दायर की गईं थीं। बड़ी बात यह है कि संसद में बिना किसी बहस के यह महत्वपूर्ण संशोधन पारित किया गया था। इसका कारण यह था कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के पास निचले सदन, लोकसभा में पूर्ण बहुमत है। तमिलनाडु से सांसद सुश्री कनिमोई ने इस संशोधन के खिलाफ कुछ आपत्तियां उठाई थीं लेकिन संशोधन काफी हद तक बिना किसी चर्चा के पारित हो गया। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले हफ्ते अपने फैसले में ईडब्ल्यूएस कोटा की संवैधानिकता को बरकरार रखा और इसे चुनौती देने वाली सभी याचिकाओं को खारिज कर दिया। पांच सदस्यीय पीठ के फैसले में सर्वसम्मति से इस बात की पुष्टि की गई कि आरक्षण के लिए आर्थिक मानदंडों को आधार के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

याचिकाकर्ताओं ने इसी बात को चुनौती दी थी। पीठ अपने निष्कर्ष में भी एकमत थी कि इस नई श्रेणी के कारण अब संवैधानिक रूप से अनिवार्य आरक्षण (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अब ईडब्ल्यूएस) का कुल हिस्सा 50 प्रतिशत से अधिक हो जाएगा और यह संविधान के खिलाफ नहीं है। याचिकाकर्ताओं ने अपनी दलीलों में इस मुद्दे को भी रखा था। पीठ में एकमात्र मुद्दे पर 3-2 से मतभेद था कि क्या एससी, एसटी व ओबीसी समूहों को ईडब्ल्यूएस की नई बनाई गई श्रेणी से बाहर रखा जा सकता है। बहुमत का विचार है कि उन्हें बाहर रखना ठीक था।

इस संशोधन तथा देश की सुप्रीम कोर्ट द्वारा इसे प्रदान की गई वैधता के कई परिणाम हैं जिनमें से कुछ पर नीचे चर्चा की जाएगी। क्या इस फैसले ने संविधान के मूल ढांचे की रक्षा के सिद्धांत को झटका दिया है? सुप्रीम कोर्ट के 1973 के ऐतिहासिक फैसले के बाद से इसका अनुपालन किया जा रहा था। इस बहुचर्चित निर्णय ने स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया कि मूल संरचना का क्या अर्थ है। इसने संविधान में संशोधन पारित करने की संसद की शक्ति को भी प्रतिबंधित नहीं किया लेकिन यह जरूर कहा कि इतने अतिवादी संशोधन पारित नहीं किये जा सकते कि वे हमारे संविधान के मूल सिद्धांतों को विकृत कर दें। संसद सर्वोच्च है किन्तु संविधान की भावना सर्वोपरि है।

आर्थिक मानदंडों के आधार पर विशेष उपचार (आरक्षण) अदालत के इस फैसले की समीक्षा एक बड़ी पीठ द्वारा की जा सकती है। वैसे अभी के लिए हम संशोधन और निर्णय के अन्य पहलुओं पर विचार करें। सबसे पहले तो यह स्पष्ट है कि संशोधन अपने आप में राजनीति से प्रेरित था। भारतीय राजनीति में 'कोटा' शब्द रेडियोधर्मी तत्व की तरह असर करता है और एक धारणा है कि संशोधन उच्च जाति के मतदाताओं के वोट बैंक को लाभ पहुंचाने के लिए पारित किया गया था, परन्तु अब मुस्लिम और ईसाई भी ईडब्ल्यूएस कोटा के लिए पात्र हो गए हैं। दूसरे, हमारे संविधान में जाति के आधार पर 'कोटा' लंबे समय से चले आ रहे और ऐतिहासिक अन्याय को ठीक करने के लिए देकर एक नई श्रेणी बनाकर क्या हमने समानता के अधिकार (अनुच्छेद 14) का उल्लंघन किया है? या अनुच्छेद 14 और 15 को अनदेखा कर एससी, एसटी और ओबीसी समूहों को इस नई श्रेणी से बाहर करके गैर-भेदभाव के सिद्धांत का उल्लंघन किया गया है? न्यायशास्त्र के विद्वानों को इस पर विचार करना चाहिए। इस विषय पर पहले ही बहुत कुछ लिखा जा चुका है और आगे भी लिखा जाएगा। इस बात की बहुत संभावना है कि आने वाले दिनों में शीर्ष था। 'कोटा' उन लोगों की मदद के लिए है जो पीढ़ियों से सामाजिक पिछड़ेपन से पीड़ित हैं। आखिर आर्थिक पिछड़ेपन को ऐतिहासिक अन्याय और सामाजिक पिछड़ेपन से उपजे सामाजिक पिछड़ेपन की श्रेणी में कैसे रखा जा सकता है? एक व्यक्ति जिसकी आर्थिक स्थिति कमजोर है वह उसे प्रयास या भाग्य या दोनों के साथ बदल सकता है। यहां तक कि किसी व्यक्ति का धर्म भी उसकी पसंद का विषय हो सकता है, पर जाति जन्म से ही एक अपरिवर्तनीय निशानी है। इसलिए जाति आधारित भेदभाव आर्थिक अभाव के समान नहीं है। तीसरा, ईडब्ल्यूएस कोटा की पात्रता के लिए तय की गई कट ऑफ सीमा 8 लाख रुपये की वार्षिक आय है जो एक बहुत ही उदार सीमा लगती है। यह गरीबी रेखा से बहुत ऊपर है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में 95 प्रतिशत से अधिक परिवार इस सीमा के अंतर्गत आएंगे। तो क्या यह गरीबों को कोटा आधारित अवसर प्रदान करने का उपाय है या यह सभी को मौका देने का प्रयत्न है? चौथा, यदि वास्तव में ईडब्ल्यूएस कोटा गरीब परिवारों के लोगों की मदद करने के लिए है तो आइए, हम गरीबी रेखा से नीचे के लोगों की प्रोफाइल देखें! सरकार के सिन्हो आयोग के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे के लगभग 82 प्रतिशत लोग अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं। (मेजर जनरल (रिटायर्ड) एस. आर. सिन्हो के नेतृत्व में तीन सदस्यीय आयोग का गठन यूपीए सरकार के समय में किया गया था।) गरीबी और सामाजिक पिछड़ेपन के बीच गहरा संबंध है लेकिन ईडब्ल्यूएस कोटा में उन श्रेणियों को अवसरों से वंचित कर दिया है। इसी मुद्दे पर दो न्यायाधीशों ने संवैधानिक सिद्धांत के रूप में असहमति व्यक्त की है।

> **जनवरी 2019 में संसद ने सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए 103 वां संविधान संशोधन पारित कर आरक्षित कोटा की एक नई श्रेणी बनाई थी। यह आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (इकॉनामिकली वीकर सेक्शन- ईडब्ल्यूएस) के व्यक्तियों के लिए 10 प्रतिशत का एक नया कोटा था। इस संशोधन की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली कई याचिकाएं दायर की गईं थीं। बड़ी बात यह है कि संसद में बिना किसी बहस के यह महत्वपूर्ण संशोधन पारित किया गया था। इसका कारण यह था कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के पास निचले सदन, लोकसभा में पूर्ण बहुमत है। तमिलनाडु से सांसद सुश्री कनिमोई ने इस संशोधन के खिलाफ कुछ आपत्तियां उठाई थीं लेकिन संशोधन काफी हद तक बिना किसी चर्चा के पारित हो गया।**

■ डॉ. अजीत रानाडे

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पब्लिकेशन डिवीजन रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : **सुरेश बजाज**, संपादक : **हर्षवर्द्धन बजाज,** स्थानीय संपादक : **ओम प्रकाश अमरेन्द्र***, **प्रेस कार्यालय :** रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, **फोन नम्बर :** 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, **रांची कार्यालय :** 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, **दिल्ली कार्यालय** : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नयी दिल्ली-1, **गढ़वा कार्यालय :** मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, **लातेहार कार्यालय :** रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, **लोहरदगा कार्यालय :** रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल में, आशा कॉम्प्लेक्स लोहरदगा- फोन : 7903891779, 8271983099, **ई-मेल :** rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)।

टेलीविजन से सिर्फ खबरें नहीं मनोरंजन का भी साधन है

- टेलीविजन जनसंचार का सरल व सस्ता माध्यम है।
- टेलिविजन संचार के माध्यम में क्रांति साबित हुआ है।
- आज वर्तमान में टेलीविजन सबसे लोकप्रिय व ताकतवर माध्यम माना जाता है।

पलामू सहित पूरे विश्व टेलीविजन दिवस 21 नवंबर को दुनिया भर में मनायी जाती है जो संचार और वैश्वीकरण में अहम भूमिका निभाता है। टेलीविजन जनसंचार का एक ऐसा माध्यम है जिससे मनोरंजन, शिक्षा, खबर और राजनीति से जुड़े गतिविधियों के बारे में सूचनाएं मिलती है। यह शिक्षा और मनोरंजन दोनों का एक स्वास्थ्यपरक स्रोत है। यह सूचना प्रदान करके समाज में अहम भूमिका निभाता है। साथ ही टेलीविजन के दैनिक मूल्यों को उजागर करने और इसके महत्त्व को रेखांकित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। टेलीविजन जनसंचार का सरल व सस्ता माध्यम है। टेलिविजन संचार के माध्यम में क्रांति साबित हुआ है। आज वर्तमान में टेलीविजन सबसे लोकप्रिय व ताकतवर माध्यम माना जाता है। जिसके कारण एक व्यक्ति कहीं दूर बैठे देश-विदेश में घटने वाली घटना को आंखों देखा, देख सकता है। किसी भी खेल का प्रसारण वह अपने टेलीविजन पर तत्काल व सजीव रूप से टेलिविजन के माध्यम से एक दर्शक कहीं भी घटने वाली घटना को तुरंत व सजीव रूप में देख सकता है। टेलीविजन ने आज सामान्य से सामान्य लोगों तक अपनी पहुंच बना ली है। दूरदर्शन और टेलीविजन श्रेष्ठ उपयोगी यंत्र है। यह सभी जानते हैं कि कानों से सुनी हुए बात की अपेक्षा आंखों से देखी हुई घटना का प्रभाव मन पर अत्यधिक होता है। दूरदर्शन में ध्वनि के साथ ही दृश्य भी प्रत्यक्ष हो जाते हैं। ऐसे में उसका प्रभाव दर्शकों पर अधिक होता है। आज हम टेलीविजन पर नाटक चल चित्र, गीत, विविध मंच नेताओं के भाषण, गणतंत्र दिवस के दृश्य, विश्व की प्रमुख घटनाएं और भी अन्य कार्य कर्मों को देख सकते हैं। छात्रों को विभिन्न विषयों के पाठकों को पढ़ाने और कृषकों को कृषि संबंधी नवीनतम जानकारी टेलीविजन के माध्यम से दी जा रही है। ऐसे में टेलीविजन के आविष्कार से जहां एक ओर मनोरजंन के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित हुए हैं। तो वहीं इसने विज्ञान की दुनिया में भी चमत्कार किया हैं। आज टेलीविजन पर धार्मिक, राजनैतिक, पारिवारिक, रियलिटी शो और फिल्मों इत्यादि तमाम तरीकों से जनता का मनोरंजन किया जा रहा है। साथ ही टेलीविजन पर कई सारे महत्वपूर्ण नाटकों के माध्यम से समाज को नेतृत्व प्रदान किया जाता रहा है। पत्र व पत्रिका आदि के माध्यम से पाठक व दर्शक के पास जो घटना पहुंचती है। वह किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से आती है। किंतु टेलिविजन साक्षात रूप में उस घटना का विवरण दिखाता है। जिसके कारण दर्शकों में विश्वसनीयता का भाव जागृत होता है। जो जनसंचार का सबसे सफलतम उदाहरण हो सकता है। टेलीविजन का शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान समय में सरकारी व अर्ध सरकारी अथवा पूर्ण रूप से निजी रूप में टेलीविजन पर कई ऐसे चैनल प्रचलित हैं, जो शिक्षा व ज्ञान-विज्ञान की जानकारियां संप्रेषित करती है। एक व्यक्ति अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक छात्र उस चैनल से जुड़कर अपने विषय से जुड़ी जानकारियां प्राप्त कर सकता है। टेलीविजन आज के संचार को और अधिक सजीव दिखाने का सबसे सस्ता और सरल माध्यम है। इस माध्यम की पहुंच वर्ग के लोगो तक है, जिसके माध्यम से हर वर्ग का ज्ञान, मनोरंजन, शिक्षा के साथ नाता जुड़ जाता है। आधुनिक समय में मोबाइल तथा कंप्यूटर का बोलबाला है किन्तु टेलीविजन हर परिस्थिति में कारगर है। इस माध्यम में इंटरनेट के बाध्यता नहीं होती।

❖ कुमारी रिया

टेलीविजन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है

सूचना, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक तथा दृश्य, श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना ही संचार हैं।

टेलीविजन, आज संचार के सशक्त माध्यमों में से एक हैं। संचार शब्द की उत्पत्ति चर धातु से हुई है जिसका अर्थ है चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचना। दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचना, विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान। लेकिन संचार में सिर्फ दो या अधिक व्यक्तियों को नहीं, हजारों-लाखों लोगों के जनसंचार को शामिल किया जाता है। इस प्रकार सूचना, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक तथा दृश्य, श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना ही संचार हैं। इस प्रक्रिया को अंजाम देने में मदद करने वाले तरीके संचार माध्यम कहलाते हैं और टीवी इन्हीं संचार माध्यमों में से एक है। इसके अतिरिक्त रेडियो, मोबाइल, टेलीफोन, फैक्स आदि संचार के अन्य माध्यम है। टेलीविजन वैश्विक चिंताओं पर पर प्रकाश डालता है और वैश्विक स्तर पर सूचनाओं की समझ और विस्तार को संभव बनाता है। एक जिम्मेदार मीडिया जागरूकता से सम्बंधित मुद्दों को उठाती है और सफलता की कहानियों का रिपोर्ट और दुनिया के समक्ष वर्तमान की चुनौतियों का ज्ञान कराती है। हम लोगो को अपने कार्यो के सन्दर्भ में ज्यादे से ज्यादे जागरूक होना चाहिए। टेलीविजन वर्तमान में मौजूदा दुनिया में संचार और वैश्वीकरण का प्रतीक हो चुका है और इसका प्रतिनिधित्व कर रहा है। इस तरह की अद्भुत दुनिया में रहना अपने आप में एक महत्वपूर्ण तथ्य बन चुका है। साथ ही टेलीविजन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग बन चुका है। यह अभी भी नागरिकों की पहुँच से दूर है। अतः हमें उन तक पहुँचकर इसके महत्व के बारे में उन्हें परिचित कराना है। साथ ही यह बताना भी है की किस तरह से टेलीविजन उनके जीवन को प्रभावित करता है। यह लोगो के बीच दूरियों को मिटाता है साथ ही लोगो के बीच खुशियों का विस्तार करता है और लोगों के मध्य आपसी-बाद और विवाद को बढ़ावा देता है। विश्व के ऊपर टेलीविजन के प्रभाव को देखते हुए ही इस दिन की महत्ता का प्रभाव बढ़ा है और इसे विश्व टेलीविजन दिवस के रूप में मनाया जाता है। टेलीविजन को जनता को प्रभावित करने में एक प्रमुख साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। दुनिया की राजनीति के ऊपर इसके प्रभाव और इसकी उपस्थिति को किसी भी रूप में इनकार नहीं किया जा सकता है। वर्तमान में यह मनोरंजन और ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत हो चुका हो। टेलीविजन प्रमुख आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरे विश्व के ज्ञान में वृद्धि करने में मदद करता है। वर्तमान में यह मीडिया की सबसे प्रमुख ताकत के रूप में उभरा है। टेलीविजन को संचार और सूचना के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में पहचाना है। साथ ही यह भी माना है कि इस माध्यम नें व्यापक स्तर पर लोगो की बीच ज्ञान के प्रवाहमान को बरकरार रखा है। कम विकासित देशों में यह माध्यम ज्ञान के विस्तार के लिए अति महत्वपूर्ण माध्यम है। यह हमें विश्व भर के लोगों के बीच समानता को दशार्या करता है।

❖ गुड्डू कुमार

टेलीविजन ज्ञान का पिटारा है

छोटा पर्दा टीवी यानी टेलीविजन हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका है। बहुत ही तेजी से मनोरंजन के साथ-साथ जनसंचार के लिए भी एक लोकप्रिय साधन बन गया है। अब यह हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है क्योंकि अब हम इसके बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। टीवी, यह मात्र मनोरंजन का साधन नहीं, ज्ञान का पिटारा भी है। इस प्रकार देखा जाए तो टेलीविजन प्रौद्योगिकी में तेजी से विकास हुआ है। सबसे पहले, ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन का आविष्कार, रंगीन टेलीविजन, फिर केबल टेलीविजन, सैटेलाइट टेलीविजन, इंटरनेट टेलीविजन, डिजिटल टेलीविजन, स्मार्ट टेलीविजन, 3डी टेलीविजन, और भी बहुत कुछ भविष्य में आने वाला है। टेलीविजन बहुत ही तेजी से मनोरंजन के साथ-साथ जनसंचार के लिए भी एक लोकप्रिय साधन बन गया है। अब यह हमारे जीवन का हिस्सा बन गया है क्योंकि अब हम इसके बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। दुनिया भर में सूचना के आदान-प्रदान और लोगों को देश-दुनिया की जानकारी देने में रेडियो ने अहम भूमिका निभाई है। यह पत्रकारों के लिए एक प्लैटफॉर्म हुआ करता था। जिसके माध्यम से वह अपनी रिपोर्ट दुनिया तक पहुंचाते थे और अपनी बात देश-दुनिया तक पहुँचाते थे। मौजूदा समय में भी यह सूचना फैलाने का सबसे शक्तिशाली, सस्ता और सरल माध्यम है। टेलीविजन और मोबाइल फोन के आने से पहले, रेडियो ही केवल एक मात्र ऐसा साधन था। जिसके जरिए विश्व के अनेकों समाचारों, सरकार द्वारा चलाये जाने वाले योजनाओं को जाना जा सकता था। हालांकि रेडियो सदियों पुराना माध्यम हो गया है। एक समय था। जब नेटफ्लिक्स, अमेजॉन प्राइम, यूट्यूब जैसे संसाधन नहीं थे। तब घर बैठे लोगों के मनोरंजन का एकमात्र साधन था। टीवी, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि टीवी आज हमारे परिवार का एक सदस्य बन गया है। जो सबकी पहुंच में भी है और सब का पसंदीदा भी। आज बमुश्किल ऐसा कोई घर होगा। जहां टीवी ना हो। टीवी ने आज निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक हर घर में अपनी एक खास जगह बनाई है। कई घरों में तो सुबह की शुरूआत ही टीवी पर भजन सुनने से होती है। जबकि कुछ लोग देर रात तक टीवी पर डरावनी फिल्में देखना पसंद करते हैं। छोटा हो या बड़ा, बूढ़ा हो या बच्चा , टीवी सबका पसंदीदा हैं। टीवी कभी आपको बोर नहीं होने देता, वह हमेशा हमारे मनोरंजन के लिए तैयार है, चाहे दिन हो या रात, टीवी 24 घंटे आपके मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के लिए हाज़िर हैं। इस सन्दर्भ में हम यह अनुमान लगा सकते हैं की यह उनके मध्य कुछ समय बाद नई मूल्य प्रणाली का विकास करेगा. हम यह जानते हैं की दुनिया की हर चीज लाभदायक और हानिकारक दोनों होती है, अतः टेलीविजन भी इस सन्दर्भ में कोई अपवाद नहीं हो सकता है. यह निश्चित रूप से हमारे समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालता है जैसे नई सूचना के बारे में जानकारी, नयी प्रतिभाओं का विकास संस्कृति का भूमंडलीकरण इत्यादि. नई जानकारी उपलब्ध कराने के प्रति जागरूकता भी कराता है।

❖ अजीत कुमार राणा

मीडिया की सबसे प्रमुख ताकत के रूप में उभरा है टेलीविजन

टेलीविजन आविष्कार सूचना के क्षेत्र में एक क्रांति का आगाज किया है। दूसरी क्रांति का आगमन उस समय हुआ जब वैश्विक स्तर पर टेलीविजन के महत्व के बारे में लोगो को पता चला और लोगो नें इसे स्वीकार कर लिया। हम पूरी तरह से कह सकते हैं की वर्तमान में सूचना तकनीकी नें पूरे विश्व को अपने हाथों में नियंत्रित कर लिया है। वर्तमान में टेलीविजन से जुदा हर नया अनुभव हमारे जीवन को उत्तेजित करता है। यह हमारे जीवन को कई संदर्भो में जैसे-शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य आदि कई क्षेत्रों में शिक्षित करता है। विशेष रूप से, युवाओं के बीच यह काफी प्रभावशाली है। इस सन्दर्भ में हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह उनके मध्य कुछ समय बाद नई मूल्य प्रणाली का विकास करेगा। हम यह जानते हैं की दुनिया की हर चीज लाभदायक और हानिकारक दोनों होती है। ठीक उसी तरह टेलीविजन भी इस सन्दर्भ में कोई अपवाद नहीं हो सकता है। यह निश्चित रूप से हमारे समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालता है । जैसे नई सूचना के बारे में जानकारी, नयी प्रतिभाओं का विकसित करना है। जब संचार और विभिन्न स्तरों पर संवाद की बात आती है तो टेलीविजन में वैचारिक और दार्शनिक महत्व होता है। व्यक्तियों से लेकर राष्ट्र राज्यों तक, टेलीविजन सभी को एक आवाज और छवि देता है या कम से कम उसी के लिए एक संभावना देता है। विभिन्न समूहों और लोगों के बीच नफरत और विभाजन के बढ़ते रूपों के साथ, यह महत्वपूर्ण है कि हम शांति और शांति को प्रोत्साहित करने के लिए अपनी टेलीविजन प्रोग्रामिंग को नया रूप दें। विश्व टेलीविजन दिवस मनाने के पीछे का सबसे बड़ा मकसद है। देश-दुनिया का संदेश लोगों तक पहुंचना। अत्याधुनिक ना होने के कारण आज लोगों ने टेलीविजन की तरफ ध्यान देना कम कर दिया है। जनसंचार का एक ऐसा महत्वपूर्ण यंत्र है जो राष्ट्र के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राष्ट्र के कम पढ़े-लिखे लोगों को इस माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की शिक्षा दी जाती रही है। यह विभिन्न प्रमुख आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूरे विश्व के ज्ञान में वृद्धि करने में मदद करता है। वर्तमान में यह मीडिया की सबसे प्रमुख ताकत के रूप में उभरा है।

❖ ओम प्रकाश

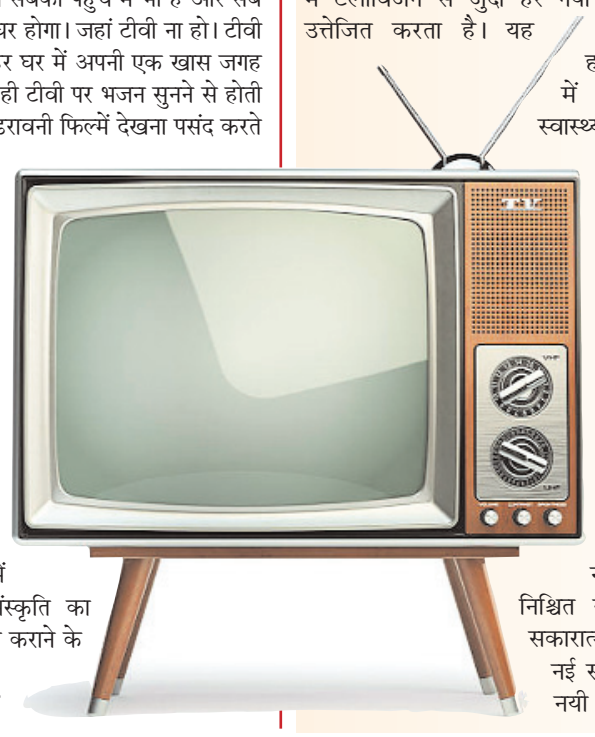

टीवी समाचार व मनोरंजन कार्यक्रम का एक मात्र स्रोत है

टेलीविजन एक आविष्कार है जिसने सूचना और संचार की दुनिया में क्रांति ला दी है। टेलीविजन विज्ञान प्रसार की महत्वपूर्ण गतिविधि है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलूओं पर अनेक भारतीय भाषाओं में निर्मित कार्यक्रम विज्ञान का प्रसार करने के साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जागरूकता के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस डिजिटल युग में, दुनिया के अधिकांश लोग टेलीविजन और नए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। कार्यक्रम विभिन्न चैनलों पर प्रसारित किए जाते हैं। समाचार के लिए समर्पित चैनल हैं। इसी तरह, ऐसे चैनल हैं जो दिलचस्पी के अनन्य क्षेत्रों पर कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। टीवी समाचार और मनोरंजन कार्यक्रम टीवी मनोरंजन का एक स्रोत है। फिल्मों का प्रसारण टीवी पर होता है। दोनों पुरानी ब्लैक-एंड-व्हाइट फिल्में और नवीनतम रंगीन फिल्में हैं जो दिखाई जाती हैं। संगीत-प्रेमियों को टीवी पर प्रसारित होने वाले लाइव और रिकॉर्ड किए गए संगीत कार्यक्रमों को देखने का अवसर मिलता है। नृत्य और थिएटर कार्यक्रम भी हैं जिन्हें टीवी पर देखा जा सकता है। पर्यटन स्थलों पर कार्यक्रम भी टेलीविजन पर दिखाए जाते हैं। टीवी चैनल भी हैं जो आधुनिक जीवन शैली पर कार्यक्रम प्रदर्शित करते हैं। फिल्मों और कार्टून जैसे बच्चों के लिए कार्यक्रम हैं जो टेलीविजन पर भी प्रसारित किए जाते हैं। स्कूल और कॉलेज स्तर के छात्रों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम भी उपलब्ध कराए जाते हैं। टीवी दुनिया भर से प्रामाणिक समाचारों का स्रोत भी है। समाचार चैनल हैं जो समाचार बुलेटिन प्रसारित करते हैं। समाचार चैनल उन पत्रकारों को नियुक्त करते हैं जो कार्रवाई के दृश्यों से दुनिया भर में रिपोर्ट करते हैं। वास्तविक चलती छवियों के साथ समाचार रिपोर्ट और समाचार चैनलों पर विशेषज्ञ विचारों को भी देखा जा सकता है। यह विद्युत-संचालित उपकरण है जो न केवल हमें सुनने के लिए बल्कि घटनाओं को देखने की भी सुविधा देता है। यह ध्वनि के साथ-साथ चलती छवियों को दिखाता है। टेलीविजन बीम दुनिया भर से कार्यक्रम करता है ताकि हम अपने घरों में आराम से बैठकर होने वाली घटनाओं को देख सकें।

❖ ओम प्रकाश प्रजापति

प्रचार प्रसार का एक माध्यम है टेलीविजन

टेलीविजन पर विज्ञापनों का प्रसारण भी प्रारंभ हो गया है। जिससे वस्तु निमार्ताओं और उपभोक्ताओं दोनों को लाभ होता है। दूरदर्शन राष्ट्रीय एकता और समाज सुधार का उत्तम साधन बन सकता है। दूरदर्शन का प्रचार पलामू सहित पूरे भारत में अभी कुछ बड़े नगरों में भी हो गया है। वह दिन आ गए हैं, जब समस्त लोग अपना टेलीविजन पर प्रचार व प्रसार कर के अच्छे अच्छे मूकाम पर विराजमान हो गए हैं। मानव आदि काल से ही सुख और आनंद का अभिलाषी रहा है। सुख साधनों को बढ़ाने के लिए वह प्रारंभ से ही नित्य नवीन आविष्कार कर रहा है। विज्ञान ने तो भौतिक सुविधाओं की वृद्धि में तो आश्चर्यजनक योगदान दिया है। आज का विज्ञान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुका है। मनोरंजन और ज्ञान के क्षेत्र में उसने जो नवीन आविष्कार किए हैं, उनमें दूरदर्शन और टेलीविजन मुख्य हैं। हमारे देश में इसका प्रचार कई वर्षों से है। ऐसे में कह सकते हैं कि अब तो देश में दूरदर्शन केंद्रों का जाल सा फैल रहा है। आज विज्ञान विश्व में अपनी एक अलग मुकाम हासिल कर लिया है। विज्ञान के अनेकों उपकरणों के कारण, आज मानव का जीने का तरीका बदल रहा है। एक सामान्य मनुष्य की दिनचर्या को यदि देखा जाए तो बिना विज्ञान के उनका जीवन उन्हें व्यर्थ सा लगने लगता है। विज्ञान के अनेकों उपकरणों में टेलीविजन भी एक विज्ञान के आविष्कारों का हिस्सा है। लेकिन आज भी कई गांवों में और सुदूर इलाकों में जहां पर बिजली हैं। वहां लोग टेलीविजन के जरिये अपना दिन गुजारते है। कई गांवों और कस्बो के लोगों के पास टेलीविजन ही एक ऐसा साधन है जिससे वे अपने दिनचार्य में मनोरंजन का आनंद लेते हुए अपना सरल सा जीवन जीते हैं। इस लिए आज हम कह सकते हैं कि टेलीविजन पर आने वाली फिल्म से लेकर राजनीति तक प्रसारित होने वाले प्रसार प्रचार से व्यक्ति को पहचानने में खुब मददगार साबित हो रहा है। टेलीविजन के आविष्कार ने सूचना के क्षेत्र में एक क्रांति का आगाज किया था। दूसरी क्रांति का आगमन उस समय हुआ, जब वैश्विक स्तर पर टेलीविजन के महत्व के बारे में लोगों को पता चला और लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया। चूंकि मिडिया ने वर्तमान में हमारे जीवन में इतना अधिक हस्तक्षेप कर दिया है कि हमें इसके महत्व के बारे में काफी जानकारी नहीं मिल पाती। वर्तमान में हम इसके महत्व को नकार नहीं सकते। हमें इसके महत्व को समझते हुए इसका व्यापक इश्तेमाल करना चाहिए ताकि मीडिया के सूचना से सम्बंधित दुरुपयोग को रोका जा सके। साथ ही इसके प्रभाव को कम किया जा सके। भारत एक ऐसा लोकतान्त्रिक राष्ट्र है जहां टीवी पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम के विषय में सरकार को पूर्ण अधिकार प्राप्त है। केबल टेलीविजन नेटवर्क अधिनियम के तहत टीवी प्रसारण के लिए कुछ नियम निर्धारित है। जिससे किसी भी जाति, धर्म और संप्रदाय की भावनाओं को ठेस ना पहुंचे। वर्तमान समाज में सूचना प्रौद्योगिकी और संचार के इस्तेमाल ने हमारी निर्भरता को मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, व्यक्तिगत संबंधों, यात्रा आदि के सन्दर्भ में इस पर निर्भर बना दिया है। वहीं आम नागरिकों में वैज्ञानिक चेतना का विकास हो, सामाजिक कुरीतियों रूढ़िवादी मान्यताओं के प्रति लोगों की सोच को बदला जा सके। इसका उदाहरण प्रत्यक्ष है कई ऐसे टेलीविजन पर धारावाहिक प्रकाशित किए गए जिन्होंने समाज की बुराइयों को जनता प्रत्यक्ष रूप से जनता के सामने रखा जाए। इसके अतिरिक्त डिस्कवरी, नेशनल जियोग्राफिक चैनल के माध्यम से लोगो को वैज्ञानिक ज्ञान में वृद्धि हो। टेलीविजन पर आप घर बैठे कई सारे मनोरंजक कार्यक्रम देख सकते हैं। टीवी पर हर आयु वर्ग के हिसाब से चैनल आते हैं, जिनमें धारावाहिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता हैं। चाहे छोटे बच्चों के लिए कार्टून हो, बड़ो के लिए न्यूज चैनल, या महिलाओं के लिए सास-बहू वाले सीरियल, टीवी सबका ध्यान रखता हैं, कि कोई बोर ना हो। टेलीविजन सिर्फ मनोरंजन का साधन ही नहीं अपितु शिक्षा का भी सशक्त माध्यम है। इसका उदाहरण हमने कोरोना काल में भी देखा था। जब स्कूल, कॉलेज बंद हो गए थे। लॉकडाउन लग गया था। तब दूरदर्शन पर शैक्षणिक कार्यक्रम चलाए गये थे। जिसके माध्यम से गांवो में रहने वाले बच्चों को घर बैठे शिक्षा उपलब्ध कराई गई थी।

❖ ओपी

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap

Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA

" Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट

Facilities

- आरसीटी
- पायरिया का ईलाज
- टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
- स्माईल डिजाइन
- इनविजिवल क्लिप
- दंत रोपण
- फिक्स दाँत लगाना
- अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

न्यूज गैलरी

कमला हैरिस ने जिनपिंग से की मुलाकात

बैंकॉक (एजेंसी)। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ व्यापक वार्ता के कुछ दिनों बाद शनिवार को चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग से मुलाकात की। डॉन अखबार के मुताबिक व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने कहा कि हैरिस ने एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) फोरम के शिखर सम्मेलन के दौरान बैंकॉक में एक रिट्रीट में प्रवेश करते हुए चीनी नेता से बात की। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि उपराष्ट्रपति ने श्री बाइडेन के संदेश को पुष्ट किया कि हमें अपने देशों के बीच प्रतिस्पर्धा को जिम्मेदारी से प्रबंधित करने के लिए संचार की खुली लाइनें बनाये रखनी चाहिए। बैठक के बाद अमेरिका ने कहा कि वह चीन को उत्तर कोरिया पर सभी तरह के लगाम लगाने के लिए और अधिक करने की तलाश कर रहा है। उत्तर कोरिया ने शुक्रवार को एक बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया था, जिसे अमेरिकी और जापानी अधिकारियों ने कहा कि वह अमेरिका की मुख्य भूमि को मार गिराने में सक्षम है।

आत्मसमर्पण के बाद रुस के सैनिकों की हत्या

मॉस्को (एजेंसी)। सीमांत पूर्वी यूक्रेन से एक वीडियो सामने आया है जिसमें सैनिकों के एक समूह को आत्मसमर्पण करते हुए दिखाया गया है और उसके अंत में उनकी मृत्यु नजर आ रही है। रूस ने फुटेज पर प्रतिक्रिया व्यक्त की है और यूक्रेन पर युद्ध के रूसी कैदियों को मारने का आरोप लगाया है, जो एक युद्ध अपराध होगा। यूक्रेन ने अभी तक आरोपों का जवाब नहीं दिया है। यह घटना 12 नवम्बर को या उससे पहले लुहांस्क क्षेत्र के सीमावर्ती गांव मकीवका में हुई थी। एक रिपोर्ट के अनुसार उस दिन और रविवार को यूक्रेन समर्थक साइटों पर ड्रोन फुटेज दिखाई दिये, जिसमें कई वर्दीधारी सैनिकों के शव खेत में पड़े हुए दिखाई दे रहे थे। इस दृश्य के फुटेज का एक हिस्सा यूक्रेन के रक्षा मंत्रालय द्वारा मकीवका क्षेत्र में ऑनलाइन सैन्य अभियानों के बारे में पोस्ट किये गये एक वीडियो में भी दिखायी देता है। कुछ सोशल मीडिया पोस्ट का सुझाव है कि इसके लिए मोर्टार हमले जिम्मेदार थे, लेकिन घटनाओं को रूस समर्थक आउटलेट्स द्वारा चुनौती दी गयी है जो दावा करते हैं कि सैनिकों को यूक्रेन के 80वें हवाई हमला ब्रिगेड सैन्य कर्मियों द्वारा गोली मार दी गयी थी। फिर 17 नवम्बर को और वीडियो फुटेज सामने आये। वीडियो में कैदी यूक्रेन की भाषा बोलते हैं, जबकि कैदियों की वर्दी रूसी दिखती है।

भारत को यूएनएससी का स्थायी सदस्य बनाना चाहता है फ्रांस

कहा- ताकतवर देशों की बढ़े भागीदारी, ब्रिटेन ने भी की थी मांग

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। फ्रांस ने भारत को यूएन सिक्योरिटी काउंसिल का स्थायी सदस्य बनाने की पेशकश की है। इसके पहले 18 नवम्बर को ब्रिटेन ने भी भारत के पक्ष में यह मांग उठायी थी। यूनाइटेड नेशन (यूएन) में फ्रांस की प्रतिनिधि ने कहा है कि समय आ गया है जब उभरते ताकतवर देशों की दुनिया की सबसे पावरफुल संस्था में भागीदारी बढ़े। फ्रांस ने न सिर्फ भारत बल्कि जर्मनी, ब्राजील और जापान को भी सिक्योरिटी काउंसिल में स्थायी सदस्य बनाने की मांग की है। यूएन जनरल असेंबली की एक मीटिंग में नैथिली ब्रोडहर्स्ट ने कहा कि फ्रांस लगातार यह मांग उठा रहा है। हम चाहते हैं कि काउंसिल दूसरे देशों को भी साथ लेकर चले जिससे यह संस्था और ज्यादा मजबूत हो। उन्होंने यह भी कहा कि सिक्योरिटी काउंसिल के काम को और बेहतर बनाने के लिए इसमें 25 सदस्य जोड़े जा सकते हैं। जिनमें अफ्रीकी देशों को भी शामिल किया जाये। नैथिली ने जियोग्राफिकल रिप्रेजेंटेशन के आधार पर सिक्योरिटी काउंसिल में सदस्यों को जोड़ने की बात कही है।

भारत कर रहा है यूएनएससी में सुधार की मांग

सिक्योरिटी काउंसिल में बदलावों को लेकर यूएन में भारतीय राजनयिक रुचिरा कंबोज ने गुरुवार को मुद्दा उठाया था। जिसमें उन्होंने यूएनएससी में सामान प्रतिनिधित्व की बात कही थी। बदलावों में जितनी देरी होगी उससे संस्था और दुनिया को उतना ही नुकसान भी होगा। हालांकि, ऐसा पहली बार नहीं है जब भारत की तरफ से इस तरह के सुधारों की मांग उठायी गयी हो। समय-समय पर यूएनएससी में इन बदलावों का भारत समर्थन करता रहा है।

यूएनएससी का स्थायी सदस्य क्यों नहीं भारत?

भारत काफी समय से सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने का प्रयास कर रहा है, लेकिन भारत की राह में सबसे बड़ा रोड़ा चीन है। चीन के अलावा फ्रांस, अमेरिका, रूस और ब्रिटेन भारत को सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने पर अपनी सहमति जता चुके हैं, लेकिन चीन अलग-अलग बहानों से भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करता रहा है। इसके अलावा कई बार यूएनएससी के स्ट्रक्चर में बदलाव की मांगें भी उठती रही हैं। तर्क दिया जाता है कि यूएनएससी में विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व कम है, लेकिन स्थायी सदस्य नहीं चाहते कि इसमें किसी तरह का बदलाव हो और किसी दूसरी देश को वीटो पॉवर मिले। भारत के अलावा जापान, जर्मनी और ब्राजील भी सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने का प्रयास कर रहे हैं।

भारत फिर से विश्व गुरु बनने की राह पर अग्रसर : धनखड़

झुंझुनू (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने युवाओं को स्वामी विवेकानंद के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेने का आह्वान करते हुए कहा कि विवेकानंद का भारत में विविध एकता का एक सपना था जो वर्तमान समय में साकार हो रहा है। श्री धनखड़ शनिवार को झुंझुनू जिले के खेतड़ी से विवेकानंद संदेश यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह संदेश यात्रा 50 दिन में पूरे प्रदेश में भ्रमण करेगी।

खेतड़ी के पोलोग्राउंड खेल मैदान में इस अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते श्री धनखड़ ने कहा कि देश के सांस्कृतिक मंत्रालय की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत खेतड़ी से शुरू की जा रही विवेकानंद संदेश यात्रा युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। उन्होंने कहा कि भारत पूरे विश्व में आज पांचवीं अर्थव्यवस्था बन चुका है तथा जल्द ही तीसरी अर्थव्यवस्था बनकर दिखायेंगे। भारत आज अपने दम पर हर क्षेत्र में नये आयाम स्थापित कर रहा है। किसी भी काम के लिए आज हमारा देश दूसरे देशों के मोहताज नहीं है। जिन लोगों ने इस देश पर राज किया भारत उनको पछाड़कर बड़ी शक्ति बनने जा रहा है। भारत में लगातार हो रहे विकास की जबरदस्त यात्रा तेजी से चली जा रही है। लेकिन कुछ लोग भ्रमित होकर बिना कुछ समझे अनर्गल बातें करते हैं।

पीएम मोदी ने अरुणाचल में किया एयरपोर्ट का उद्घाटन

हमारा काम अटकाना, लटकाना, भटकाना नहीं : पीएम

ईटानगर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को अरुणाचल प्रदेश में एयरपोर्ट का उद्घाटन किया। ये अरुणाचल का पहला ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट है, जिसका नाम डोनी पोलो एयरपोर्ट है। ईटानगर में बना ये एयरपोर्ट 640 करोड़ की लागत से बनकर तैयार हुआ है। इसके अलावा उन्होंने ईटानगर में 600 मेगावाट का कामेंग हाइड्रो पावर स्टेशन राष्ट्र को समर्पित किया। मोदी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा जनता जानती है कि हम एक कार्य संस्कृति लेकर आये हैं, जहां जिन परियोजनाओं का हमने शिलान्यास किया है, उनका उद्घाटन भी करते हैं। हमारा काम अटकाना, लटकाना, भटकाना नहीं है, इसका युग चला गया है।

690 एकड़ में फैला है एयरपोर्ट

इस एयरपोर्ट की आधारशिला पीएम ने 2019 में रखी थी। डोनी पोलो एयरपोर्ट का नाम अरुणाचल प्रदेश में सूर्य (डोनी) और चंद्रमा (पोलो) के प्रति सदियों पुरानी स्वदेशी श्रद्धा को दर्शाता है। यह एयरपोर्ट करीब 690 एकड़ में फैला है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इसके निर्माण में 640 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। 2300 मीटर रनवे के साथ यह एयरपोर्ट सभी मौसम में ऑपरेट हो सकेगा। एयरपोर्ट पर इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम लगाया गया है, जिसमें एक ग्लाइडपथ, एक लोकलाइजर और दूरी मापने के डिवाइस शामिल हैं। इससे हर मौसम में एयरपोर्ट पर ऑपरेशन में मदद मिलेगी। राज्य में मौसम का सटीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता है, ऐसे में इस तरह की डिवाइस की बहुत जरूरत थी।

इजराइल ने फिलिस्तीन सीमा पर तैनात की रोबोटिक गन

तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइल में आजादी के बाद पहली बार धार्मिक कट्टरवादी सरकार बनने जा रही है। इजराइल में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने देश की सीमा पर तीन रोबोटिक गन लगवायी हैं। इनमें से दो वेस्ट बैंक में लगायी गयीं हैं, जो फिलिस्तीन और इजराइल के बीच का विवादित क्षेत्र है। यहां अक्सर फिलिस्तीनी इजराइल के खिलाफ विरोध जताते हैं। इन रोबोटिक गन्स के जरिये आंसू गैस, स्मोक ग्रेनेड (धुआं फैलाने वाला बम) और स्पंज बुलेट छोड़े जायेंगे। ये गन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टेक्नोलॉजी से टारगेट तय करती हैं। ये गन जानलेवा तो नहीं, लेकिन बहुत घातक हैं।

आतंक पर लगाम के लिए फिलिस्तीनी सीमा ब्लॉक होगी : नेतन्याहू खुले तौर पर फिलिस्तीन विरोधी कट्टरपंथियों के साथ हैं। एक्सपर्ट्स का कहना है कि नेतन्याहू फिलिस्तीनियों को रोकने के लिए बनी दीवार का काम आगे बढ़ा सकते हैं। इधर, फिलिस्तीनी मानवाधिकार समूहों का कहना है कि इजराइल के चुनावी लोकतंत्र का एक ही मकसद है- फिलिस्तीनी अरब लोगों का दमन और यहूदियों का वर्चस्व बनाना।

रनवे पर प्लेन और ट्रक की टक्कर बाल-बाल बचे सवार 108 लोग

लीमा (एजेंसी)। पेरू की राजधानी लीमा के एयरपोर्ट पर एक बड़ा हादसा

■ ट्रक को रौंदता चला गया विमान, विंग में लगी आग

टल गया। रनवे पर फायर बिग्रेड का एक ट्रक प्लेन से जा टकराया। इस हादसे में ट्रक में सवार दो दमकलकर्मियों की मौत हो गयी। टक्कर के बाद विमान में आग लग गयी, लेकिन यह अच्छा रहा कि इसमें सवार यात्रियों को कोई नुकसान नहीं हुआ। विमान में 102 पैसेंजर और छह क्रू मेंबर सवार थे। सभी बाल-बाल बच गये। लीमा के जॉर्ज चावेज इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर लातम एयरलाइंस की फ्लाइट टेकऑफ कर रही थी। तभी रनवे पर सामने से एक ट्रक आ रहा था। जैसे ही विमान पास आया ट्रक ड्राइवर ने बचने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। प्लेन ट्रक को रौंदता चला गया। विमान का एक विंग जमीन से घिसटा और उसमें आग लग गयी।

कुछ देर के लिए एयरपोर्ट बंद रहा

एयरपोर्ट के एक अफसर ने बताया कि हादसे के बाद एयरपोर्ट के सभी ऑपरेशन कुछ वक्त के लिए सस्पेंड कर दिये गये। हादसे में किसी भी यात्री को चोट नहीं आयी है। हमने तुरंत कार्रवाई कर सभी पैसेंजर्स को सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

पहली बार बेटी के साथ नजर आये किम जोंग

प्योंगयांग (एजेंसी)। नॉर्थ कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन और उनकी बेटी की एक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। ये किम जोंग की बेटी की पहली पब्लिक अपियरेंस है। इसके पहले दुनिया ने कभी भी उनकी बेटी की नहीं देखा था। हालांकि, मीडिया में उनकी नौ साल की बेटी का नाम नहीं बताया गया है। नॉर्थ कोरिया की एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक, तस्वीर में किम अपनी बेटी का हाथ पकड़े हुए हैं। व्हाइट कलर की जैकेट पहनी उनकी बेटी और किम एक मिलिट्री फैसिलिटी के बाहर खड़े हैं। जिस मिलिट्री फैसिलिटी के बाहर दोनों साथ खड़े हैं, वहां से शुक्रवार यानी 18 नवम्बर को बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया गया था। इस दौरान किम की पत्नी री सोल जू भी साथ थीं।

कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना भी हो सकता है सीढ़ी चढ़ने में परेशानी का कारण

- आरएनएम

नयी दिल्ली। दौड़ने, चलने या सीढ़ियां चढ़ने में परेशानी होने पर ज्यादातर लोग गठिया होने की आशंका जताते हैं। लेकिन यदि आपके कोलेस्ट्रॉल का स्तर अक्सर बढ़ा हुआ रहता है, तो इस वजह से भी आपको पैरों की दिक्कत हो सकती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या के शिकार लोगों में पेरिफेरल आर्टरी डिजीज (पीएडी) का खतरा अधिक होता है, जिसमें हाथों और पैरों से संबंधित कई प्रकार की दिक्कत होती रह सकती हैं। वैसे तो हाई कोलेस्ट्रॉल की समस्या को हृदय रोगों और धमनियों की दिक्कत से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन इसका असर शरीर पर और भी कई प्रकार से हो सकता है। अध्ययनों में पाया गया है कि कोलेस्ट्रॉल की समस्या पर समय रहते ध्यान न दिया जाये या इसका उपचार नहीं किया जाये तो इसके कारण धमनियों के विकार विकसित हो सकते हैं। इस तरह के विकारों के कारण मांसपेशियों में दर्द और ऐंठन होने का जोखिम रहता है।

कार्डियोवास्कुलर लैब्स ऑफ अमेरिका (सीएलए) के अनुसार, लगातार कोलेस्ट्रॉल के स्तर में बनी रहनेवाली वृद्धि, समय के साथ पेरिफेरल आर्टरी डिजीज (पीएडी) के खतरे को बढ़ा सकती है। इसके कारण पैरों में भारीपन महसूस होता रहता है, इसे शुरुआती संकेत माना जाता है। हाई कोलेस्ट्रॉल के कारण होनेवाली पीएडी की दिक्कत पैरों में कमजोरी, सुन्न होने, त्वचा के रंग में बदलाव, सीढ़ियां चढ़ने के बाद पैरों में तेज ऐंठन या फिर लिखने-टाइपिंग के दौरान हाथों में दर्द और ऐंठन की भी समस्या हो सकती है। चिकित्सकों के अनुसार, पेरिफेरल आर्टरी डिजीज धमनी की दीवारों पर फैट, कोलेस्ट्रॉल के निर्माण के कारण होता है, इस प्रक्रिया को एथेरोस्क्लेरोसिस कहा जाता है। यह धमनियों में रक्त के प्रवाह को भी कम कर देती है।

मोटापा के शिकार और 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के लोगों में इस समस्या का जोखिम अधिक देखा गया है। इससे संबंधित समस्याओं से बचाव के लिए कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल में रखने वाले उपाय करना बहुत आवश्यक माना जाता है। दिनचर्या और आहार में बदलाव के माध्यम से कोलेस्ट्रॉल के खतरे से बचाव किया जा सकता है। मायोक्लीनिक की रिपोर्ट के अनुसार कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने के लिए रोज कम से कम 30 मिनट तक व्यायाम की आदत डालें। फलों, सब्जियों व साबुत अनाज के साथ आहार में नमक कम लें। स्वस्थ वजन बनाये रखें, धूम्रपान से दूरी बनाने और स्वस्थ आहार पर ध्यान दें तो कोलेस्ट्रॉल और इससे संबंधित समस्याओं के जोखिम को कम किया जा सकता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार हाई कोलेस्ट्रॉल के कारण रक्त वाहिकाओं में फैटी जमाव का जोखिम अधिक होता है, जैसे-जैसे ये जमाव बढ़ता जाता है, यह धमनियों में पर्याप्त रक्त के प्रवाह को कठिन बनानेवाली स्थिति हो सकती है। इससे दिल का दौरा पड़ने का जोखिम बढ़ जाता है।

खशोगी मर्डर केस में सऊदी प्रिंस को रियायत

वॉशिंगटन (एजेंसी)। व्हाइट हाउस ने 18 नवम्बर को कहा कि अमेरिका ने खशोगी मर्डर केस में सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान को छूट दी है। यानी उन पर उस केस को लेकर मुकदमा नहीं चलाया जायेगा। इस फैसले के बाद बाइडेन सरकार की आलोचना होने लगी। जिसकी सफाई में अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता ने कहा कि ये पहली बार नहीं है जब किसी राष्ट्राध्यक्ष को किसी तरह की छूट दी गयी हो।

सऊदी क्राउन प्रिंस ने दी थी खशोगी की हत्या की मंजूरी

पिछले साल अमेरिका की एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि वॉशिंगटन पोस्ट के सऊदी पत्रकार जमाल खशोगी की हत्या की योजना को सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने मंजूरी दी थी। रिपोर्ट में यह भी बताया कहा गया कि क्राउन प्रिंस खशोगी को सऊदी अरब के लिए खतरा मानते थे। ट्रम्प जब सत्ता में थे तो उनके सऊदी प्रिंस से करीबी रिश्ते रहे और यही वजह है कि उस दौरान खशोगी की हत्या से जुड़ी अमेरिकी इंटेलिजेंस की रिपोर्ट जारी नहीं की गयी। बाइडेन राष्ट्रपति बने और मानवाधिकारों पर उनका रुख हमेशा से सख्त रहा है। फिर रिपोर्ट जारी की गयी। इस इंटेलिजेंस रिपोर्ट में सीधे तौर पर खशोगी की हत्या के लिए प्रिंस सलमान का नाम लिया गया था।

दोनों देशों के बाइलैटरल रिलेशन से लेना-देना नहीं : व्हाइट हाउस

कुछ समय से अमेरिका और सऊदी अरब के रिश्ते ठीक नहीं चल रहे हैं। माना जा रहा है कि रिश्तों को पटरी पर लाने के लिए प्रिंस सलमान को छूट दी गयी है। हालांकि, व्हाइट हाउस के नेशनल सिक्योरिटी स्पोक्सपर्सन जॉन कर्बी का कहना है कि इन सब का दोनों देशों के रिश्तों से कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन तो यूएस और सऊदी अरब के रिलेशन पर दोबारा विचार कर रहे हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि क्रूड ऑयल उत्पादक देशों के संगठन ओपेक ने पांच अक्टूबर को तेल उत्पादन में कटौती करने का फैसला किया था। इससे अमेरिका बेहद खफा है। सऊदी अरब इस समूह का प्रमुख सदस्य है।

न्यूज गैलरी

डॉ. सबा अहमद के निधन से पूरा राजद परिवार दुखी और मर्माहत

रांची। डॉ. सबा अहमद के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए राजद के कार्यकारी अध्यक्ष संजय सिंह यादव ने कहा कि इनका निधन एक राजनीतिक क्षति है इनके निधन से मैं मर्माहत हूं दुखी हूं ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एव उनके शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति दें। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रधान महासचिव संजय प्रसाद यादव ने डॉ सबा साहब के निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि संयुक्त बिहार में हमलोगो के पार्टी के माननीय मंत्री थे एक सच्चे और मिलनसार प्रवृति के धनी व्यक्ति थे। उनका निधन अत्यंत दुखदायी है, मैं दुखी हूं ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एव उनके दुखी परिवार को दुख सहने की शक्ति दें। उनके निधन पर राजद के पूर्व सांसद घूरन राम, पूर्व मंत्री सुरेश पासवान, मुख्य प्रवक्ता डॉ मनोज कुमार, लक्ष्मण यादव, डॉ मुतुर्जा खान, घनश्याम चौधरी, अजय चंद्रवंशी, हरदेव साहू, पिंकी यादव सहित अन्य नेताओं ने गहरी संवेदना व्यक्त किया है।

रांची ट्रांसमिशन जोन वन में कार्यरत विद्युत कर्मियों की समस्याओं से अवगत हुए अजय राय

रांची। झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ के अध्यक्ष अजय राय शनिवार को रांची ट्रांसमिशन वन के अंतर्गत आने वाले हटिया ग्रिड का दौरा किया एवं वहां कार्यरत विद्युत कर्मियों से उनकी समस्याएं सुनी। विद्युत कर्मियों ने बताया कि 16 नवंबर से नई एजेंसी गीत राज प्राइवेट लिमिटेड ने रांची ट्रांसमिशन जोन 1 का टेंडर लिया है मगर अभी तक किसी कर्मी को नियुक्ति पत्र नहीं दिया है जिसके कारण काम करने में असुविधा हो रही है। साथ ही विद्युत कर्मियों ने 2017 से अब तक एरियर नहीं मिलने की भी बात कही। झारखंड ऊर्जा विकास श्रमिक संघ के अध्यक्ष अजय राय ने मौके पर रांची ट्रांसमिशन जोन वन के महाप्रबंधक सह मुख्य अभियंता से दूरभाष पर बात की और इन समस्याओं का निराकरण जल्द से जल्द किए जाने की बात रखी । अजय राय ने कहा कि बिजली एक आवश्यक सेवा है जिसे किसी भी रूप में बाधित नही किया जा सकता और इस कार्य को आप सभी कर्मी ईमानदारी पूर्वक कर रहे हैं जरूरत है संबंधित अधिकारियों को आपके लिए भी ध्यान रखें। इस अवसर पर आनंद प्रमाणिक, राहुल कुमार, बिनोद कुमार,मुकेश साहू सहित अन्य कर्मी शामिल हुए।

मानव तस्करी का बदलता स्वरूप अब ब्लैकमेल कर हो रही वसूली

नवीन मेल संवाददाता

रांची। झारखण्ड में मानव तस्करों का एक ऐसा गिरोह सक्रीय है जो अब घरों में लड़कियो से चोरी के साथ साथ ब्लैकमेलिंग कर पैसे ठगने का काम कर रहा है।यह गिरोह प्लेसमेंट एजेंसियो के जरिये लोगो के घरों में घरेलू नौकरानी का काम करवाने के लिए बालिग लड़कियों को भेजते है और फिर उनसे उन्ही घरों में चोरी की वारदातों को अंजाम दिलवाते है।

ब्लैकमेल कर भी ठगते है पैसा : मानव तस्करों के खिलाफ लगातार अभियान छेड़ने वाले सीडब्ल्यूसी खूंटी के सदस्य वैधनाथ कुमार के अनुसार यह नया ट्रेंड चल रहा है जिसके जरिए मानव तस्कर लोगों से ठगी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं।वैधनाथ कुमार के अनुसार मानव तस्कर जिन लड़कियो को पेलसमेंट एजेंसियों के सहयोग से लोगों के घरों में भेजते हैं वह उन लड़कियों को पहले ब्लैकमेलिंग में ट्रेंड करते फिर उन्हें काम करने भेजते है ,घर पहुचने के बाद काम के लिए गई लडकिया अपने ही मालिक पर छेड़खानी का आरोप लगाती है ,और फिर उसी छेड़खानी की पुलिस रिपोर्ट करने की धमकी देकर पैसे की वसूली करते है।

अमीर निशाने पर : झारखंड मानव तस्करी के लिए पहले से ही बदनाम है लेकिन अब मानव तस्करों का यह नया चार लोगों के लिए बड़ी समस्या बन रहा है, खासकर अमीर लोगों के लिए तो यह मुसीबत ही बनता जा रहा है। राजधानी रांची में कई ऐसे मामले रिपोर्ट किए गए हैं, हालांकि कुछ लोगों ने सिर्फ पुलिस को सूचना दी और आगे की कागजी कार्रवाई से इंकार कर दिया। रांची के अरगोड़ा थाने में भी मानव तस्करों के जरिये ठगी की वारदातें रिपोर्ट हुई है। पिछले महीने ही अरगोड़ा थाना में दर्शन प्लेसमेंट सर्विस एजेंसी के द्वारा ठगी किए जाने को लेकर मामला दर्ज किया गया था। अशोक नगर के रहने वाले प्रदीप कुमार सिंह ने दर्शन प्लेसमेंट एजेंसी सर्विस के खिलाफ घरेलू नौकरानी भेजकर घर में चोरी करवाने का मामला दर्ज करवाया था।

रांची सहित कई बड़े शहरों में सक्रिय हैं गिरोह

दरअसल झारखंड में एक ऐसा गिरोह कार्य कर रहा है जो फर्जी प्लेसमेंट एजेंसी के जरिए घरों में घरेलू कामगार देने का वादा करता है ,बकायदा पेन पेपर पर सब कुछ होता है। घर में काम करने वाला चाहे लड़की हो या लड़का बकायदा कॉन्ट्रैक्ट भरकर ही उसे लोग अपने घरों में काम के लिए ले जाते हैं। दो-तीन महीनों तक तो यह बिल्कुल सही तरीके से काम करते हैं लेकिन जैसे ही मौका हाथ लगता है यह घर के कीमती गहने और नगदी लेकर फरार हो जाते हैं। रांची के अशोक नगर इलाके से इस तरह के लगभग आधा दर्जन मामले सामने आए हैं हालांकि थाने में मात्र दो मामले ही रिपोर्ट किए गए हैं। झारखंड का यह गिरोह दिल्ली मुंबई जैसे शहरों में भी इसी मॉडस इसके तहत काम कर रहा है।

झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा 54 उप जातियों का एक सामाजिक संगठन है: महेश्वर साहू

कांके। दानवीर भामाशाह नगर रिंग रोड सुकुरहुट्टू हरिनाथ ट्रेडर्स परिसर पर झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा का विचार गोष्ठी बैठक रखा गया। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहू ने कहा झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा 54 उप जातियों का एक सामाजिक संगठन है। जिसकी आबादी झारखंड प्रदेश में लगभग 40 प्रतिशत से अधिक है, मोर्चा का मुख्य उद्देश्य आबादी के अनुसार अपने वैश्य समाज को राजनीतिक भागीदारी एवं सामाजिक न्याय की लड़ाई के तहत आरक्षण के साथ हर क्षेत्र में संवैधानिक अधिकार दिलाना है। श्री साहू ने कहा कि देश की आजादी के लिए बलिदान की बात हो या झारखंड अलग आंदोलन राज्य की लड़ाई वैश्य समुदाय का भागीदारी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। वर्तमान में वैश्य समुदाय राष्ट्रवाद एवं हिंदुत्व के नाम पर राजनीतिक शोषण एवं ठगी का शिकार हो रहे हैं। इस पर सभी राजनीतिक दलों को गंभीरता से विचार करना होगा। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष हीरानाथ साहू, इंदु भूषण गुप्ता,हरिनाथ साहू, लक्ष्मण साहू, अनिल वैश्य, दशरथ साहू धनेश्वर साहू, पंकज साहू, पवन साहू एवं रामेश्वर साहू उपस्थित हुए।

एक्सआईएसएस में मार्केटिंग मैनेजमेंट प्रोग्राम का एलुमनीमीट संपर्क 2022 आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

रांची। जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने एलुमनीमीट संपर्क 2022 का आयोजन विगत शुक्रवार को कैंपस में किया गया। मार्केटिंग मैनेजमेंट प्रोग्राम और मार्कबज्ज, द मार्केटिंगक्लब, द्वारा आयोजित इस पूर्ववर्ती छात्रों के कार्यक्रम में 30 से अधिक पूर्व छात्रों को पुरानी यादों को संजोने और सभी के साथ अपनी जीवन यात्रा साझा करने का अवसर दिया। एलुमनीमीट की औपचारिक शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन और एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफमारियानुस कुजूर एसजे के स्वागत नोट के साथ शुरू हुई, जिसमें उन्होंने पूर्व छात्रों और सभी उपस्थित

लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया। अपने संबोधन में, डॉ कुजूर ने जोर देते हुए कहा, पूर्वछात्रों ने कॉर्पोरेटइंटरफेस, एलुमनीरिलेशन और छात्रों के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा में बेहतरीन योगदान दिया है। उन्होंने छात्रों को अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करने के लिए अपनी रुचि व्यक्त करने के लिए पूर्व छात्रों के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ प्रदीप केरकेट्टाएसजे, सहायक निदेशक, एक्सआईएसएस ने अपने विचार साझा किए जहां उन्होंने छात्रों को दुनिया में होने वाले परिवर्तनों के साथ अपडेटरहने के लिए कहा।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER WATERWAYS DIVISION, GARHWA

E-PROCUREMENT NOTICE (2nd Call)

TENDER REF.No-WRD/WWDIV GARHWA/01SBD/2022-23 DATE 18.11.2022

1	Name of work	Anti-erosion/flood protection work in left bank of North Koel river near village Mokhapi to Sundipur in Kandi Block of Garhwa District.
2	Estimated cost.(Rs)	Rs. 11,56,28,455.00
3	Time of completion	300 Days (Three Hundred Days)
4	Period of availability of Bidding document on website	22.11.2022 at 5.00 pm to 14.12.2022 up to 5.00 pm
5	Pre Bid conference	N/A
6	Place of opening of Bids	C.E.WRD Medininagar
7	Period of online submission of Bids	22.11.2022 at 5:00 pm to 14.12.2022 up to 5.00 pm
8	Date and Time of opening of Technical Bids	19.12.2022 at 3:00pm.
9	Date and Time of opening of Financial Bids	To be announced later.
10	Officer Inviting Bids and his Phone No. and E-mail ID	Executive engineer, W.W.Div. Garhwa 06561- 223796 eewwgarh-cemed-jhr@nic.in
11	Help line Number of e – Procurement cell.	C.E.WRD Medininagar 0651-2491232 06562-240841 06561- 223796

Note-
1. Only e-Tender will be accepted.
2. Additional performance security amount shall be applicable as prescribed in CE(Monitoring), Ranchi Letter No. 430 Dated 19-11-2020 and Secretary of RCD Letter No. 2146 (S) Dated 09-09-2020.
3. Payment of Mobilization advance / equipment advance shall be applicable as per Joint Secretary, WRD Ranchi Letter No. 656 Dated 22-12-2020.
4. The bidder should be fully acquainted with site before the tender.
5. Authority reserves the right to reject any or all the tender(s) received or to allot the work to one or more contractor(s) without assigning any reason thereof.
6. Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in

Executive Engineer,
Waterways division
Garhwa

PR 282765 (Water Resource)22-23*D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल,चतरा

पत्रांक 1581 / ग्रा.वि.वि.प्र., चतरा, दिनांक 16.11.2022

शुद्धि–पत्र

ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, चतरा के द्वारा ई–निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–RDD/SD/CHATRA/04/2021-22/RE-1/Gr_01 के ग्रुप संख्या–01 में वर्णित प्रखण्ड–प्रतापपुर, पंचायत–गजवा में पाती नदी पर पुल निर्माण कार्य का PR 282406 (Rural Development) 22-23*D द्वारा प्रकाशित निविदा में भाग लेने हेतु कंडिका क्रमांक 01 में कार्य पूर्ण करने की अवधि 15 माह के स्थान पर 18 माह पढ़ा जाय।

निविदा की शेष शर्ते पूर्ववत रहेगी।

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल,
चतरा

PR 282740 Rural Development(22-23).D

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय,चतरा
(समाज कल्याण शाखा)

–::आम सूचना::–

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि चतरा जिला में चिन्हित कुपोषित बच्चों का सम्पूर्ण ईलाज के निमित्त DMFT अन्तर्गत Nutritionist, Public Health Expert एवं MIS Expert कर्मियों की संविदा आधारित नियुक्ति की गयी। इस योजना के तहत सम्पूर्ण जिलें में कुपोषित बच्चों को चिन्हित किया जाना है तथा चिन्हित बच्चों का सम्पूर्ण ईलाज तथा पोषण युक्त भोजन उपलब्ध कराया जाना है। योजना के सफल क्रियान्यवन के निमित्त नवचयनित Nutritionist, Public Health Expert एवं MIS Expert कर्मियों को तथा सेविका/सहायिका/सहिया एवं महिला पर्यवेक्षिकाओं को 05 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण का आयोजन डी0आर0डी0ए0 प्रशिक्षण भवन, चतरा में दिनांक–22.11.2022 से 26.11.2022 तक जिला प्रशासन के द्वारा किया जा रहा है, जिसमें नामित सदस्य ही भाग ले सकते हैं।

जिला समाज कल्याण पदाधिकारी,
चतरा

PR 282779 Social Welfare,Women and Child Development(22-23).D

जिला अभियन्ता, जिला परिषद, लोहरदगा
(अभियंत्रण कोषांग)

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या 06/2022–23

1. विज्ञापन दाता का नाम : जिला अभियन्ता, जिला परिषद, लोहरदगा
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि : दिनांक 02.12.2022 को 01.00 बजे अपराह्न तक
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय : दिनांक 03.12.2022 को 04.00 बजे अपराह्न तक
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक 03.12.2022 को 04.30 बजे अपराह्न में
5. परिमाण विपत्र बिकी की स्थान : जिला अभियन्ता का कार्यालय, जिला परिषद, लोहरदगा।
6. निविदा प्राप्त करने /खोलने का स्थान : जिला अभियन्ता का कार्यालय, जिला परिषद, लोहरदगा।
7. योजना मद : SCA
8. कार्य का विवरण

क्र0सं/ ग्रुप संख्या	प्रखण्ड	ग्राम का नाम	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	परिमाण विपत्र की राशि	अग्रधन की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	2	3	4	5	6	7	8
1	किस्को	हिसरी	राजकीय उर्दू मध्य विद्यालय हिसरी किस्को में Running Water Facility कार्य	416000.00	1250.00	8400.00	02 (दो) माह

योजनाओं की विस्तृत विवरणी, निविदा की शर्तें जिला परिषद्, लोहरदगा के सूचनापट्ट पर देखी जा सकती है।
2. जिला परिषद लोहरदगा में निबंधित संवेदक ही निविदा में भाग ले सकेंगे। संवेदको को UCAN में निबंधन अनिवार्य होगा।
3. परिमान विपत्र हेतु बैंक ड्रॉफ्ट DDC-Cum-CEO, ZilaParishad, Lohardaga के पदनाम से देय होगा, जो बैंक ऑफ इण्डिया के कोर्ट एरिया लोहरदगा शाखा (बैंक कोड–4968) में भुगतेय होगा।

जिला अभियन्ता,
जिला परिषद, लोहरदगा

PR 282754 Lohardaga(22-23)#D

Office of the Executive Engineer Road Construction Department, Road Division, Daltonganj.

e-Procurement Notice (2nd Call)

Short e-Tender Reference no.- RCD/Daltonganj/982 Dated :-18.11.2022

1	Name of Work	Construction of Drain in Patan-Daltonganj (Bairiya Chowk to Saguan More) Road Length 17.9 km Under Non-Plan for the year 2022-23 (Drain Length- 1620.00 m Bairiya Chowk to Gursuti Nala)
2	Estimated Cost	Rs.- 94,99,756.00 (Ninety Four Lacs Ninety Nine Thousand Seven Hundred Fifty Six Only).
3	Bid Security (Amount)	Rs.- 1,90,000.00 (One Lacs Ninety Thousand Only).
4	Time of Completion	03 Months
5	Mode of Bid Submission	e-tendering(http://jharkhandtenders.gov.in)
6	Date of Publication of Tender on Website	22-11-2022 from 10.30 A.M.
7	Last Date/Time of Online Bid Submission	02-12-2022 upto 12.00 Noon
8	Last Date/Time of Submission of Tender Fee & EMD	06-12-2022, 15:00 PM
9	Date and Time of Bid opening	08-12-2022 at 12.30 P.M.
10	Bid (Tender Fee & EMD) Submission Address	Chief Engineer (Com)-cum-Nodal Officer, e-Procurement Cell, R.C.D., Jharkhand, 1st Floor, Engineer's Hostel No.-2, Dhurwa, Ranchi-834004
11	Name & address of officer Inviting tender	Executive Engineer, R.C.D., Road Division, Daltonganj,
12	Contact no. of e-procurement officer	06562-225019
13	Helpline number of e-Procurement cell	0651-2401010

Note : Estimated amount may vary.
Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in

Executive Engineer,
Road Construction Department,
Road Division, Daltonganj

PR 282742 (Road Construction Dept Road Division Ranchi) 22-23 (D)

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, चतरा

निविदा आमंत्रण सूचना सं0 :–09/2022-23/RE-2 (अतिअल्पकालिक निविदा)

1.विज्ञापन दाता का नाम एवं पता :कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, चतरा।
2.परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि :28.11.2022 को कार्यालय अवधि में। (राजपत्रित अवकाश को छोड़कर)
3. निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समय :29.11.2022 को कार्यालय अवधि में 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : 29.11.2022 को 03:30 बजे अपराह्न में।
5. परिमाण विपत्र की बिक्री की स्थान : कार्यपालक अभियंता,ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल, चतरा।
6.निविदा प्राप्ति / खोलने का स्थान : जिला नियंत्रण कक्ष, चतरा।
7.कार्य की विस्तृत विवरणी :–

ग्रुप सं.	प्रखण्ड	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
8	चतरा	पंचायत–चतरा, ग्राम–चतरा में सदर अस्पताल चतरा में एचवाईडीटी के साथ 2000 लीटर क्षमता वाले वाटर स्टोरेज टैंक पर आधारित वाटर एटीएम सोलर का निर्माण। (3 अदद)	4526937.00	91000.00	5000.00	03 माह

निविदा की शर्ते **www.jharkhand.gov.in** एवं कार्यालय के सूचना पट्ट में देखी जा सकती है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमण्डल,
चतरा

PR 282834 (Rural Development)22-23*D

झारखंड ट्राइबल डेवलोपमेन्ट सोसाइटी द्वारा दूसरे चरण का प्रशिक्षण सम्पन्न

36 प्रशिक्षणार्थी को प्रशिक्षित कर प्रमाण पत्र का किया गया वितरण

नवीन मेल संवाददाता

रांची। टीआरटीसी चाईबासा में भारतीय लोक कल्याण संस्थान के द्वारा और झारखंड ट्राइबल डेवलोपमेन्ट सोसाइटी के सहयोग से 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यकम किया गया था। जिसका प्रथम चरण 07.10.2022 से 14.10.2022 तक तथा दूसरे चरण का प्रशिक्षण 01.11.2022 से 07.11.2022 को सम्पन्न हुआ था। जिसमें झारखंड ट्राइबल डेवलपमेंट सोसाइटी के पदाधिकारी एवं भारतीय लोककल्याण संस्थान के प्रशिक्षकों ने भाग लिया था। प्रशिक्षण का कार्य मुख्य प्रशिक्षक अशोक कुमार, राकेश कुमार और सहायक प्रशिक्षण संयुक्ता देवी व चंद्रेस्वर ओझा ने किया था जिसमें प्रखंड समन्वयक आरती पात्रो व गुरूवारी पान का विशेष सहयोग रहा था । मुख्य प्रशिक्षक व सहायक प्रशिक्षकों ने टोंटो ब्लॉक के सिरिंगसिया(18) एवं सगरकत्ता ग्राम (18) के कुल 36 प्रशिक्षणार्थी को प्रशिक्षित किया था। प्रशिक्षकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित विभिन्न विषयों का अध्ययन कराया गया था। दिनांक 19.11.2022 को भगवान बिरसा मुंडा के संदर्भ में कार्यक्रम जो कि पंचायत भवन में आयोजित कराया गया। जिसमें कुल 36 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र का वितरण कराया गया। जिसमें मुख्य रूप से ब्लाक स्तर के पदाधिकारी तथा ग्राम पंचायत के मुखिया व भारतीय लोक कल्याण संस्थान के प्रखंड समन्वयक आरती पात्रो व गुरूवारी पान उपस्थित रहे। प्रमाण पत्र के वितरण का कार्य मुख्य रूप से सिरिंसिया ग्राम पंचायत के मुखिया लखन लागुरी ने किया तथा सभी प्रशिक्षकों को उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की।

पृष्ठ एक के शेष

काशी तमिल संगमम देगा...

समेटे हमारी सांस्कृतिक राजधानी काशी है, तो वहीं दूसरी तरफ, भारत की प्राचीनता और गौरव का केंद्र, हमारा तमिलनाडु और तमिल संस्कृति है। ये संगम भी गंगा-यमुना के जैसा ही पवित्र है। काशी और तमिलनाडु दोनों शिवमय हैं, दोनों शक्तिमय हैं। एक अपने आप में काशी है, तो तमिलनाडु में दक्षिण काशी है। काशी-कांची के रूप में दोनों की सप्तपुरियों में अपनी अहमियत है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि काशी और तमिलनाडु दोनों संगीत, साहित्य और कला के स्त्रोत हैं। काशी में बनारसी साड़ी मिलेगी तो कांचीपुरम का सिल्क पूरी दुनिया में विख्यात है। तमिलनाडु संत तिरुवल्लुवर की पुण्य धरा है। दोनों ही स्थान ऊर्जा और ज्ञान के केंद्र हैं। आज भी तमिल विवाह परंपरा में काशी यात्रा का उल्लेख किया जाता है। यह तमिलनाडु के लोगों के दिलों में अविनाशी काशी के प्रति प्रेम को दर्शाता है। यही एक भारत श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना है, जो प्राचीन काल से अब तक अनवरत कायम है। उन्होंने आगे कहा कि हमें देश की आजादी के बाद हजारों वर्षों की परंपरा और इस विरासत को मजबूत करना था, इस देश को एकता के सूत्र में बांधना था, किन्तु दुर्भाग्य से इसके लिए पर्याप्त प्रयत्न नहीं किये गये। काशी तमिल संगमम इस संकल्प के लिए एक प्लेटफॉर्म बनेगा और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए ऊर्जा प्रदान करेगा।

धनबाद में लगातार दूसरे दिन...

बीते साल अगस्त में गोविंदपुर स्थित डोमगढ़ में अचानक सड़क के बीचों-बीच जोरदार धमाके के साथ एक गोफ बन गया था और इसके साथ ही गोफ से भारी मात्रा में आग और गैस का रिसाव होने लगा था। इसकी वजह से क्षेत्र के लोगों में कई रोज तक अफरा-तफरी मची रही थी। बाद में दरार को भरा गया था। जुलाई 2021 में केंदुआडीह में अचानक जमीन धंसने से एक युवक अंदर समा गया था। बाद में उसे बड़ी मुश्किल से बाहर निकाला जा सका था। 18 फरवरी 2021 को झरिया के बीसीसीएल लोदना क्षेत्र अंतर्गत घनुडीह मोहरी बांध के एक 10 वर्षीय बच्चा खेलने के दौरान गोफ में समा गया था। उसकी जान भी बहुत मुश्किल से बचायी जा सकी थी। वर्ष 2017 में तो झरिया के फुलारीबाग में जमीन फटने से बबलू खान नामक एक शख्स और उनका आठ वर्षीय पुत्र रहीम जमीन के अंदर समा गये थे। इन्हें बाहर नहीं निकाला जा सका था।

न्यूज गैलरी

ईव्स और हॉप्स की बड़ी जीत से शुरुआत

नयी दिल्ली (एजेंसी)। हॉप्स एफसी ने खेलो इंडिया अंडर-17 महिला फुटबाल लीग के पहले दिन शनिवार को गोलों की बौछार करते हुए जुबा संघा को 6-0 से हरा कर अपने अभियान की शुरुआत की। नेहरू स्टेडियम पर दिन के अन्य मैचों में रॉयल रेंजर्स ने सिग्नेचर एफसी को 2-0 से हराया, जबकि पहले मैच में ईव्स ने पंजाब हीरोज को 7-0 से पीटा। विजेता के लिए खुशबू, अहाना, रीत, श्वेता, संध्या, जूही और सोफी ने एक एक गोल जमाये। राष्ट्रीय टीम की खिलाड़ियों से सजी हॉप्स की अनुभवी खिलाड़ियों के सामने जुबा संघा की छोटी उम्र और हल्की कद काठी की लड़कियां चल नहीं पायीं। विजेता के लिए दिनाक्षी ने दो और पारुल, मुस्कान, खुशी और पूजा ने एक-एक गोल किये।

दिल्ली ने सिक्किम को 10 विकेट से हराया

कोलकाता (एजेंसी)। अनियमित स्पिनर ललित यादव और नितीश राणा ने आपस में छह विकेट लिये जिससे दिल्ली ने विजय हजारे एकदिवसीय ट्रॉफी में शनिवार को यहां सिक्किम को 10 विकेट से हराकर क्वार्टर फाइनल में पहुंचने की अपनी उम्मीदें बरकरार रखी है। लगातार दो मैचों में जीत के साथ दिल्ली ने अपनी उम्मीदें जीवंत रखी है। दिल्ली ने सिक्किम को 34.4 ओवर में 76 रन पर आउट करने के बाद महज 9.2 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया। दिल्ली ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया जिसके बाद राणा ने छह ओवर में 12 रन देकर तीन जबकि यादव ने आठ ओवर में 12 रन देकर तीन विकेट लिये। नियमित ऑफ स्पिनर शिवांग वशिष्ठ ने छह ओवर में 16 रन देकर एक विकेट लिये। सिक्किम के 11 में से आठ बल्लेबाज पांच रन के आंकड़े को भी पार करने में विफल रहे।

ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे वनडे में न्यूजीलैंड को 72 रन से हराया

सिडनी (एजेंसी)। शनिवार को ऑस्ट्रेलिया टीम ने सिडनी क्रिकेट ग्राउंड में खेले गये दूसरे वनडे में न्यूजीलैंड को 72 रन से मात दी है। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की इस वनडे सीरीज में 2-0 से अजय बढ़त बना ली है। मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया ने आठ विकेट के नुकसान पर 280 का स्कोर बोर्ड पर खड़ा किया। बल्लेबाजी के दौरान ऑस्ट्रेलिया के दोनों सलामी बल्लेबाज फ्लॉप रहे। सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर 16 रन, जबकि उनके साथी ट्रेविस हेड 19 रन बनाकर आउट हुए। शुरुआती झटकों के बाद ऑस्ट्रेलिया टीम को स्टीव स्मिथ और मार्नस लाबुछेन ने संभाला। स्मिथ ने 114 गेंदों में 94 रन की पारी खेली, वहीं लाबुछेन ने 55 गेंदों में 58 रनों बनाये। इन दोनों के अलावा मिशेल मार्श ने भी अर्धशतकीय पारी खेली, उन्होंने 59 गेंदों में 50 रन की पारी खेली। इन तीनों बल्लेबाजों के अलावा ऑस्ट्रेलिया का और कोई भी बल्लेबाजी प्रभावित नहीं कर पाया, विकेटकीपर एलेक्स कैरी बिना खाता खोले पेवेलियन लौट गए और मार्कस स्टोनिस 13 रन की पारी खेली।

रोहित से छिन सकती है टी-20 कप्तानी, हार्दिक बन सकते हैं कैप्टन

मुंबई (एजेंसी)। टीम इंडिया की सिलेक्शन कमेटी को बर्खास्त करने के बाद अब बीसीसीआई की नजर टी-20 कप्तान रोहित शर्मा पर है। ऐसा कहा जा रहा है कि उन्हें टी-20 की कप्तानी से हटाया जा सकता है। टी-20 वर्ल्ड कप के सेमीफाइनल में भारत को इंग्लैंड से 10 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था। बीसीसीआई ने गुरुवार को चेतन शर्मा की अगुआई वाली सिलेक्शन कमेटी को बर्खास्त कर दिया था। चेतन शर्मा के अलावा तीन अन्य चयनकताओं को भी पद से हटा दिया है। इनके लिये आवेदन बुलाये गये हैं। एक न्यूज एजेंसी के मुताबिक, सिलेक्शन कमेटी के बाद अब कप्तान रोहित शर्मा पर कार्रवाई की जा सकती है। रोहित वनडे और टेस्ट क्रिकेट के कप्तान बने रहेंगे, जबकि 2024 में होनेवाले टी-20 वर्ल्ड कप को देखते हुए हार्दिक पंड्या को टीम की कप्तानी सौंपी जा सकती है। फिलहाल, हार्दिक न्यूजीलैंड दौरे पर गयी टीम इंडिया के टी-20 के कप्तान हैं। अगर उनकी कप्तानी में टीम का प्रदर्शन बेहतर रहता है तो जल्द ही उनके नाम पर मुहर लग सकती है।

हार्दिक क्यों कप्तानी की पहली पसंद

हार्दिक की कप्तानी में टीम इंडिया ने तीन टी-20 मैच खेले हैं। तीनों में भारतीय टीम ने जीत का स्वाद चखा है।आईपीएल में डेब्यू करनेवाली गुजरात टाइटंस को हार्दिक ने अपनी कप्तानी में पहली बार में ही चैम्पियन बनाया। उनका खुद प्रदर्शन भी शानदार रहा है। अब तक टी-20 के खेले 79 मैच में 1117 रन बनाये और 62 विकेट लिये। आईपीएल में गुजरात टाइटंस की कप्तानी करते हुए 15 मैचों में लगभग 45 की औसत से 487 रन बनाये और आठ विकेट भी लिये हैं।

टी-20 में रोहित का परफॉर्मेंस

टी-20 वर्ल्ड कप में रोहित का खुद का प्रदर्शन भी काफी खराब रहा। उन्होंने छह मुकाबलों में 19.33 की औसत से 116 रन बनाये हैं। उनका स्ट्राइक रेट 106.42 का रहा है। रोहित की कप्तानी में टीम इंडिया ने दो बड़े टूर्नामेंट में भाग लिया। दोनों ही टूर्नामेंट में टीम फाइनल में नहीं पहुंच सकी। सबसे पहले रोहित की कप्तानी में टीम इंडिया ने एशिया कप में भाग लिया। टीम इंडिया टॉप फोर में भी नहीं पहुंच पायी। वहीं, ऑस्ट्रेलिया में खेले गये टी-20 वर्ल्ड कप में टीम इंडिया को सेमीफाइनल में हार का सामना करना पड़ा।

मनिका बत्रा ने जीता कांस्य

बैंकॉक (एजेंसी)। स्टार भारतीय खिलाड़ी मनिका बत्रा ने एशियाई कप टेबल टेनिस टूर्नामेंट में पदक जीतनेवाली पहली भारतीय महिला पैडलर बनकर इतिहास रच दिया है। मनिका ने शनिवार को चल रहे एशियाई कप टूर्नामेंट में कांस्य पदक जीता। उन्होंने कांस्य पदक मुकाबले में विश्व नंबर 6 और 3 बार की एशियाई चैम्पियन हिना हयात को 4-2 (11-6, 6-11, 11-7, 12-10, 4-11, 11-2) से हराकर कांस्य पदक जीता। इससे पहले, वह सेमीफाइनल मैच में मीमा इतो से 2-4 (8-11, 11-7, 7-11, 6-11, 11-8, 7-11) से हार गई थी। बत्रा ने गुरुवार पहले दौर में चीन की विश्व के सातवें नंबर की खिलाड़ी चेन जिंगटोंग को हराया था। हुआमार्क इंडोर स्टेडियम में प्रतिस्पर्धा करते हुए, विश्व नंबर 44 बत्रा ने चौथी वरीयता प्राप्त जिंगटोंग को 4-3 (8-11, 11-9, 11-6, 11-6, 9-11, 8-11, 11-9) से हराया।

चीफ सिलेक्टर के लिए बीसीसीआई की पहली पसंद हैं अजीत अगरकर

मुंबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने नये चीफ सिलेक्टर की तलाश शुरू कर दी है। बीसीसीआई ने चेतन शर्मा की अगुआई वाली चार सदस्यीय चयन कमेटी को शुक्रवार को बर्खास्त कर दिया था। बीसीसीआई ने नयी चयन कमेटी के लिए एप्लिकेशन मांगी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, पिछली बार चीफ सिलेक्टर बनने से रह गये पूर्व तेज गेंदबाज अजीत आगरकर बीसीसीआई की पहली पसंद हैं।

आईपीएल फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स के असिस्टेंट कोच से देना होगा इस्तीफा

अगरकर के क्रिकेट करियर पर एक नजर

- 26 टेस्ट में देश का प्रतिनिधित्व करते हुए 58 विकेट ले चुके हैं।
- 191 वनडे में टीम इंडिया को रिप्रजेंट करते हुए 288 विकेट ले चुके हैं।
- चार टी-20 इंटरनेशनल मैचों में भारतीय टीम के लिए तीन विकेट ले चुके हैं।
- 110 फर्स्ट क्लास मैचों में 299 विकेट हैं।

क्यों हैं पहली पसंद

- अगरकर के पास तीनों फॉर्मेट खेलने का अनुभव है। वह टेस्ट और वनडे के अलावा 4 टी-20 इंटरनेशनल में भी देश का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।
- आईपीएल में भी खेल चुके हैं और वर्तमान में दिल्ली कैपिटल्स की कोचिंग स्टाफ से जुड़े हैं। ऐसे में उसका अनुभव और इनपुट टीम चयन में महत्वपूर्ण हो सकता है।
- युवा खिलाड़ियों के साथ भी उनके अच्छे संबंध हैं और आईपीएल में उनके साथ काम किया है। वह उन्हें समझते हैं। वहीं घरेलू ढांचे की अच्छी समझ है। अगरकर के नाम 270 लिस्ट ए मैचों में 420 और 62 टी-20 मैचों में 47 विकेट हैं।

चेतन शर्मा सहित चार चयनकर्ताओं को किया गया बर्खास्त

चीफ सेलेक्टर चेतन शर्मा सहित चार खिलाड़ियों को बर्खास्त किया गया है। चेतन उत्तर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके अलावा हरविंदर सिंह (मध्य क्षेत्र), सुनील जोशी (दक्षिण क्षेत्र) और देबाशीष मोहंती (पूर्वी क्षेत्र) चयन कमेटी में शामिल थे। इनमें से कुछ की नियुक्ति 2020, तो कुछ की 2021 में की गयी थी। एक सीनियर राष्ट्रीय चयनकर्ता का कार्यकाल अमूमन चार साल का होता है और उसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। अभय कुरूविला का कार्यकाल समाप्त होने के कारण पश्चिम क्षेत्र से कोई चयनकर्ता नहीं था।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस : ओलंपियन मोहम्मद रियाज और देवराजन सम्मानित

चेन्नई (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस (आईएमडी) के अवसर पर आज अनुभवी ओलंपियन हॉकी खिलाड़ी मोहम्मद रियाज और मुक्केबाज वी. देवराजन को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. कामराज हॉस्पिटल फॉर मेंस हेल्थ इंटरनेशनल ऑर्थो एंड ट्रॉमा केयर सेंटर ने वर्ल्ड एसोसिएशन ऑफ सेक्सुअल हेल्थ (डब्ल्यूएएस), इंडियन एसोसिएशन फॉर सेक्सोलॉजी (आईएएस) और आकाश फर्टिलिटी सेंटर एंड हॉस्पिटल के सहयोग से किया था।

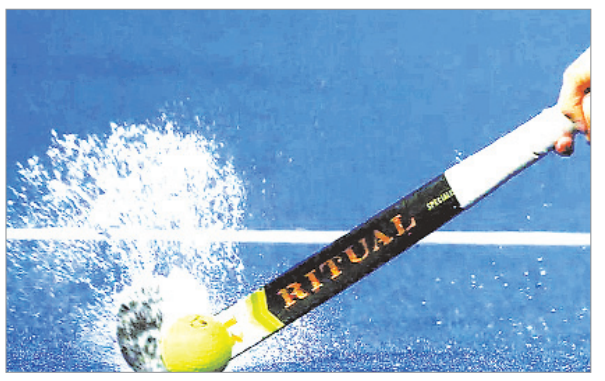

इस अवसर पर अस्पताल के निदेशक डॉ. टी. कामराज ने ओलंपियनों द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण योगदान पर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि अर्जुन पुरस्कार विजेता देवराजन 1994 में थाईलैंड में विश्व कप मुक्केबाजी चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतनेवाले तमिलनाडु के पहले मुक्केबाज हैं। उन्होंने कहा कि हॉकी स्टार मोहम्मद रियाज भी एक ओलंपियन हैं। उनको 1998 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था और वह 1988 में बैंकाक में एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक और 1994 में हिरोशिमा एशियाई खेलों में रजक पदक जीतनेवाली भारतीय टीम का हिस्सा थे। डॉ. कामराज ने कहा कि विश्वस्तर पर महिलाओं की तुलना में पुरुषों का जीवनकाल पांच साल कम है और 92 प्रतिशत मौतों में पुरुष हैं, जो शराब के आदी है। उन्होंने कहा कि पुरुषों को इन चीजों से बचाने के लिए इनमें जागरुकता पैदा करना ही एकमात्र तरीका है। उन्होंने कहा कि अब तक हम फिल्मी हीरो को सम्मानित करते आए है। आज हम अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस पर वास्तविक हीरो को सम्मानित कर रहे हैं। इस अवसर पर देवराजन ने अपने संबोधन में कहा कि वह यह जानकर खुश हैं कि आईएमडी मनाया जा रहा है - शायद पहली बार - जैसे हर साल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह वे पुरुष हैं जिन्होंने देश और अपने परिवार के लिए काम किया। अगर वे चुस्त और तंदुरुस्त हैं, तो परिवार खुश रहेगा।

नीरज चोपड़ा समेत चार एथलीट विदेशी शिविरों में लेंगे प्रशिक्षण

नयी दिल्ली (एजेंसी)। ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा समेत चार दिग्गज एथलीटों को विदेशी प्रशिक्षण शिविरों में ट्रेनिंग के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी है। मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने शुक्रवार को अपनी 86वीं बैठक में नीरज के यूनाइटेड किंगडम (यूके) के लोफबोरो विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। नीरज, कोच डॉ. क्लॉस बार्टोनिट्ज और फिजियोथेरेपिस्ट ईशान मारवाहा के साथ लॉफबोरो में 63 दिनों तक प्रशिक्षण लेंगे। वह इस सप्ताह के अंत तक इंग्लैंड रवाना हो जायेंगे। नीरज के अलावा एमओसी ने शटलर किदांबी श्रीकांत के प्रस्तावों को भी मंजूरी दे दी है जो अपने कोच और फिजियोथेरेपिस्ट के साथ 29 दिनों के लिए प्रिज्मा स्पोर्ट्स क्लब, जकार्ता, इंडोनेशिया में प्रशिक्षण लेंगे। पहलवान दीपक पुनिया अपने फिजियोथेरेपिस्ट के साथ भारत में प्रशिक्षण लेंगे, वहीं जेवलिन थ्रोअर और कॉमनवेल्थ गेम्स की पदक विजेता अनु रानी अपने फिजियोथेरेपिस्ट के साथ जर्मनी में प्रशिक्षण लेंगी। इनके लिये पैसे का इंतजाम भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टीओपीएस) के तहत किया जायेगा। इसमें खिलाड़ी और उनके सहयोगी स्टाफ की उड़ान, आवास, स्थानीय यात्रा और अन्य खर्चों के साथ भोजन की लागत शामिल होगी। प्रत्येक एथलीट को अपने प्रवास के दौरान किसी भी अन्य खर्च के लिए प्रतिदिन 50 डॉलर का आउट-ऑफ-पॉकेट भत्ता भी मिलेगा। सभी एथलीटों के प्रशिक्षण के लिए कुल करीब 94 लाख रुपये खर्च होंगे।

वैश्विक एकता को प्रोत्साहित करेगा फीफा वर्ल्ड कप

ज्यूरिख (एजेंसी)। दुनिया में सर्वाधिक लोकप्रिय खेल फुटबॉल की ताकत का इस्तेमाल विश्व में सकारात्मक बदलाव लाने के मकसद से फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा) विश्व कप 2022 के दौरान संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की तीन एजेंसियों के साथ मिलकर स्वास्थ्य, एकता और गैर भेदभाव को बढ़ावा देनेवाले संदेश भेजने के कई अभियान चलायेगा। फीफा ने इस सिलसिले में एक अधिकृत बयान में कहा कि संयुक्त राष्ट्र की सहयोगी एजेंसियां शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को), विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के साथ फीफा करोड़ों खेल प्रशंसकों के जरिये दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने के संदेश प्रसारित करेगा। इन अभियानों ने सदस्य संघों से प्राप्त फीडबैक को ध्यान में रखा गया है,

जो फीफा की तरह दुनिया भर में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए फुटबॉल की शक्ति का उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि मैच के दौरान टीम के कप्तानों के आर्मबैंड के जरिये भाग लेनेवाली टीमों को मैसेजिंग के अवसर प्रदान किये जायेंगे, साथ ही मैदान के चारों ओर विशाल एलईडी स्क्रीन और स्टेडियमों में लगे झंडों पर प्रदर्शित होने वाली सहायक सामग्री के अलावा फीफा के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर संदेश भेजे जायेंगे।

बयान में कहा गया है कि इन अभियानों के पीछे एकजुट होकर, फीफा और इसके 211 सदस्य संघ दुनिया के हर कोने में दिखायेंगे कि हमारे मतभेदों के बावजूद फुटबॉल में लोगों को एक साथ लाने और एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभारने की ताकत है। फीफा विश्व कप कतर 2022 रविवार को शुरू हो रहा है, जब मेजबान देश अल बायत स्टेडियम में इक्वाडोर से भिड़ेगा। प्रतियोगिता में कुल 64 मैच खेले जायेंगे जबकि 18 दिसम्बर को लुसेल स्टेडियम पर फाइनल मुकाबला होगा।

फीफा वर्ल्ड कप : मेसी, रोनाल्डो पर फुटबॉल प्रशंसकों की रहेंगी नजर

कतर (एजेंसी)। खेल के सबसे बड़े टूर्नामेंट के 24वें सीजन के शुरू होने का समय नजदीक आ गया है, जो कतर में रविवार से आयोजित किया जायेगा। साथ ही दो फुटबॉल स्टार दिग्गज लियोनेल मेसी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो में भाग ले रहे हैं। इन दो दिग्गजों के भाग लेने के बाद कतर में फुटबॉल प्रशंसकों की निगाहें इन दो खिलाड़ियों पर रहेंगी। दोनों ने यूरोप में अपने संबंधित मेगा क्लबों के लिए कई गोल किये हैं और एक दशक से अधिक समय तक अपने राष्ट्रीय पक्ष का नेतृत्व किया है। दोनों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले हैं और अपने क्लब के लिए जीत हासिल की है। जैसा कि वे कतर में अपने पांचवें विश्व कप के लिए तैयार हैं, मेसी और रोनाल्डो दोनों दुनिया के सबसे बड़े टूर्नामेंट में अपनी आखिरी उपस्थिति में खिताब जीतकर आगे बढ़ने की उम्मीद कर रहे हैं। जबकि अर्जेंटीना के मेस्सी 35 साल के हैं, पुर्तगाली स्टार रोनाल्डो 37 साल के हैं और इस बात की बहुत कम संभावना है कि वे एक और विश्व कप खेलेंगे और यह स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में उन्हें इस तरह की सफलता नहीं मिली है और वे अपने शानदार करियर के घरेलू चरण में हैं। दोनों मेसी के लिए 114 गोल और रोनाल्डो के लिए 117 गोल के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने-अपने देशों के लिए सर्वोच्च स्कोरर हैं।

- जोहान क्रूफ, यूसेबियो, फेरेंक पुस्कस, मिशेल प्लाटिनी, अल्फ्रेडो डि स्टेफानो, जॉर्ज बेस्ट और जिको के बीच एक अजीब समानता है। वे सभी फुटबॉल के दिग्गज हैं, लेकिन कभी भी खेल का सबसे प्रतिष्ठित खिताब फीफा विश्व कप उठाने में कामयाब नहीं हुए

ग्रुप सी में सऊदी अरब, मैक्सिको और पोलैंड के विरोधियों के रूप में है कतर

कतर-2022 विश्व कप में अर्जेंटीना ग्रुप सी में सऊदी अरब, मैक्सिको और पोलैंड के विरोधियों के रूप में है और अर्जेंटीना को अगले चरण में आसानी से आगे बढ़ना चाहिए। उनकी मुख्य चुनौती इसके बाद शुरू होगी। मेक्सिको के दूसरे स्थान पर रहने की उम्मीद है, लेकिन पोलैंड हमेशा खतरनाक स्ट्राइकर रॉबर्ट लेवांडोव्स्की के अच्छे फॉर्म में होने के कारण कुछ आश्चर्य कर सकता है। दूसरी ओर पुर्तगाल ग्रुप एच में है और घाना दो बार के विजेता उरुग्वे और दक्षिण कोरिया की चुनौती का सामना कर सकता है। वे 24 नवम्बर को घाना के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे। पुर्तगाल और रोनाल्डो को इस समूह से सफलतापूर्वक बातचीत करने और अंतिम 16 में जगह बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। कोच फर्नांडो सैंटोस की टीम काफी मजबूत है, जो उनकी फीफा रैंकिंग नंबर 9 से झलकती है। टीम रोनाल्डो पर काफी निर्भर है और उन्हें अपने समूह में शीर्ष पर पहुंचने में मदद करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। यदि वह कतर में पुर्तगाल को सफलता की ओर ले जाता है, तो रोनाल्डो अपने करियर को पुनर्जीवित कर सकते हैं और मैनचेस्टर यूनाइटेड में समस्याओं से पार पा सकते हैं। खेल का दबाव इन दो सुपरस्टार्स पर है कि वे अपने पिछले विश्व कप में अधिक से अधिक प्रदर्शन करें।

स्कोरर हैं।

मेसी ने यूरोपीय लीग में एक साल में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को दी जानेवाली ट्रॉफी बैलन डी ओर सात बार जीती है, जबकि रोनाल्डो ने इसे पांच बार जीता है। विश्व कप में, मेसी ने रोनाल्डो की तुलना में थोड़ा बेहतर प्रदर्शन किया है, एक बार अर्जेंटीना को फाइनल में ले जाने के बाद ब्राजील में खेले गये 2014 के सीजन में जब वे जर्मनी से 1-0 से हारकर उपविजेता रहे थे। पुर्तगाल के साथ रोनाल्डो की दो सफलताओं में यूरो 2016 और यूईएफए नेशंस लीग का 2018 सीजन जीतना शामिल है, फाइनल में नीदरलैंड को 1-0 से हराया। लेकिन मेसी और रोनाल्डो दोनों ने अच्छी तैयारी नहीं की है। मेसी हाल ही में बार्सिलोना से फ्रेंच क्लब में जाने के बाद पेरिस सेंट-जर्मेन में शामिल हो गये हैं। पीएसजी के साथ बेहद निराशाजनक शुरुआती सीजन के बाद, मेसी ने सीजन के शुरुआती नौ मैचों में चार गोल और सात असिस्ट करके शुरुआत की। उन्होंने इस सीजन में अब तक 12 गोल किये हैं और अपने युवा साथियों के साथ तालमेल बिठाने और विश्व कप में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने में एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं। दूसरी ओर रोनाल्डो मैनचेस्टर यूनाइटेड से नाखुश हैं, जिसमें वह 2021 में दूसरे कार्यकाल के लिए शामिल हुए थे। अपने क्लब के लिए शीर्ष स्कोरर होने के बावजूद, उन्होंने मार्कस रैशफोर्ड और एंथोनी मार्शल की पसंद के लिए शुरूआती लाइन-अप में अपना स्थान खो दिया है।